।। श्री श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।।

श्री राधामाधव-युगलमुर्ति-प्रसाद

।। श्री राधामाधवाय नमः ।।

अरे चित्त ! तू सदा वृषभानुनन्दिनी श्री राधा का ही चिन्तन किया कर, उन्हें एक क्षण के लिए भी कभी न भूल, यह मेरी अभिलाषा है। हे रसने 'तू राधा' इस सरस-मधुर नाम का जप करती रह सदा। हे देह तू श्री राधा की परम पावन चरण रज से लिप्त होकर इस श्री राधा वन (श्री वृन्दावन) में सदा वास किया कर।

॥ श्री श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥

प्रकाशक
सर्वेसर्वा ठाकुर श्री राधा-माधव
श्री सेवाकुंज प्रकाशन
श्री राधा-माधव-सेवा कुंज
माली नागौरियों का बास,
जोधपुर (राज.)

प्रथम प्रकाशन :
माघ शुक्ला पूर्णिमा श्री कृष्ण सं. ५२२८ वि.सं. २०५९,
१६ फरवरी २००३
प्रतिया : १०००

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
श्री राधा-माधव-सेवा कुंज
माली नागौरियों का बास, जोधपुर (राज.)
फोन नं. ०२९१-२५४८७८१

अक्षर संयोजन :
राज ग्राफिक्स
माली नागौरियों का बास
पीपली का चौक ऊपर की गली,
जोधपुर (राज.) फोन नं. ०२९१-२५४२५६७

इस पुस्तक को या इसके किसी भी अंश को प्रकाशित करने, उद्धृत करने अथवा किसी भी भाषा में अनुदित करने का अधिकार सबको है। इनमें ठाकुरजी व लाडली श्री राधारानी के नाम रूप, गुण, धाम लीलाओं आदि का संग्रह है। नाम रूप गुण, धाम व लीलाओं में ही ठाकुर जी व लाडलीजी पूर्ण रूप से समाये हुए है अतएव साक्षात् ठाकुरजी व लाडलीजी ही आप तक आपको रसास्वादन करने, कृतार्थ करने पधारे हैं। इनका अवश्य लाभ उठावें ।

न्यौछावर : नित्य स्वाध्याय (यह निवेदन है)

॥ श्री श्रीराधिकायै नमः॥

नम्र निवेदन और क्षमा प्रार्थना

सर्वसाधनहीनस्य पराधीनस्य सर्वथा ।
पापपीनस्य दीनस्य कृष्ण एव गतिर्मम् ॥

वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां, हस्तौ च कर्मसु मनस्तव पादयोर्न स्मृत्यां शिरस्तव निवास जगत्प्रणामे, दृष्टिः सतां दर्शनेऽस्तु भवतनूताम् ॥

(श्री मद्भागवत १०/१०/३८)

प्रभो! हमारी वाणी आपके मङ्गलमय गुणों का वर्णन करती रहे। हमारे कान आपकी रसमयी कथा में लगे रहे। हमारे हाथ आपकी सेवा में और मन आपके चरण कमलों की स्मृति में रम जाय। यह सम्पूर्ण जगत् आपका निवास स्थान है। हमारा मस्तक सबके सामने झुका रहे। सन्त आपके प्रत्यक्ष शरीर है। हमारी आँखे उनके दर्शन करती रहे।

मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि श्वास-श्वास में प्रभु की स्मृति बनी रहे, वो मीठे लगे, उनकी याद सताती रहे और समस्त अङ्गों से उनका सेवन होता रहे। इससे व्यवहार में प्रेम, अधरों पर सहज मुस्कान, मन में प्रसन्नता तथा सन्तोष होगा और मानव अपने को कृतकृत्य अनुभव करेगा। गोपी भाव प्राप्त हो जायेगा। गोपी वही है जो समस्त इन्द्रियों से श्रीकृष्ण को रस का आस्वादन कराती रहे। सन्त महापुरुष और शास्त्र एक स्वर से कहते है कि ऐसी स्थिति वाले पुरुष का ही जीवन धन्य है, वो ही आप्तकाम होकर प्रभु प्राप्ति करेगें, अतः थोड़ी-थोड़ी देर में श्रीप्रिया-प्रियतम से हृदय से करुण स्वर में यह प्रार्थना करते रहना चाहिये कि वो ऐसी कृपा करे कि हम उन्हें कभी भूलें नहीं। यदि जीवन भर ऐसा करते रहेंगे और यदि प्रारब्धवश अन्त समय में होश इत्यादि नहीं रहेगा, तो

भी वह प्राण-प्यारा स्वयं हमें याद करेगा, और हमारा काम हो जायेगा मनुष्य जीवन सफल हो जायेगा, जीवन का परम लाभ मिल जायेगा।

जीवमात्र के परमलाभ की प्राप्ति हेतु जो कुछ अच्छा लगा इस श्रीराधामाधव प्रभु की कृपा से **'युगलमूर्तिप्रसाद ग्रन्थ'** में संकलित करने की चेष्टा की गई है। जो आप श्रीमान् के कर-कमलों में बड़े ही संकोच के साथ समर्पित किया जाता है, क्योंकि इसमें महापुरुषों के वचन है, वेद शास्त्रों का सार है, भावुक-भक्तों के आँसु है, भक्तों की निधी है, रसिक का जीवन है, प्रेमियों का हृदय है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में प्रभु के प्यारे कई भक्तों का सहयो मिला है, वो हमारे अभिन्न हृदय है, उनकी तारीफ करना आत्म प्रशंस होगी, न वो तारीफ चाहते है, वे तो ठाकुर सेवा करके ही कृतकृत्य है अपने को धन्य मानते है जो ठाकुर ने सेवा का मौका दिया।

आप सब के श्री चरणों में एक विनम्र प्रार्थना है कि श्रीराध माधव-युगल-मूर्ति प्रसाद ग्रन्थ का संग नित्य स्वाध्याय रूप से करे। ए बार तो यह ग्रन्थ आदि से अन्त तक अवश्य स्वाध्याय करें फिर जो अं आपको रुचिकर लगे उसे नित्य नियम से पढे-पढ़ावे व इसका प्रचार क यह आपका है, आपके लिए ही साक्षात् ठाकुर आप पर कृपा करने अ तक पधारे है। आप हृदय खोलकर इनका स्वागत करें, आस्वादन क करावें यही हृदय की अभिलाषा है।

इसे मात्र ग्रन्थ रूप में ही न देखें ये साक्षात् श्रीराधामाधव आप कृतकृत्य करने आपके कर - कमलों में पधारे हैं। श्रीउद्धव श्रीमद्भागवतजी में श्री शोनकजी से कहते हैं--

स्वकीयं यद्ववेत्तेजस्तच्च भागवतेऽदधात् ।
तिरोधाय प्रविष्टोऽयं श्रीमद्भागवतार्णवम् ॥

श्री मद्भा० महा. ३/

श्री उद्धवजी कहते है कि– शोनक जी! तब भगवान ने अपनी सारी शक्ति भागवत जी में रख दी, वे अन्तर्धान हो कर इस भागवत-समुद्र में प्रवेश कर गये।

तेनेयं वाङ्मयी मूर्तिः प्रत्यक्षा वर्तते हरेः ।

सेवनाच्छ्रवणात्पाठादर्शनात्पाप नाशिनी ।

(श्री मद्भा०महा-३/६२)

श्रीमद्भागवताख्योयम् प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि।

स्वीकृतोऽसि मया नाथ मुक्त्यर्थं भव सागरें॥

(श्री मद्भा०महा-६/३०)

इसलिए ये भगवान की साक्षात् शब्दमयी श्रीविग्रह है। इसके सेवन, श्रवण, पाठ अथवा दर्शन से ही मनुष्य के सारे पाप नष्ट हो जाते है। श्रीमद्भागवत के रूप में आप साक्षात् श्रीकृष्णचन्द्र ही विराजमान है। नाथ! मैंने भवसागर से छुटकारा पाने के लिये आपकी शरण ली है।

हे श्रीवृजराजकुमार ठाकुर श्रीकृष्ण और हे श्रीवृषभानुराज नन्दनी श्री राधे कोई एक अभागा जन्तु मस्तक पर अंजली बांध कर दाँतो में तृणदबाकर आर्त हृदय से प्रार्थना करता है कि कभी इस दीनहीन को आप दोनों की प्रत्यक्ष सेवा प्रदान करके कृतकृत्य करेंगे हालांकि यह इस सेवा का अधिकारी नहीं है फिर भी आप इस पर ऐसी कृपा करें।

विद्वजनों से प्रार्थना है कि हमारी अयोग्यता से जो इसमें त्रुटि रह गई हो, उसे आप क्षमा करें व सुधारकर पढ़े ये सादर नम्र निवेदन प्रार्थना है।

''श्री हरिॐतत्सत्''

अनुक्रमणिका

१.	मङ्गलाचरण (श्रीकृष्ण परक)	१
२.	मङ्गलाचरण (श्रीराधा परक)	२
३.	श्री राधाकृपाकटाक्षस्तवराज	१०
४.	श्री कृष्णकृपाकटाक्षस्तोत्रम्	१५
५.	श्री मधुराष्टकम्	१७
६.	श्रीमङ्गलगीतम्	१८
७.	श्रीकृष्ण स्तुति	१९
८.	अथ श्रीराधा कवच	२०
९.	श्री राधिकानाम गुणगान	२४
१०.	श्री राधागुणगान	२८
११.	श्री राधानमस्कारस्तोत्रम्	३२
	श्री राधाजी के सोलह नाम	३३
	श्री राधाजी के अट्ठाईस नाम	३३
	श्री राधाजी के सैंतीस नाम	३४
१२.	श्री राधाजी का ध्यान	३५
१३.	श्री ब्रह्माण्ड पुराणोक्त श्री राधा स्तोत्रम्	३७
१४.	श्री राधिकाजी की प्राकट्य स्तुतिः	३९
१५.	आरती श्री वृषभानुसुता की	४०
	आरती श्री गिरिवर धारी की	४१
१६.	श्री राधा चालीसा (श्री वृन्दावनजी कवि)	४२
१७.	श्री राधाकृष्णयुगल कीर्तन	४५
१८.	श्री राधाष्टकम्	४७
१९.	श्री श्रीराधारानी की चिन्मय गुणावली	४९
२०	आरती श्री कुञ्जविहारी की व स्तुति	५०
२१.	श्री राधा स्तवन एवं दोहे	५२
२२.	वन्दना, प्रार्थना एवं दोहे	५७
३३.	श्रीराधा विषयक - दोहे	६१
२४.	श्री धाम विषयक - दोहे	६२
२५.	प्रेम भरे दोहे	६३
२६.	दोहे - श्री धाममहिमा	६५
	पद एवं सवैया	६५
२७..	भगवान की प्रतिज्ञा	६७

२८.	भक्त की अभिलाषा	६७
२९.	गाये जा राधे-राधे	६८
३.	राधे तेरे चरनों की एवं बरसाने की महिमा	७०
३१.	राधे-राधे करुणामयी	७१
	मन भूल मत जइयो	७१
	वृषभानु की लली	७२
	प्रबल प्रेम के पाले पड कर	७२
	म्हारी हुण्डी सिकारो महाराज	७३
	श्री युगल महामंत्र	७३
३२.	प्रातः स्मरण पंचकम्	७४
३३.	किशोरी तेरे चरनन् की	७५
३४.	कदम की छाँह हो	७५
३५.	भक्त की आर्त पुकार	७६
३६.	आप सब नियेर अरु दूरि	७७
	आजलौं देखो सुनो	७७
३७.	श्री कार्पण्य पंजिका स्तोत्र	७८
३८.	श्री राघवेन्द्र सरकार की आरती (जय जानकी नाथा)	८२
३९.	प्रातः कालीन प्रार्थना	८३
४०.	श्री राम कथा की महिमा एवं श्री तुलसी वन्दना	८४
४१.	श्री रामाणयजी की प्रारम्भ विधि एवं मूल रमायण	८५
४२.	श्री रमायणजी की आरती	८७
	श्रीराम-स्तुति एवं श्रीरामायण जी के कथा की विसर्जन विधि	८८
४३.	श्री भगवान के श्रीवचन एवं घर आया लक्ष्मण राम	८९
	आनन्द आयो रे	९०
४४.	जो पे तुलसी न गावतो	९१
	श्री गंगाजी की महिमा	९१
४५.	श्री कनक भवन अयोध्याजी में श्रृंगार-आरती के समय की स्तुति	९१
४६.	श्री हनुमान चालीसा एवं मंगल कामना	९२
	श्रीराधा नाम की महिमा	९४
४७.	मेरे नाथ (प्रार्थना) ठाकुरजी के अमनिया अर्पण करने का पद	९५
४८.	पुष्पाञ्जली	९६
४९.	श्री हनुमत् स्तवन एवं एकमुखि हनुमन कवच	९७
५०.	श्री हनुमानजी की आरती	९८
५१.	गजलगीता	९९
५२.	श्री गणपति महाराज की महिमा व प्रार्थना	१०१
५३.	श्री गणेशजी के सर्व विघ्ननाशक बारह नाम	१०२
५४.	लक्ष्मी प्राप्ति के लिये स्त्रोत एवं श्री सूर्य के बारह नमस्कार	१०४

५५.	सद्विचार	१०६
५६.	भगवत प्राप्ति का सुगम साधन- प.पू. स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज	१०७
५७.	शिखा (चोटी) धारण की महत्ता एवं आवश्यकता " "	१०८
५८.	चोटी के विषय में विदेशी विद्वानों के विचार	१०९
५९.	पंचामृत एवं चार सुगम साधन प.पू. स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज	११०
६०.	सत्संग के बिखरे मोती	१११
६१.	स्वास्थ्य के लिए व प्रार्थना	११२
६२.	यात्रा विचार और छींक फल	११३
६३.	श्री तुलसी विषयक पुराणवचन	११४
६४.	श्री तुलसी कीर्तन	११५
६५.	शास्त्रानुसार प्रदक्षिणा	११६
६६.	स्वास्थ्य की रक्षा एवं श्री शनिपीडानाशक स्तोत्र	११७
६७.	श्री नवग्रहस्तोत्रम् एवं कवच	११८
६८.	कृपया ठिकाना नोट कर लीजिए	१२०
६९.	द्वादशज्योतिर्लिंगानि व आरती	१२१
७०.	वर्षटपञ्जरी भाषाटीकया सहिता	१२४
७१.	श्री गोपिका गीतम्	१३०
७२.	शिक्षा गुरु श्री कृष्ण की शिक्षा प्रणाली	१३८
७३.	श्री श्रीराधिकासहस्रनामस्तोत्रम्	१४०
७४.	षोडश गीत (पूज्य श्री हनुमानप्रसाद जी पोद्दार)	१५६
७५.	पुष्पिका	१८१
७६.	श्री हनुमानप्रसाद जी पोद्दार के सदुपदेश	१८२
७७.	ऋग्वेदीय श्री राधिकोपनिषद्	१८६
७८.	अथर्ववेदीय श्रीराधिकातापनीयोपनिषद्	१८९
७९.	श्री राधारसमञ्जरी	१९२
८०.	प्रिया प्रसाद	१९६
८१.	श्री राधानाम सुधा - रचियता पं. वागीशजी शास्त्री	२०१
८२.	श्री राधा ध्यान (पद)	२१२
८३.	श्री राधाकृपाकटाक्षस्तवराज का पद्यानुवाद	२२२
८४.	वैष्णव ग्रन्थों के ६४ अपराध	२२५
	बत्तीस प्रकार के सेवा अपराध	२२७
	नाम के दस अपराध	२२८
८५.	श्री राधाजी का कीर्तन-वृन्दावन में राधा-राधे	२२९
८६.	ब्रह्मा में ढूँढ्यौ पुरानन गाननि	२३१
८७.	क्षमा प्रार्थना एवं कातर प्रार्थना	२३२

।। श्री गणेशायनमः ।।

।। श्री गोपीजनवल्लभाय नमः।।

ॐ

卐 ॐ शीश पातु 卐

।। श्रण्वन पठ्न याति तद्धाम नित्यम् ।।

(नित्य स्वाध्याय योग्य ग्रन्थ नित्य सेवनीय महाप्रसाद)

।।श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः।।

मंङ्गलाचरण (श्री कृष्ण परक)

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः।।

जिनके मस्तकपर कस्तूरीका तिलक है, वक्षःस्थलमें कौस्तुभमणि है, नासिकाग्र में अति सुन्दर मोतीकी बुलाक है, करतलमें वंशी है, हाथों में कङ्कण है, सम्पूर्ण शरीर में हरिचन्दनका लेप हुआ है और कंठमें मनोहर मोतियोंकी माला है, व्रजाङ्गनाओं से घिरे हुए है, ऐसे गोपाल–चुडामणिकी बलिहारी है।

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसङ्घावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे।।

जिनका मुखचन्द्र विकसित कमलके सदृश है, जिनको मोरमुकुट अतिप्रिय है, जिन्होंने वक्षःस्थलपर श्रीवत्स चिह्न और सुन्दर कौस्तुभ मणि धारण किये है, जो पीताम्बरधारी एवं सुन्दर है गोपांगनाओंके नयन कमलोंसे जिनका सुन्दर शरीर सम्पूजित है। गौ और गोपियोंके समूहसे आवृत है, उन मधुर मुरलिका बजाते हुए दिव्य भूषण–भूषित गोविन्दको मैं भजता हूँ।

एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो
दशाश्वमेधाऽवभृथेन तुल्यः।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म
कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ।।

भगवान श्रीकृष्ण के लिये किया गया एक बारका भी प्रणाम दस अश्वमेधयज्ञ के अनुष्ठान की समाप्ति पर किये जाने वाले अवभृथ–स्नान के बराबर (फलप्रद) है। सच पूछा जाय तो एक बार किया गया यह प्रणाम दस अश्वमेधयज्ञ से भी बढ़कर होता है, क्योंकि दस अश्वमेध करने वाला व्यक्ति फिर से जन्म ग्रहण करता है, किन्तु भगवान

श्रीकृष्ण को प्रणाम करने वाला फिर जन्म ग्रहण नहीं करता अर्थात मुक्त हो जाता है ।।

गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे
गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण ।
गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे ।
गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते ।।

हे गोविन्द! हे गोविन्द! हे हरे! हे मुरारे! हे गोविन्द! हे गोविन्द! हे मुकुन्द! हे गोविन्द! हे गोविन्द! हे रथाङ्गपाणे! हे गोविन्द! हे गोविन्द! आपको बार-बार नमस्कार है।

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः ।।

हे देवकी को आनन्दित करनेवाले वासुदेव श्रीकृष्ण तथा हे नन्दगोपकुमार गोविन्द! आपको बार-बार नमस्कार है ।।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ।।

ब्राह्मणों के हितैषी, गौ और ब्राह्मण का कल्याण करने वाले भगवान को नमस्कार है। जगत् का हित करने वाले कृष्ण गोविन्द को बार-बार नमस्कार है ।

कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति यो मां स्मरति नित्यशः ।
जलं भित्त्वा यथा पद्मं नरकादुद्धराम्यहम् ।।
नित्यं वदामि मनुजाः स्वयमूर्ध्वबाहु-
र्यो मां मुकुन्द नरसिंह जनार्दनेति ।
जीवो जपत्यनुदिनं मरणे रणे वा
पाषाणकाष्ठसदृशाय ददाम्यभीष्टम् ।।

श्री कृष्ण ने (स्वयं) कहा- जो निरन्तर 'कृष्ण', 'कृष्ण', 'कृष्ण' कहकर मेरा स्मरण करता रहता है, उसको नरक से मैं उसी तरह निकाल लेता हूँ, जैसे जल फोड़कर कमल निकल आता है । हे मनुष्यो! मैं स्वयं ऊपर भुजा उठाकर सदा कहा करता हूँ कि जो जीव मुझे प्रतिदिन मरण-काल में या रणकी स्थिति में मुकुन्द, नरसिंह, जनार्दन- इस तरह जपता रहता है, उस व्यक्ति को मैं उसकी अभीष्ट वस्तु दे देता हूँ । भले ही उसका हृदय पत्थर या काठकी तरह कठोर हो'

कृष्ण त्वदीयपदपङ्कजपिञ्जरान्ते
अद्यैव मे विशतु मानसराजहंसः ।
प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तैः
कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते ।

हे कृष्ण! आपके चरण-कमलरूपी पिंजड़े में मेरा मन रूपी राजहंस आज ही प्रवेश कर जाय, क्योंकि शरीर से प्राण निकलते समय कण्ठ कफ, वात और पित्त से अवरुद्ध हो जाता है, उस अवसरपर आपका स्मरण कैसे हो सकता है?

।। श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ।।

मंङ्गलाचरण (श्री राधा परक)

सङ्केत- निखिल निगमागम अगोचर रस-रीति प्रकाशक, सकल रसिक-जन वन्दित चरण, हितावतार, वंशी-स्वरुप, श्रीमदाचार्य्य व्यास-नन्दन श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु अपने ग्रन्थ के प्रारम्भ में स्वेष्ट-प्रभाव वर्णनात्मक मङ्गलाचरण करते हैं ।

मूल- **यस्याः कदापि वसनाञ्चल खेलनोत्थ,**
धन्यातिधन्य पवनेन कृतार्थमानी ।
योगीन्द्र दुर्गमगतिर्मधुसूदनोऽपि
तस्या नमोस्तु वृषभानुभुवो दिशेऽपि ॥

भावार्थ- किसी समय जिनके नीलाञ्चल के हिलने से उठे हुए धन्यातिधन्य पवन को स्पर्श करके योगीन्द्रों के लिये अति दुर्गम गति मधुसूदन ने भी अपने आपको कृतकृत्य माना, मैं उन्हीं श्रीवृषभानुनन्दिनी की दिशा को प्रणाम करती हूँ।

* * *

प्रथम जिनकी दिशा को नमस्कार कर चुके हैं; अब उन्हीं की महिमा को नमस्कार करते हैं -

ब्रह्मेश्वरादि सुदुरूह पदारविन्द
श्रीमत्पराग परमाद्भुत वैभवायाः।
सर्वार्थसार रस वर्षिकृपाद्रदृष्टे
रतस्या नमोस्तु वृषभानु-भुवो महिम्ने॥

जिनके चरण कमल ब्रह्मा शंकर आदि के लिये भी अत्यन्त दुरुह हैं, जिन चरणकमलों का शोभामय पराग परम अद्भुत वैभवशाली है, एवं जिनकी कृपा रस भीनी दृष्टि समस्त अर्थों के भी सार रस (प्रेम) का वर्षण करती है, मैं उन्हीं श्रीवृषभानुनन्दिनी की महिमा को नमन करती हूँ।

* * *

महिमा को नमस्कार करके श्रीप्रियाजी के प्रति आपने उनसे अपनेपन का भाव प्राप्त किया है; अतएव अब कुछ समीपता से उनके श्रीचरण रेणु का स्मरण करते हैं –

यो ब्रह्मरुद्र शुक नारद भीष्म मुख्यै -

रालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तस्य।
सद्योवशीकरण चूर्णमनन्तशक्तिं
तं राधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि।।

जो परम पुरुष श्रीकृष्ण; ब्रह्मा, शङ्कर, शुकदेव, नारद और भीष्म जैसे प्रमुख (भागवतों) को भी सहसा आलक्षित नहीं होते, उन्हीं श्रीकृष्ण को तत्काल वश में करने वाले अनन्त शक्ति चूर्ण श्रीराधिका-चरण रेणु का मैं अनुस्मरण करती हूँ।

* * *

पुनः उसी चरण रेणु की महिमा का गान करते हैं -

आधायमूर्द्धनियदापुरुदार गोप्यः
काम्यं पदं प्रियगुणैरपि पिच्छमौलेः।
भावोत्सवेन भजतां रस कामधेनुं
तं राधिका चरण रेणुमहं स्मरामि।।

जिस चरणरेणु को उदार गोपियों ने अपने अपने मस्तक पर धारण करके मयूर-पिच्छधारी श्यामसुन्दर के मधुर गुणों सहित अपना मनोवाञ्छित पद प्राप्त किया तथा जो चरणरेणु भाव समुत्साह पूर्वक सेवन करने वाले (भावुक भक्तों) के लिये रसदाता कामधेनु ही है; मैं उसी श्रीराधिका-चरण रेणु का स्मरण करती हूँ।

* * *

अब श्रीप्रियाजी के परम रसमय स्वरुप का वर्णन करते हुए उन्हें अपने हृदय में स्फुरित देखना चाहते हैं --

वैदग्ध्यसिन्धुरनुराग रसैक सिन्धु
र्वात्सल्य सिन्धुरतिसान्द्रकृपैक सिन्धुः।
लावाण्य सिन्धुरमृतच्छविरुप सिन्धुः
श्रीराधिका स्फुरतु मे हृदि केलि सिन्धुः।।

जो विदग्धता की सिन्धु, अनुराग रस की एकमात्र सिन्धु, वात्सल्य-भाव की सिन्धु, अत्यन्त घनीभूत कृपा की एकमात्र सिन्धु, लावण्य की सिन्धु और छवि रुप अमृत की अपार सिन्धु है। वे केलि-सिन्धु श्रीराधा मेरे हृदय में स्फुरित हों।

* * *

अब श्रीस्वामिनीजू की कृपावलोकन की याचना करते हैं -

पत्रावलीं रचयितुं कुचयोः कपोले
बद्धं विचित्र कवरी नव मल्लिकाभिः।
अङ्गं च भूषयितुमाभरणैर्धृताशे
श्रीराधिके मयि विधेहि कृपावलोकम्।।

हे श्रीराधिके! मैंने तो केवल यही आशा धारण कर रखी है और आप भी मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि का ऐसा ही विधान करें कि मैं आपके युगल-कुच-मण्डल और कपोलों पर (चित्र-विचित्र) पत्रावली-रचना करूँ। मल्लिका के नवीन नवीन पुष्पों को गूथकर विचित्र रीति से आपका कबरी-बन्धन करूँ और आपके सुन्दर सुकोमल अङ्गों में तदनुरुप आभरण आभूषित करूँ।

* * *

अब युगल क्रीडन की एक झांकी -

करे कमलमद्भुतं भ्रमयतोर्मिथोंसार्पित
स्फुरत्पुलक दोर्लता युगलयो: स्मरोन्मत्तयो:॥
सहास-रस-पेशलं मद करीन्द्र-भङ्गीशतै
र्गतिं रसिकयोर्द्वयो: स्मरत चारु वृन्दावने॥

अद्भुत कमल को हाथों में घुमाते हुए, एवं परस्पर स्कन्धों पर पुलकित भुजलता अर्पित किये हुए, कामोन्मत्त, वृन्दावन-विहारी, रसिक युगल की सहास - रस-सुन्दर, शत-शत मदपूर्ण करीन्द्र-गतिमान भङ्गिमाओं के समान गति का (हे मेरे मन!) तू स्मरण कर ?

* * *

अब युगल किशोर के मिलन रस को अपने हृदय में देखने की भावना करते हैं -

अन्योन्यहास परिहास विलास केली
वैचित्र्य जृम्भित महारस-वैभवेन।
वृन्दावने विलसतापहृतं विदग्ध -
द्वंदेन केनचिदहो हृदयं मदीयम्॥

अहो! पारस्परिक हास-परिहास युक्त विविध-विलास केलि की विचित्रता से उच्छलित महा रस-विभव के द्वारा श्रीवृन्दावन में विलास करने वाले किन्हीं विदग्ध युगल ने मेरे हृदय का अपहरण कर लिया।

* * *

अब श्रीस्वामिनीजी के एकान्त विलास रस की छटा का अभिसिञ्चन प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं -

श्रीराधिके सुरतरङ्गि नितम्ब भागे
काञ्चीकलाप कल हंस कलानुलापै:।
मन्जीरसिञ्जित मधुव्रत गुंजिताङ्घ्रि:
पङ्करुहै: शिशिरयस्व रसच्छटाभि:॥

हे राधिके! हे सुरत-केलि-रन्जित नितम्ब भागे! अहा! आपका यह काञ्ची-

कलाप क्या है मानो कल हंसो का कल-कल अनुलाप है। और चरण-कमलों के नुपुरों की मन्द मन्द झनकार ही मानो मतवाले भ्रमरो का गुञ्जन है। स्वामिनी! आप अपने इसी मधुर-रस की छटा से मुझे शीतल कर दीजिए।

* * *

अब अद्भुत प्रेम प्रवाह रुपा श्री प्रियाजी का सान्निध्य प्राप्त करने की याचना करते हैं -

श्रीराधिके सुरतरङ्गिणि दिव्यकेलि

कल्लोल मालिनी लसद्वदनारविन्दे।

श्यामामृताम्बुनिधि सङ्गमतीव्रवेगि -

न्यावर्त्तनाभि रुचिरे मम सन्निधेहि।।

हे दिव्यकेलि तरङ्गमाले! हे शोभमान् वदनारविन्दे! हे श्यामसुन्दर-सुधा-सागर सङ्गमार्थ तीव्र वेगवती! हे रुचिर नाभिरुप गम्भीर भँवर से शोभायमान सुरत-सलिते!(मन्दाकिनी रुपे!) हे श्रीराधिके! आप मुझे अपना सामीप्य प्रदान किजिए।

* * *

अब श्रीहितअलिजी अपनी स्वामिनीजी का प्रेमालिङ्गन प्राप्त करने की अभिलाषा करती हैं-

दृष्ट्वैव चम्पकलतेव चमत्कृताङ्गी

वेणुध्वनिं क्वच निशम्य च विह्वलाङ्गी।

सा श्यामसुन्दर गुणैरनुगीयमानैः

प्रीता परिष्वजतु मां वृषभानुपुत्री।।

जो अपने प्रियतम श्रीलालजी को देखते ही चम्पकलता के समान अङ्ग-अङ्ग से चमत्कृत हो उठती हैं, और कभी मन्द-मन्द वेणु ध्वनि को सुनकर जिनके समस्त अङ्ग विह्वल हो उठते हैं। अहो! वे श्रीवृषभानुनन्दिनी मेरे द्वारा गाये हुए अपने प्रियतम श्यामसुन्दर के गुणों को श्रवणकर क्या कभी मुझे प्रीतिपूर्वक आलिङ्गन करेंगी ?

* * *

अब श्री वृषभानुनन्दिनी का नाम प्रकट करते है -

अमन्द प्रेमाङ्कश्लथ सकल निर्बन्धहृदयं

दयापारं दिव्यच्छवि मधुर लावण्य ललितम् ।

अलक्ष्यं राधाख्यं निखिलनिगमैरप्यतितरां

रसाम्भोधेः सारं किमपि सुकुमारं विजयते।।

तीव्र प्रेम के कारण जिनके हृदय में समस्त बन्धन (आग्रह) शिथिल हो चुके हैं, जो दया की सीमा हैं। एवं जिनकी दिव्य छवि लावण्य माधुर्य्य से अति ललित हो रही है, वे निखिल-निगमों को भी अत्यन्त अलक्षित, रस समुद्र की सार

स्वरुपा कोई एक अनिर्वचनीय सुकुमारी हैं। उन श्रीराधा की जय हो, विजय हो।

* * *

श्रीलालजी का विमोहन करने वाली श्रीप्रियाजी की परिचर्या (सेवा) करने की आकाङ्क्षा करते हैं-

वेणु: करान्निपतित: स्खलितं शिखण्डं
भ्रष्टं च पीतवसनं व्रजराज सूनो:।
यस्या: कटाक्ष शरपात विमूर्च्छितस्य
तां राधिका परिचरामि कदा रसेन॥

जिनके नयन-बाणों की चोट से श्रीव्रजराजकुमार की मुरली हाथ से छुट गिरती है। सिर का मोर मुकुट खिसक चलता है और पिताम्बर भी स्थान-च्युत हो जाता है; यहाँ तक कि वे मूर्च्छित होकर गिर पड़ते हैं। अहा! क्या मैं कभी ऐसी श्रीराधिका की प्रेम-पूर्वक परिचर्या करुँगी ?

* * *

श्रीस्वामिनीजी की परिचर्या ही मुझे जन्म जन्म मिलती रहे अब यह अभिलाषा करते हैं -

तस्या अपार रस सार विलास-मूर्ते
रानन्द कन्द परमाद्भुत सौम्य लक्ष्म्या:।
ब्रह्मादि दुर्गमगतेर्वृषभानुजाया:
कैङ्कर्य्यमेव ममजन्मनि-जन्मनि स्यात्॥

जो अपार रस सार की विलास-मूर्ति, आनन्द की मूल एवं परमाद्भुत सुख की सम्पत्ति हैं एवं जिनकी गति ब्रह्मादि को भी दुर्गम है। उन श्रीवृषभानुनन्दिनी जू का कैङ्कर्य ही मुझे जन्म जन्मान्तरों में प्राप्त होता रहे।

* * *

फिर भी उपरोक्तानुसार ही -

पूर्णानुराग रसमूर्ति तडित्लताभं
ज्योति: परं भगवतो रतिमद्रहस्यम्।
यत्प्रादुरस्ति कृपया वृधभानु गेहे
स्यात्किङ्करी भवितुमेव ममाभिलाष:॥

एक रहस्यमयी परम ज्योति है। जो परात्पर परमपुरुष भगवान श्रीकृष्ण को भी अपने आप में समा लेती है। जिसकी कान्ति विद्युल्लता के समान देदीप्यमान् है और जो पूर्णतम अनुराग-रस की मूर्ति है। अहो! कृपापूर्वक ही वह श्रीवृषभानु भवन में प्रादुर्भुत हुई है। मेरी तो यही अभिलाषा है कि उसी की दासी हो रहूँ।

श्रीप्रियाजी के सुकुमार चरण कमलों को अपने सिर पर धारण करने की अभिलाषा करते हैं -

सत्प्रेम सिन्धु मकरन्द रसौघधारा
सारानस्त्रमभित: स्त्रवदाश्रितेषु।
श्रीराधिके तव कदा चरणारविन्दं
गोविन्द जीवनधनं शिरसा वहामि।।

जो अपने आश्रित-जनों पर सत्प्रेम (महाप्रेम) समुद्र के मधुर मकरन्द-रस की प्रबल धारा अनवरत रुप से चारों ओर से बरसाते रहते हैं तथा जो गोविन्द के जीवन-धन हैं, श्रीराधिके! आपके उन चरण कमलों को मैं कब अपने सिर पर धारण करुँगी ?

* * *

श्रीवृन्दावन का महत्व वैकुण्ठ से भी अधिक है, इसका प्रकाश करते हुए अब यह प्रकट करते हैं कि श्रीराधिका-किङ्करियों के अतिरिक्त यह वृन्दावन सबके लिए अगम्य है-

किं ब्रूमोन्यत्र कुण्ठीकृतकजनपदे धाम्न्यपि श्रीविकुण्ठे
राधा माधुर्य्य वेत्तामधुपतिरथ तन्माधुरीं वेत्ति राधा।
वृन्दारण्य-स्थलीयं परम-रस-सुधा-माधुरीणां धुरीणां
तद्द्वन्द्वं स्वादनीयं सकलमपि ददौ राधिका किङ्करीभ्य:।।

अन्यत्र की तो बात ही क्या श्रीविकुण्ठ धाम भी (श्रीराधा माधुर्य्य के अभाव से) कुण्ठित प्रदेश बन गया है, क्योंकि श्रीराधा के माधुर्य्य को केवल श्रीमाधव ही जानते हैं। और श्रीमाधव के माधुर्य्य को केवल श्रीराधा जानती है। और आस्वादनीय युगल को परम रस सुधामाधुरी-अग्रगण्य श्रीवृन्दारण्य स्थली ने श्रीराधा-किङ्करी-गणों को सम्पूर्ण रुप से प्रदान कर दिया है।

-श्री राधा-सुधा-निधि श्रीहित हरिवंशचन्द्रजी महाप्रभुजी की पुस्तक से साभार

श्यामप्रेमविनोदिनी मधुरिमाधाराधरे स्मेरिणी
गौरी प्रेमवती शुभा च सुभगा प्रेमाब्धिसंवर्धिनी।
गण्डे मण्डितकुण्डला कटितटे धत्ते मुदा किंकिणीं
लीला: काम्यत देहिनी विजयते वृन्दावनस्थायिनी।।
शुद्धस्वर्णविडम्बिनी परिलसल्लावण्यसम्मोहिनी
नानारत्नविलासिनी मधुरिमाधाराधरे वंशिनी।
कृष्णप्रेमतरंगिणी निरवधि प्रेमामृतालापिनी
श्यामप्रेमविनोदिनी विजयते राधासुधादेहिनी।।

* * *

राधां रासेश्वरीं रम्यां गोविन्दमोहिनीं पराम्।
कृष्णप्राणाधिकां राधां नमामि परमेश्वरीम्॥
राधे वृन्दावनाधीशे करुणामृतवाहिनि।
कृपया निजपादाब्जदास्यं मह्यं प्रदीयताम्॥
वन्दे वृन्दावनानन्दां राधिकां परमेश्वरीम्।
गोपिकां परमां श्रेष्ठां ह्लादिनीं शक्तिरूपिणीम्॥
त्वं मे प्राणाधिका राधे प्रेयसी च वरानने।
यथा त्वं च तथाहं च भेदो हि नावयोर्ध्रुवम्।
यथा क्षीरे च धावल्यं यथाग्नौ दाहिका सति।
यथा पृथिव्यां गन्धश्च तथाहं त्वयि संततम्॥
तप्तकाञ्चनगौराङ्गि राधे वृन्दावनेश्वरि।
वृषभानुसुते देवि त्वां नमामि हरिप्रिये॥
नवीनां हेमगौराङ्गीं प्रवरेन्दीवराम्बराम्।
वृषभानुसुतां वन्दे वृन्दावनविलासिनीम्॥
तप्तकाञ्चनगौराङ्गीं रङ्गिणीं प्रमदाकृतिम्।
वृषभानुसुतां वन्दे वृन्दावनविलासिनीम्॥
नवीनां हेमगौराङ्गीं पूर्णचन्द्रवतीं सतीम्।
वृषभानुसुतां देवीं वन्दे राधां जगत्प्रसूम्॥
राधां रासेश्वरीं रम्यां गोविन्दमोहिनीं पराम्।
वृषभानुसुतां देवीं नमामि श्रीहरिप्रियाम्॥
महाभावस्वरूपा त्वं कृष्णप्रिया वरीयसी।
प्रेमभक्तिप्रदे देवि राधिके त्वां नमाम्यहम्॥
रासोत्सवविलासिनि नमस्ते परमेश्वरि।
कृष्णप्राणाधिके राधे परमानन्दविग्रहे॥

* * *

नमस्ते श्रियै राधिकायै परायै
नमस्ते नमस्ते मुकुन्दप्रियायै।
सदानन्दरूपे प्रसीद त्वमन्तः
प्रकाशे स्फुरन्ति मुकुन्देन सार्धम्

* * *

भजामि राधामरविन्दनेत्रां
स्मरामि राधां मधुररिमतास्याम्।
वदामि राधां करुणामरार्द्राम्
ततो ममान्यास्ति गतिर्न कापि।।
येयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धि–
र्देहश्चैकः क्रीडनार्थं द्विधाभूत्।
देहो यथा छाय्या शोभमानः
श्रृण्वन पठन् याति, तद्धाम नित्यम्।।

* * *

।।श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः।।

श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तवराज

मुनीन्द्रवृन्दवन्दिते त्रिलोकशोकहारिणि
प्रसन्नवक्त्रपङ्कजे निकुंजभूविलासिनि।
व्रजेन्द्रभानुनन्दिनि व्रजेन्द्रसूनुसङ्गते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥१॥

राजा वृषभानुकी लाड़िली श्रीराधिके! मुनीन्द्र–वृन्द आपके चरणोंकी वन्दना करते हैं, आप तीनों लोकोंका शोक दूर करनेवाली है, आपका मुखकमल सदा प्रफुल्लित रहता है, आप निकुंज–भवनमें विलास करनेवाली और श्रीव्रजराजकुमारकी संगिनी हैं, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी!

अशोकवृक्षवल्लरीवितानमण्डपस्थिते
प्रवालबालपल्लवप्रभारुणाङ्घ्रिकोमले।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूतसम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥२॥

अपार ऐश्वर्यकी भण्डार श्रीराधिके! आप अशोकवृक्षकी लताओंके वितानसे सुशोभित मण्डपमें विराजमान रहती हैं, आपके कोमल चरण मूँगे तथा नवीन लाल-लाल पल्लवोंके सदृश अरुण वर्णके हैं, आपके वरद हस्त सदा अभय दान देनेके लिये उद्यत रहते हैं, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी!

अनङ्गरङ्गमङ्गलप्रसङ्गभङ्गुरभ्रुवां
सुविभ्रमैः ससम्भ्रमैर्दृगन्तबाणपातनैः।
निरन्तरं वशीकृतप्रतीतनन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥३॥

प्रेम-क्रीडाके रंग-मंचपर मङ्गलमय प्रसंगमें बाँकी भृकुटियोंके साथ सहसा परम विस्मयकारक कटाक्षरूप बाणोंकी वर्षासे श्रीनन्दनन्दनको विश्वासपूर्वक निरन्तर वशमें कर लेनेवाली श्रीराधिके! आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी?

तडित्सुवर्णचम्पकप्रदीप्तगौरविग्रहे
मुखप्रभापरास्तकोटिशारदेन्दुमण्डले।
विचित्रचित्रसंचरच्चकोरशावलोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥४॥

श्रीराधिके! आपका श्रीविग्रह बिजली, स्वर्ण तथा चम्पाके पुष्पके समान सुनहली कान्तिसे देदीप्यमान गौर वर्णका है, आपके मुखकी प्रभा करोड़ों शारदीय चन्द्र-मण्डलोंको परास्त करनेवाली है, आपके नेत्र चंचल चकोर-शावकके समान विचित्र भावभङ्गिमासे संचरित होते हैं, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्ष का पात्र कब बनायेंगी?

मदोन्मदातियौवने प्रमोदमानमण्डिते
प्रियानुरागरञ्जिते कलाविलासपण्डिते।
अनन्यधन्यकुञ्जराजकामकेलिकोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥५॥

प्रियतमके अनुरागमें अनुरक्त श्रीराधिके! आप अपने अपूर्व रूप-यौवनके मदमें मत्त, प्रमोदमय मानसे विभूषित, क्रीडाकलामें कुशल और सर्वातिशय महिमाशाली कुञ्जराज श्रीकृष्णकी प्रेम-क्रीडाओंको जाननेवाली हैं, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका अधिकारी कब बनायेंगी?

अशेषहावभावधीरहीरहारभूषिते
प्रभूतशातकुम्भकुम्भकुम्भिकुम्भसुस्तनि।
प्रशस्तमन्दहास्यचूर्णपूर्णसौख्यसागरे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥६॥

अनन्त हाव-भाव, धीरता और रत्नहारसे विभूषिता श्रीराधिके! आपके उरोज सुवर्ण-कलश तथा हरित-कुम्भके समान उन्नत एवं सुन्दर हैं तथा आपका प्रशस्त मन्द-हास्य तरंगोंसे परिपूर्ण आनन्दसिन्धुके समान है, आप मुझे इस लोकमें अपने

कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी?

मृणालबालवल्लरीतरङ्गरङ्गदोर्लते
लताग्रलास्यलोलनीललोचनावलोकने।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ मुग्धमोहनाश्रये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥७॥

श्री राधिके! आपकी भुजाएँ जल–तरंगों के द्वारा प्रकम्पित नवकमल–नालके समान कोमल हैं, आप लताओं के हिलते हुए अग्रभागके सदृश चञ्चल रतनारे नेत्रोंसे अवलोकन करती हैं और प्रलुब्ध होकर मिलनकी आकांक्षासे ललचाये हुए पीछे–पीछे फिरनेवाले मनोज्ञ मनमोहनकी आश्रय–प्रदायिका हैं, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका अधिकारी कब बनायेंगी?

सुवर्णमालिकाञ्चिते त्रिरेखकम्बुकण्ठगे
त्रिसूत्रमङ्गलीगुणत्रिरत्नदीप्तिदीधिते।
सलोलनीलकुन्तले प्रसूनगुच्छगुम्फिते।
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥८॥

श्रीराधिके! आपका कण्ठ सुवर्णमालाओंसे अलंकृत एवं त्रिरेखाङ्कित शंखके समान है और उसमें बँधे हुए मांगलिक त्रिसूत्र और त्रिरत्नोंकी प्रभासे उदीप्त हो रहा है। आपके हिलते काले घुंघराले केशोंमें सुन्दर पुष्पगुच्छ गुँथे हुए हैं, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी?

नितम्बबिम्बलम्बमानपुष्पमेखलागुणे
प्रशस्तरत्नकिङ्किणीकलापमध्यमञ्जुले।
करीन्द्रशुण्डदण्डिकावरोहसौभगोरुके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥९॥

श्रीराधे! आपका कटि–प्रदेश ऐसी उत्तम रत्नजटित करधनीसे सुशोभित है, जिसमें लटकते हुए रत्नजटित स्वर्ण–पुष्पोंके समूह झनकार कर रहे हैं तथा आपका ऊरुभाग हाथी की सूँड़के समान चढ़ाव–उतारवाला होने से अत्यन्त मनोहर है, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्ष का पात्र कब बनायेंगी?

अनेकमन्त्रनादमञ्जुनूपुरारवस्खलत्-
समाजराजहंसवंशनिक्वणातिगौरवे।
विलोलहेमवल्लरी विडम्बिचारुचङ्क्रमे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥१०॥

श्रीराधे! आपके चरणकमलोंमें अनेक निगमागम–मन्त्रोंकी ध्वनिके समान सुन्दर झनकार करनेवाले स्वर्णमय नूपुर कूजते हुए अत्यन्त मनोहर राजहंसोंकी पङ्क्ति–सदृश प्रतीत होते हैं तथा चलते समय आपके सुन्दर अंगोंकी छबि ऐसी शोभा देती है, मानो सुवर्णलता लहरा रही हो, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी?

अनन्तकोटिविष्णुलोकनम्रपद्मजार्चिते
हिमाद्रिजापुलोमजाविरञ्चिजावरप्रदे।
अपारसिद्धिवृद्धिदिग्धसत्पदाङ्गुलीनखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥११॥

श्रीराधे! अनन्त कोटि विष्णुलोकोंकी अधिष्ठात्री श्रीलक्ष्मीजीसे भी आप पूजि है, आप श्रीपार्वती, इन्द्राणी एवं सरस्वतीजीको भी वर प्रदान करनेवाली हैं, आपके प पद्मोंके एक नखमात्रका ही ध्यान अपार सिद्धियोंकी वृद्धि करनेवाला है, आप मु इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी?

मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेदभारतीश्वरि प्रमाणशासनेश्वरि।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोदकाननेश्वरि
व्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते॥१२॥

व्रजेश्वरी श्रीराधिके! आप सम्पूर्ण यज्ञों तथा शुभकर्मोंकी ईश्वरी हैं। स्वधेश्व आप देवगणों (ऋक्, यजुः, साम) त्रिवेद–मंत्रों एवं प्रामाणिक सत्–शास्त्रोंकी ईश्वरी ह व्रजाधिपे! आप रमा, क्षमा एवं प्रमोद–काननकी ईश्वरी हैं,* आपको नमस्कार है।

इतीदमद्भुतस्तवं निशम्य भानुनन्दिनि
करोतु संततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम्।
भवेत्तदैव संचितत्रिरूपकर्मनाशनं
लभेत्तदा व्रजेन्द्रसूनुमण्डलप्रवेशनम्॥१३॥

हे श्रीवृषभानुनन्दिनी श्रीराधिके! मेरी इस अद्भुत स्तुतिको श्रवण कर अ सदाके लिये इस दीनको कृपावलोकनका पात्र बना लीजिये। उक्त अभिलाषाकी पू होते ही मेरे संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण–ये तीनों तरहके कर्म विनष्ट हो जायेंगे औ तत्क्षण श्रीव्रजेन्द्रनन्दनके मण्डल (नित्य तथा दिव्य लीला) में मेरा प्रवेश हो जायेग

शरत्यां च सिताष्टम्यां दशम्यां च विशुद्धया।
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत्साधकः सुधीः॥१४॥
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः।
राधाकृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात् प्रेमलक्षणा॥१५॥

जो विद्वान् साधक शुद्ध–बुद्धिपूर्वक पूर्णिमा, शुक्ल–पक्षकी अष्टमी, दश एकादशी या त्रयोदशीके दिन उक्त श्रीकृपाकटाक्ष–स्तोत्रका पाठ करेगा, वह साध जिस – जिस इष्ट वस्तुकी कामना करेगा, वह सब उसे मिल जायेगा। साथ श्रीराधाजी के कृपाकटाक्षके प्रभावसे प्रेमलक्षणा–भक्ति भी प्राप्त हो जायेगी।

उरुमात्रे नाभिमात्रे हृन्मात्रे कण्ठमात्रके।
राधाकुण्डजले स्थित्वा यः पठेत्साधकः शतम्॥१६॥

---

* (श्री सीताजी आप ही है)

तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् वाञ्छितार्थफलं लभेत्।
ऐश्वर्यं च लभेत् साक्षाद् दृशा पश्यति राधिकाम्॥१७॥

जो साधक जंघा, नाभि, छाती तथा कण्ठपर्यन्त राधा–कुण्डके जलमें खड़ा होकर इस स्तोत्रका सौ बार पाठ करेगा, उसके समस्त प्रयोजन सिद्ध हो जायँगे तथा उसे मनोवाञ्छित फल और ऐश्वर्य की उपलब्धि होगी एवं साक्षात् श्रीराधिकाजी का दर्शन प्राप्त होगा।

तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा ददते महावरम्।
येन पश्यति नेत्राभ्यां तत्प्रियं श्यामसुन्दरम्॥१८॥

उसके कारण वे उसी क्षण प्रसन्न होकर उसे महान् वर प्रदान करेंगी। जिसके फलस्वरूप वह श्रीराधिकाजीके प्रियतम श्रीश्यामसुन्दरका भी अपने नेत्रोंसे साक्षात् दर्शन करेगा।

नित्यलीलाप्रवेशं च ददाति श्रीव्रजाधिपः।
अतः परतरं प्राप्यं वैष्णवानां न विद्यते॥१९॥

ऐसे भक्तको श्रीव्रजेश नित्यलीला–प्रवेशका अधिकार प्रदान करते हैं, जिससे बढ़कर वैष्णवोंके लिये प्राप्त करनेयोग्य अन्य कोई वस्तु नहीं है।

भावार्थ – इस स्तोत्र से श्री राधा – कृष्ण का साक्षात्कार होता है, उसकी विधि इस प्रकार है कि (गोवर्धन पर्वत के निकट) श्री राधाकुण्ड के जल में जंघाओं तक या नाभि पर्यन्त या छाती तक या कण्ठ तक जल में खड़े होकर इस स्तोत्र का १०० बार पाठ करें । इस प्रकार कुछ दिन पाठ करने पर सम्पूर्ण मनोवांछित पदार्थ प्राप्त हो जाते है। ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है । दर्शनार्थी भक्त को इन्हीं नेत्रों से साक्षात् श्रीराधाजी का दर्शन होता है । श्री राधा जी प्रकट होकर प्रसन्नतापूर्वक महान् वरदान देती है। (अथवा अपने चरणों का महावर (यावक) भक्त के मस्तक पर लगा देती हैं) वरदान में केवल अपनी प्रिय वस्तु दो यही मांगना चाहिये। तब तत्काल ही श्याम–सुन्दर प्रकट होकर दर्शन देते हैं, प्रसन्न होकर श्री व्रजराजकुमार नित्य लीलाओं में प्रवेश प्रदान करते है। इससे बढ़कर वैष्णवों के लिए कोई भी वस्तु नहीं है । किसी–किसी को राधा कुण्ड के जल में १०० पाठ करने पर एक ही दिन में दर्शन हो जाता है । किसी–किसी को महीनों में होता है। इस लिए जब तक दर्शन न हो पाठ करते रहें। किसी–किसी को अपने घर में ही १०० पाठ रोज करने से कुछ दिनों में इष्ट प्राप्ति हो जाती है ।

।। इति ऊर्ध्वाम्नायतन्त्रे शिव गौरी संवादे श्री राधा कृपा कटाक्ष स्तवराजः सम्पूर्णः ।।

॥ गोपिजन वल्लभाय नमः ॥

॥ श्रीकृष्णकृपाकटाक्षस्तोत्रम् ॥

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम् ।
सुपिच्छगुच्छ तकं सुनादवेणुहस्तकं
अनङ्गरङ्गसागरं नमामि कृष्णनागरम् ॥१॥

व्रज-भूमिके एकमात्र आभूषण, समस्त पापोंकोनष्ट करनेवाले तथा अपने भक्तोंके चित्तोंको आनन्दित करनेवाले नन्दनन्दनको मैं सर्वदा भजता हूँ। जिनके मस्तकपर मनोहर मोर-पंखका मुकुट है, हाथों में सुरीली बाँसुरी है तथा जो प्रेम-तरङ्गके सागर हैं, उन नटनागर श्रीकृष्णचन्द्रको मैं नमस्कार करता हूँ।

मनोज्ञगर्वमोचनं विशाललोललोचनं
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम् ।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम् ॥२॥

कामदेवका मान-मर्दन करनेवाले, बड़े-बड़े सुन्दर चंचल नेत्रोंवाले तथा व्रजगोपोंका शोक हरनेवाले कमलनयन भगवान्‌को मैं नमस्कार करता हूँ। जिन्होंने अपने करकमलोंपर गिरिराजको धारण किया था तथा जिनकी मुस्कान और चितवन अत्यन्त मनोहर है, देवराज इन्द्रका मान-मर्दन करनेवाले उन श्रीकृष्णरूप गजराजको मैं नमस्कार करता हूँ।

कदम्बसूनुकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं
व्रजाङ्गनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् ।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम् ॥३॥

जिनके कानोंमें कदम्ब-पुष्पोंके कुण्डल हैं, परम सुन्दर कपोल हैं तथा व्रजबालाओंके जो एकमात्र प्राणाधार हैं, उन दुर्लभ श्रीकृष्णचन्द्रको मैं नमस्कार करता हूँ। जो गोपगण और नन्दजीके सहित अतिप्रसन्ना यशोदाजीसे युक्त हैं और एकमात्र आनन्ददायक हैं, उन गोपनायक गोपालको मैं नमस्कार करता हूँ।

सदैव पादपङ्कजं मदीयमानसे निजं
दधानमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकम् ।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ॥४॥

जिन्होंने अपने चरणकमलोंको मेरे मनरूप सरोवरमें स्थापित कर रखा है, उन अति सुन्दर अलकोंवाले नन्दकुमारको मैं नमस्कार करता हूँ। जो समस्त दोषों को दूर करनेवाले, समस्त लोकोंका पालन–पोषण करने वाले और समस्त व्रजगोपोंके हृदय हैं, उन नन्दजीकी लालसारूप श्रीकृष्णचन्दको मैं नमस्कार करता हूँ।

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम् ।
दृगन्तकान्तभङ्गिनं सदासदालिसङ्गिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम् ॥५॥

जो भूमिका भार उतारनेवाले, संसार–सागरके कर्णधार और चित्तको चुरानेवाले हैं, उन यशोदाकुमारको मैं नमस्कार करता हूँ। अति कमनीय कटाक्षवाले, दिव्य सखियोंद्वारा निरन्तर सेवित, नित्य नूतन नन्दकुमारको मैं नमस्कार करता हूँ।

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम् ।
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम् ॥६॥

जो गुणोंके भण्डार, सुखके सागर, कृपानिधान और देव–शत्रुओंको ध्वस्त करनेवाले हैं, उन कृपालु गोपालको मैं नमस्कार करता हूँ। जिनकी शरीर–कान्ति श्याम मेघकी–सी है और उसपर बिजलीकी–सी आभावाला अत्यन्त सुन्दर पीताम्बर फहरा रहा है, उन नित्य नूतन लीलाबिहारी, नटनागर गोपालको मैं नमस्कार करता हूँ।

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं
नमामि कुञ्जमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम् ।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुञ्जनायकम् ॥७॥

जो समस्त गोपोंको आनन्दित करनेवाले, हृदयकमलको विकसित करनेवाले और देदीप्यमान सूर्यके समान शोभायमान हैं, उन कुञ्जमध्यवर्ती श्यामसुन्दरको मैं नमस्कार करता हूँ। जो कामनाओंको भली–भाँति पूर्ण करने वाले हैं और जिनकी चारु चितवन बाणके समान बींधनेवाली है, सुमधुर वेणु बजाकर गान करनेवाले उन कुञ्जनायकको मैं नमस्कार करता हूँ।

विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञ तल्पशायिनं

नमामि कुञ्जकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम् ।

किशोरिकान्तिरञ्जितं दृगंञ्जनं सुशोभितं

गजेन्द्रमोक्षकारिणं नमामि श्रीविहारिणम् ॥८॥

जो चतुर गोपिकाओंके मनरूप सुकोमल शय्यापर शयन करनेवाले तथा कुञ्जवनमें बढ़ती हुई दावाग्निको पान कर जानेवाले हैं, उन श्रीकृष्णचन्द्रको मैं नमस्कार करता हूँ। श्रीवृषभानुकिशोरीकी अङ्गकान्तिसे जिनके अङ्ग झलक रहे हैं, जिनके नेत्रों में अंजन शोभा दे रहा है, गजराजको मोक्ष देनेवाले तथा श्रीजीके साथ विहार करनेवाले (श्रीकृष्णचन्द्र) को मैं नमस्कार करता हूँ।

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा

मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।

प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्

भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान्॥९॥

मुझपर ऐसी कृपा हो कि जब-तब मैं जैसी भी परिस्थिति में रहूँ, सदा श्रीकृष्णचन्द्रकी सत्कथाओंका गान करूँ। जो पुरुष इस द्व्यष्टक प्रमाणिका छन्द (स्तोत्र) का पाठ या जप करेगा, वह जन्म-जन्ममें नन्दनन्दन श्यामसुन्दरकी भक्तिसे युक्त होगा।

इति श्रीमदाद्यशंकराचार्यकृतं श्रीकृष्णाष्टकं सम्पूर्णम्

* * *

॥ श्री मधुराधिपतेर नमः ॥

॥ श्री मधुराष्टकम् ॥

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥१॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥२॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।

नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।३।।
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।४।।
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितँ मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।५।।
गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम ।।६।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।७।।
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।८।।

।। इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम् ।।

।। श्री श्री राधिकायै नमः ।।

।। श्रीमङ्गलगीतम् ।।

भक्तवर श्रीजयदेवकविविरचितम्

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए ।
कलितललितवनमाल जय जय देव हरे ।।१।।
दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए ।
मुनिजनमानसहंस जय जय देव हरे ।।२।।
कालियविषधर गञ्जन जनरञ्जन ए ।
यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे ।।३।।
मधुमुरनरकविनाशन गरुडासन ए ।
सुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे ।।४।।

अमलकमलदललोचन भवमोचन ए ।
त्रिभुवनभवननिदान जय जय देव हरे ।।५।।
जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए ।
समरशमितदशकण्ठ जय जय देव हरे ।।६।।
अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए ।
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे ।।७।।
तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए ।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ।।८।।
श्रीजयदेवकवेरिदं कुरूते मुदम् ए ।
मङ्गलमुज्ज्वलगीति जय जय देव हरे ।।९।।

।। श्रीकृष्ण वन्देजगत् गुरुम् ।।

।। श्रीकृष्ण-स्तुति ।।

वसुदेवसुतंदेवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।।

श्रीकृष्णचन्द्र कृपालु भजु मन !
हरण-भव-भय दारुणं ।
नवकञ्ज लोचन, कंज-मुख,
कर कञ्ज, पद-कञ्जारुणं ।।1।।
गोपाल गोकुल-वल्लभी-,
प्रिय-गोप-गोसुत-वल्लभं ।
चरणारविन्दमहं भजे,
भजनीय सुर-मुनि-दुर्लभं ।।2।।

घनस्याम काम अनेक छवि,
लोकाभिराम मनोहरं।
किंजल्क-बसन, किसोर-मूरति,
भूरि गुन करुनाकरं ॥3॥
सिर केकि-पिच्छ, बिलोल कुण्डल,
अरुन बनरुह-लोचनं।
गुंजावतंस विचित्र, सब अंग धातु,
भव-भय-मोचनं।
कच कुटिल, सुन्दर तिलक-भ्रू,
राका-मयंक-समाननं।
अपहरन 'तुलसीदास'
त्रास बिहार बृन्दा-काननं ॥5॥

* * *

॥ श्री श्री राधिकायै नमः ॥

॥ अथ श्रीराधा कवच ॥

पार्वत्युवाच

कैलास-वासिन् भगवन् भक्तानुग्रहकारक!।
राधिका-कवचं पुण्यं कथयस्व मम प्रभो।।१।।
यद्यस्ति करुणा नाथ त्राहि मां दुःखतो भयात्।
त्वमेवशरणं नाथ शूलपाणे! पिनाकधृक्।।२।।

पार्वतीने कहा – हे कैलासवासिन् ! भक्तोंपर अनुग्रह करनेवाले हे प्रभो! श्रीराधिकाजीका पवित्र कवच मुझको सुनाओ।।१।। हे त्रिसूल और धनुष धारण करनेवाले नाथ! मैं आपकी शरणमें हूँ, यदि मुझपर पूर्ण कृपा है तो दुखके भयसे मेरी आप रक्षा कीजिये।

शिव उवाच

श्रृणुष्व गिरिजे तुभ्यं कवचं पूर्व-सूचितम्।
सर्वरक्षाकरं पुण्यं सर्वहत्या-हरं परम्।।३।।
हरिभक्ति-प्रदं साक्षात् भुक्ति-मुक्ति-प्रसाधनम्।
त्रैलोक्याकर्षणं देवि हरिसान्निध्यकारकम्।।४।।

श्री शिवजी बोले-हे गिरिराज-कुमारी सुनो। वह प्राचीन कवच तुमको सुना रहा हूँ जो बड़ा पवित्र है, सम्पूर्ण पापों को हरनेवाला और सब प्रकारसे रक्षा करनेवाला है।।३।। सुख, भोग और मोक्षका साधन एवं श्रीश्यामसुन्दरकी भक्तिका देनेवाला है। हे देवि! यह कवच त्रिलोकीका आकर्षण कर सकता है और साधकको प्रभुकी सन्निधिमें पहुँचा देता है।।४।।

सर्वत्र जयदं देवि सर्व शत्रु-भयावहम्।
सर्वेषां चैव भूतानां मनोवृत्ति हरं परं।।५।।
चतुर्धा मुक्ति-जनकं सदानन्द-करं परम्।
राजसूयाश्वमेधानां यज्ञानां फल-दायकम्।।६।।

यह सभी शत्रुओंको डरानेवाला, सर्वत्र विजय प्राप्त करानेवाला और सभी प्राणियोंकी मनोवृत्तियों को हरनेवाला है।।५।। इस कवचके पढ़ने से सदा ही आनन्द रहता है। सालोक्य, सार्ष्टि, सामीप्य, सायुज्य चारों ही प्रकारकी मुक्ति प्राप्त हो जाती है एवं अनेकों राजसूय और अश्वमेध यज्ञोंका फल प्राप्त होता है।।६।।

इदं कवचमज्ञात्वा राधा-मन्त्रं च यो जपेत्।
स नाप्नोति फलं तस्य विघ्नस्तस्य पदे पदे।।७।।
ऋषिरस्य महादेवोऽनुष्टुप् छन्दश्च कीर्तितः।
राधाऽस्य देवताप्रोक्ता रां बीजं कीलकं स्मृतम्।।८।।

इस कवच के बिना यदि कोई केवल श्रीराधा मंत्रको जपे तो उसे उसका फल नहीं मिलता और पद-पद पर विघ्न-बाधायें उपस्थित होने लगती है।।७।। श्रीराधा कवचका मैं (महादेव) ऋषि हूँ, अनुष्टुप छन्द है, श्रीराधा देवता है रांबीज और रां ही कीलक है।।८।।

धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः।
श्रीराधा मे शिरःपातु ललाटंराधिका तथा।।९।।
श्रीमती नेत्र-युगलं कर्णौगोपेन्द्र-नन्दिनी।
हरिप्रियानासिकां च भ्रूयुगंशशिशोभना।।१०।।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इनसबमें ही इसका विनियोग किया जाता है। (कवचके मूल शब्दोंका भावार्थ इस प्रकार जानना चाहिये) श्रीराधाजी मेरे मस्तक और ललाटकी रक्षा करें, श्रीमती दोनों नेत्रोंकी और गोपेन्द्रनन्दिनी दोनों कानोंकी रक्षा करें तथा श्रीहरिप्रियाजी नासिका की और शशि शोभनाजी दोनों भृकुटियोंकी रक्षा करें।।९।।

ओष्ठं पातु कृपा देवी अधरं गोपिका तथा।
वृषभानुसुता दंतांश्चिबुकं गोपनन्दिनी।।११।।
चन्द्रावली पातु गण्डं जिह्वां कृष्ण–प्रिया तथा।
कण्ठं पातु हरि–प्राणा हृदयं विजया तथा।।१२।।

श्रीकृपादेवी ऊपरके होठोंकी और गोपिकाजी नीचे के होठकी रक्षा करें, ऊपरके दाँतोंकी श्रीवृषभान–सुता और ठोडीकी श्रीगोपनन्दिनीजी रक्षा करें।।११।। कपोलों (गालों) की चन्द्रावलीजी रक्षा करें और श्रीकृष्णप्रियाजी जीभकी रक्षा करें। श्रीहरिप्रिया कंठकी और विजयाजी हृदय की रक्षा करें।।१२।।

बाहू द्वौ–चन्द्र–वदना उदरं श्रीदाम्नस्वसा।
कटियोगान्विता पातु पादौ सौभद्रिकातथा।।१३।।
नखांश्चन्द्रमुखी पातु गुल्फौ गोपालवल्लभा।
जानु देशं जया पातु गोपी पाद–तलं तथा।।१४।।

चन्द्रवदना दोनों भुजाओंकी, सुबलस्वसा पेटकी, योगान्विता कमरकी और सौभद्रिका दोनों पैरोंकी रक्षा करें।।१३।। चन्द्रमुखी नखोंकी, गोपालवल्लभा गुल्फों (टकनों) की जया घुटनोंकी और गोपी सभी ओरसे (मेरी) रक्षा करे।।१४।।

शुभ–प्रदा पातु पृष्ठं कक्षौ श्रीकान्तवल्लभा।
जानु–देशं जया पातु हरिणी पातु सर्वतः।।१५।।
वाक्यं वाणी सदा पातु धनागारं धनेश्वरी।
पूर्वां दिशं कृष्णरताकृष्णप्राणा च पश्चिमाम्।।१६।।

शुभप्रदा पीठकी, कुक्षियों की श्रीकान्तवल्लभा, जानुदेशकी जया, और हरिणी मेरी सभी ओरसे रक्षा करें।।१५।। वाणी वचनोंकी रक्षा करे, धनेश्वरी खजानेकी, कृष्ण–रतापूर्व दिशाकी और कृष्ण–प्राणा पश्चिम दिशाकी रक्षा करें।।१६।।

उत्तरां हरिता पातु दक्षिणी वृषभानुजा।
चन्द्रावली निशामेव दिवा श्वेतित–मेखला।।१७।।
सौभाग्यदा मध्य दिने सायाह्ने काम–रूपिणी।
रौद्री प्रातः पातु मां हि गोपिनी रजनी क्षये।।१८।।

उत्तर दिशाकी हरिता, दक्षिण दिशाकी वृषभानुजा रात्रिमें चन्द्रावली और श्वेतिता–मेखला दिनमें रक्षा करें।।१७।। मध्याह्न में सौभाग्यदा कामरूपिणी सायाह्नमें प्रातःकाल रौद्री और रात्रिके अवसान होनेपर गोपिनी हमारी रक्षा करें।।१८।।

हेतुदा सङ्गवे पातु केतुमाला दिवार्धिके।
शेषाऽपराह्न समये शमिता सर्वसंधिषु।।१९।।
योगिनी भोग–समये रतौ रति–प्रदा सदा।
कामेशी कौतुकीनित्यं योगे रत्नावलीमम।।२०।।

संगवमें हेतुदा,–दिन वृद्धिके अवसरमें केतुमाला, अपराह्न समय शेषा और सम्पूर्ण संधियों में शमिता रक्षा करे।।१९।। उपभोगके समय योगिनी, रतिप्रदा रतिके समय, योगके समयमें रत्नावली और कामेशी एवं कौतुकी नित्यप्रति मेरी रक्षा करे।।२०।।

सर्वदा सर्व कार्येषु राधिका कृष्ण–मानसा।
इत्येतत्कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम्।।२१।।
सर्व–रक्षा करं नाम महारक्षा करं परम्।
प्रातर्मध्याह्न–समये सायाह्ने प्रपठेद्यदि।।२२।।

कृष्णमानसा श्रीराधिकाजी सदा सर्वदा सब कामोंमें मेरी रक्षा करें। जिन स्थलोंके नामोंकी चर्चा नहीं की गई है उन सबकी श्रीललिताजी रक्षा करें। हे देवि! यह अद्भुत कवच हमने तुम्हें सुना दिया।।२१।। इसका नाम है सर्व रक्षा कारक, यदि इसे कोई प्रातः मध्याह्न और सायंकाल पढ़ता है तो इससे बड़ी भारी रक्षा हो जाती है।।२२।।

सर्वार्थ–सिद्धिस्तस्य स्यात् यद्यन्मनसि वर्तते।
राज–द्वारे सभायां च संग्रामे शत्रु संकटे।।२३।।
प्राणार्थनाशसमये यः पठेत्प्रयतो नरः।
तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि न भयं विद्यते क्वचित्।।२४।।

श्रीराधाकवचके पढ़नेसे उस साधकके मनमें जैसी कामना हो वैसी ही सिद्धि हो जाती है। राजद्वार, सभा, संग्राम और शत्रुओं द्वारा पहुँचाये हुए संकटके समय, प्राण और धन विनष्ट होने के समय यदि मनुष्य यत्नसे इसका पाठ करे तो हे देवि! उसका कार्यसिद्ध हो जाता है और उसको कहीं भी भय नहीं रहता।।२३-२४।।

आराधिता राधिका च तेन सत्यं न संशयः।
गंगास्नानाद्धरेर्नामग्रहणाद्यत्फलं लभेत्।।२५।।
तत्फलं तस्य भवति यः पठेत्प्रयतः शुचिः।
हरिद्रारोचनाचन्द्रामण्डितः हरि चन्दनम्।।२६।।
कृत्वा लिखित्वा भुजे च धारयेत् मस्तके भुजे।
कण्ठे वा देवदेवेशि स हरिर्नात्र संशयः।।२७।।

सचमुच उसने श्रीराधिकाजीकी आराधना कर ली, गंगास्नान और भगवान्के

नाम स्मरणसे जो फल होता है, निस्संदेह वही फल इस कवचके पढ़नेवालेको मिल जाता है। हलदी गोरोचन चन्दनसे भोजपत्रपर इस कवचको लिखकर जो कोई मस्तक भुजा या कण्ठमें बाँध ले तो हे देवदेवेशि! वह हरिके समान हो जाता है।।२५-२७।।

कवचस्य प्रसादेन ब्रह्मा सृष्टिं स्थितिं हरिः।
संहारं चाहं नियतं करोमि कुरुते तथा।।२८।।
वैष्णवाय विशुद्धाय विरागगुणशालिने।
दद्यात् कवचमव्यग्रमनन्यं धर्ममाप्नुयात्।।२९।।

ब्रह्माजी इस कवचके प्रसाद से सृष्टि रचते है और विष्णु पालन करते हैं। और मै (शंकर) इसी कवच के उसी प्रसादसे सृष्टिका संहार करता हूँ।।२८।। यह कवच उन्ही विशुद्ध वैष्णवोंको देना चाहिये, जिनमे वैराग्य आदि गुण हो और जिसकी बुद्धि व्यग्र न हो। नही तो अनाधिकारी को देनेवाला स्वयं नष्ट हो जाता है, इसमे किसी प्रकारका संदेह नही करना चाहिए।।२९।।

श्रीनारदपंचरात्र ज्ञानामृतसारोक्त श्रीराधा-कवच की भाषाटीका सम्पूर्ण हुई।

॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥

॥ श्रीराधिकानाम गुणगान ॥

'रा'शब्दोच्चारणाद् भक्तो भक्तिं मुक्तिं च राति सः।
'धा' शब्दोच्चारणेनैव धावत्येव हरेः पदम्॥

भक्त 'रा' शब्दका उच्चारण करते ही भक्ति और मुक्ति तथा 'धा' शब्दके उच्चारण से हरिपद-दास्यरतिकी प्राप्ति करता है।

'रा' इत्यादानवचनो 'धा' च निर्वाणवाचकः।
यतोऽवाप्नोति मुक्तिं च सा च राधा प्रकीर्तिता॥

रा शब्दका अर्थ है पाना और 'धा' का अर्थ है निर्वाण-मोक्ष। भक्त-जन उनसे निर्वाण, मुक्ति प्राप्त करता है, इसलिय उन्हे 'राधा' कहा गया है।

रेफो हि कोटिजन्माघं कर्मभोगं शुभाशुभम्।
आकाराद् गर्भवासं च मृत्युं च रोगमुत्सृजेत्॥१॥
धकार आयुषो हानिमाकारो भवबन्धनम्।
श्रवणस्मरणोक्तिभ्यः प्रणश्यन्ति न संशयः॥२॥

'राधा' नामके पहले अक्षर 'र' का उच्चारण करते ही करोडो जन्मो के संचित पाप और शुभ–अशुभ कर्मोंके भोग नष्ट हो जाते हैं। आकार (ा) के उच्चारणसे गर्भवास (जन्म) मृत्यु और रोग आदि छूट जाते हैं। 'ध' के उच्चारण से आयुकी वृद्धि होती है और आकार के उच्चारण से जीव भवबन्धनसे मुक्त हो जाता है। इसप्रकार राधा नामके श्रवण स्मरण और उच्चारण से कर्मभोग, गर्भवास और भवबन्धनादि एक ही साथ नष्ट हो जाते हैं–इसमें कोई संदेह नही।

रेफो हि निश्चलां भक्तिं दास्यं कृष्णपदाम्बुजे।
सर्वेप्सितं सदानन्दं सर्वसिद्धौघमीश्वरम् ॥१॥
धकारः सहवासं च तत्तुल्यकालमेव च।
ददाति सार्ष्टिसारूप्यं तत्त्वज्ञानं हरे समम् ॥२॥
आकारस्तेजसां राशिं दानशक्तिं हरे यथा।
योगशक्तिं योगमतिं सर्वकालं हरिस्मृतिम् ॥३॥
श्रुत्युक्तिस्मरणयोगान्मोहजालं च किल्बिषम्।
रोगशोकयमामृत्यु वेपन्ते नात्र संशयः ॥४॥

'राधा' नामके अन्तर्गत राकारके उच्चारणसे मनुष्य श्रीकृष्णचरण कमलमें निश्चल भक्ति और भगवान्के दासत्वको प्राप्त करके समस्त अभिलषित पदार्थ, सदानन्द और समस्त सिद्धियो की खान ईश्वर की प्राप्ति करता है तथा धकारका उच्चारण उसे सार्ष्टि सारूप्य भगवान्के स्वरूपका तत्वज्ञान और समानकाल उनके साथ रहनेकी स्थिति प्रदान करता है। आकारका उच्चारण करने पर शिवके समान औढरदानीपन तेजोराशि योगशक्ति योगमे मति और सर्वकालमे श्रीहरिकी स्मृति प्राप्त होती है। इस प्रकार 'राधा' नामके श्रवण, उच्चारण, स्मरण और संयोगसे मोहजाल तथा पापराशिका नाश हो जाता है और रोग, शोक, मृत्यु तथा यमराज उसके भयसे कांपने लग जाते हैं।

भगवान् श्रीकृष्णने श्री शिवजीसे कहा है–

सकृदावां प्रपन्नो वा मत्प्रियामेकिकां सुत।
सेवतेऽनन्यभावेन स मामेति न संशयः ॥१॥
यो मामेव प्रपन्नश्च मत्प्रियां न महेश्वर।
न कदापि स चाप्नोति मामेवं ते मयोदितम् ॥२॥
सकृदेव प्रपन्नो यस्तवास्मीति वदेदपि।
साधनेन विनाप्येव मामाप्नोति न संशयः ॥३॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन मत्प्रियां शरणं व्रजेत्।
आश्रित्य मत्प्रियां रुद्र मां वशीकर्तुमर्हसि ॥४॥
इदं रहस्यं परमं मया ते परिकीर्तितम्।

(पद्म पु. ८२/८३-८७)

''वत्स! जो व्यक्ति केवल एक बार हम दोनोंकी शरणमें आकर अथवा एकमात्र मेरी प्रिया (श्रीराधा) की ही शरण में आकर उसकी अनन्य भावसे सेवा करता है, वह निस्संदेह मुझको प्राप्त होता है। महेश्वर! इसके विपरीत जो केवल मेरी शरणमें आ गया है, पर मेरी प्रियाकी शरण में नहीं आया, वह मुझको कभी प्राप्त नहीं होगा। यह मैं सत्य कहता हूँ। जो व्यक्ति एक बार भी हम लोगों के शरण आकर ''मैं तुम लोगोंका हूँ'' यों कह देता है। वह बिना ही साधन मुझको प्राप्त होता है-इसमें कोई सन्देह नहीं है, अतएव सब प्रकारसे प्रयत्न करके मेरी प्रियतमा राधाकी शरण ग्रहण करे। हे रुद्र! यदि मुझे वशमें करना चाहते हो तो मेरी प्रियतमा (राधा) का आश्रय ग्रहण करे। मैंने आपसे यह परम रहस्यकी बात कही है। आपभी इसे प्रयत्नपूर्वक गुप्त ही रखियेगा।

येयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धि-
देहश्चैकः क्रीडनार्थं द्विधाभूत्।
देहो यथा छायया शोभमानः॥
शृण्वन् पठन् याति तद्धाम शुद्धम्॥

'जो ये राधा और जो ये कृष्ण आनन्दरसके सागर है, वे एक ही लीला करने के लिये दो रूप बने है। जैसे छाया से देह शोभित होती है, उसी प्रकार श्री राधासे श्रीकृष्ण शोभायमान है। इनके चरित्र पढने-सुनने से जीव इनके शुद्ध परम- धामको प्राप्त होता है।

त्वं मे प्राणाधिका राधे तव प्राणाधिकोऽप्यहम्।
न किंचिदावयोर्भिन्नमेकाङ्गं सर्वं दैव हि॥

भगवान् श्रीकृष्णने कहा है-हे राधे! तुम मेरी प्राणाधिका हो, मैं भी तुम्हारा प्राणाधिक हूँ। हम दोनोंमें कुछ भेद नहीं है, हम सदा ही एक है।

यथा ब्रह्मस्वरूपश्च श्रीकृष्णः प्रकृतेः परः।
तथा ब्रह्मस्वरूपा च निर्लिप्ता प्रकृतेः परः॥

'जैसे श्रीकृष्ण विकाररूपी प्रकृतिसे परे ब्रह्मस्वरूप है, वैसे ही श्रीराधाजी प्रकृति से परे निर्लिप्त ब्रह्मस्वरूपा है।' भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है-

ये राधिकायां मयि केशवे हरौ
कुर्वन्ति भेदं कुधियो जना भुवि।
ते कालसूत्रे प्रपतन्ति दुःखिता
रम्भोरु यावत् किल चन्द्रभास्करौ॥

'इस पृथ्वीपर जो कुबुद्धि मानव राधिकामें और मुझ केशवमें-हरिमें भेद-बुद्धि करते हैं, वे जबतक चन्द्र-सूर्यका अस्तित्व है तब तक काल-सूत्र नामक नरकमें पड़े हुए दुःख भोगते रहते हैं।'

श्री महादेवजीके प्रति स्वयं भगवान् के वचन है-

इमां तु मत्प्रियां विद्धि राधिकां परदेवताम्।
अस्याश्च परितः पश्चात् सख्यः शतसहस्रशः॥
नित्याः सर्वा इमा रुद्र यथाहं नित्यविग्रहः।
सखायः पितरो गोपा गावो वृन्दावनं मम॥
सर्वमेतन्नित्यमेव चिदानन्दरसात्मकम्।
इदमानन्दकन्दाख्यं विद्धि वृन्दावनं मम॥
सर्वमेतन्नित्यमेव चिदानन्दं रसात्मकम्।
इदमानन्दकन्दाख्यं विद्धि वृन्दावनं मम॥

'ये राधिकाजी मेरी प्रिया है–इन्हें परमदेवता समझिये। इनके चारों ओर और पीछे लाखों-सखियाँ हैं, जैसे मैं नित्य–विग्रह हूँ इसी प्रकार ये सब भी नित्य है। मेरे पिता, माता, सखा, गोप, गौ और यह मेरा वृन्दावन सभी नित्य और सच्चिदानन्द रसमय है। मेरे इस वृन्दावनका नाम आनन्दकन्द जानो।'

वृन्दावने नित्यनिकुञ्जमध्ये
कदम्ब - जम्बू - विटपान्तराले।
सार्धं मुकुन्देन विराजमानं
स्मरामि राधापदकंजयुग्मम्॥

(पद्म पाताल. ५१/७३-७५)

'मैं उन श्रीराधाजी के पादपद्म युगलका स्मरणकरता हूँ जो वृन्दावनमें कदम्ब और जम्बू वृक्षों के मध्य भगवान श्रीकृष्णके साथ निकुञ्जवन मे विराजमान रहती है।'

श्यामे रमारमणसुन्दरतावरिष्ठ
सौन्दर्यमोहित समस्तजगज्जनस्य।
श्यामस्य वामभुजबद्धतनुं कदाहं
त्वामिन्दिराविरलरूपभरां भजामि॥

'श्यामाजू! आपकी सौन्दर्यराशि भगवान् नारायणकी अर्धाङ्गिनी श्रीरमादेवी मे भी नही पायी जाती, आपके प्रियतम श्यामसुन्दर भी अपने उस सौन्दर्यके द्वारा, जो भगवान् लक्ष्मीकान्तके अंगसौष्ठवसे भी श्रेष्ठ है, जगतके समस्त जीवों को मोहित किए लेते है। मेरा वैसा सौभाग्य कब होगा, जब मैं आपके श्री विग्रहको अपने प्रियतमकी वाम भुजासे आवेष्टित देखूँगा?'

।। इतिश्री राधिका नाम गुणगान ।।

* * *

।। श्री गोपिका भावाभिव्यक्ति ।।

मैंने रटना लगाई रे राधा नाम की ।
मेरी पलकों में राधा, मेरी अलकों मे राधा ।
मैंने माँग भराई रे राधा नाम की ।। मैंने....
मेरे नैनों में राधा, मेरे बैनों मे राधा ।
मैंने बेनी गुथाई रे राधा नाम की ।। मैंने....
मेरी चुनरी में राधा, मेरी चुनरी मे राधा ।
मैंने नथनी सजाई रे राधा नाम की ।। मैंने....
मेरे चलने मे राधा, मेरे हसने मे राधा ।
कटि किंकणी बजाई रे राधा नाम की ।। मैंने....
मेरे दांये बाये राधा, मेरे आगे पीछे राधा ।
रोम रोम रस छाई रे राधा नाम की ।। मैंने....
मेरे अंग अंग राधा, मेरे संग-संग राधा ।
'गोपाल' बंशी बजाई रे राधा नाम की ।। मैंने....

।। श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ।।

।। श्रीराधागुणगान ।।

'रा' शब्दंकुर्वतस्त्रस्तो ददामि भक्तिमुत्तमाम् ।
'धा' शब्दं कुर्वतः पश्चाद् यामि श्रवणलोभतः ।।

भगवान् श्रीकृष्ण कहते है कि, जिस समय मै किसीके मुखसे 'रा' सुन लेता हूँ, उसी समय उसे अपनी उत्तममक्ति प्रेम देता हूँ और 'धा' शब्द उच्चारण करने पर तो मैं प्रियतमा श्रीराधाका नाम श्रवण करनेके लोभसे उसके पीछे-पीछे चलता हूँ।

'रा' शब्दोच्चारणादेव स्फीतो भवति माधवः ।
'धा' शब्दोच्चारणात् पश्चाद्धावत्येव ससंभ्रमः ।।

'रा' शब्दका उच्चारण करनेपर उसे सुनते ही माधव हर्षसे फूल जाते है और 'धा' शब्द उच्चारण करने पर बड़े सत्कारके साथ उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगते है।

'रा' शब्दोच्चारणाद्भक्तो याति मुक्तिं सुदुर्लभाम् ।
'धा' शब्दोच्चारणाद् दुर्गे धावत्येव हरेः पदम् ।।

'रा' शब्दके उच्चारणसे भक्त परम दुर्लभ मुक्ति पद को प्राप्त होता है। और धा शब्दके उच्चारणसे निश्चय ही दौड़कर श्रीहरिके धाममें पहुँच जाता है।

राधा भजति श्रीकृष्णं स च तां च परस्परम्।
उभयोः सर्वसाम्यं च सदा सन्तो वदन्ति च॥

राधा श्रीकृष्णकी आराधना करती है और श्रीकृष्ण राधाकी। वे दोनों परस्पर आराध्य-आराधक हैं। संत कहते हैं कि उनमें सभी दृष्टियों में पूर्ण समता है।

कृष्णप्राणाधिदेवी सा तदधीनो विभुर्यतः।
रासेश्वरी तस्य नित्यं तयाहीनो न तिष्ठति॥
राध्नोति सकलान् कामांस्तस्माद् राधेति कीर्तिता॥

देवी भागवत ९/५०-१८

"ये श्रीराधा भगवान् श्रीकृष्णके प्राणों की अधिष्ठात्री देवी हैं। इसलिए भगवान् इनके आधीन रहते हैं। ये भगवान के रासकी नित्य अधीश्वरी है। इन श्रीराधाके बिना भगवान् क्षण भर भी नहीं ठहर सकते हैं। ये सम्पूर्ण कामनाओं को सिद्ध करती है। इसी कारण इन देवीका नाम श्री 'राधा' कहा गया है। (इनकी पूजा अनिवार्य है)।"

त्वत्पादाब्जे मम मनोऽलिः सततं भ्रमतु प्रभो।
पातु भक्तिरसं पद्मे मधुपश्च यथा मधु॥
मदीय प्राणनाथस्त्वं भवजन्मनि जन्मनि।
त्वदीयचरणाम्भोजे देहि भक्तिं सुदुर्लभाम्॥
तव स्मृतौ गुणेषित्तं स्वप्ने ज्ञाने दिवानिशम्।
भवेन्निमग्नं सततमेतन्मम मनीषितम्॥

प्रभो! तुम्हारे चरण-सरोजमें मेरा मनरूपी भ्रमर निरन्तर भ्रमण करता रहे और जैसे वह मधुप कमलका मधुपान करता है वैसे ही यह प्रेमरस पान करता रहे। जन्म-जन्ममें तुम्ही मेरे प्राणनाथ होओ और मुझे अपने पद-पङ्कज में सुदुर्लभ प्रेमभक्ति प्रदान करो। प्रभो! मेरे मनकी यही एकमात्र चाह है। मेरा चित्त स्वप्न और जागरण सभी अवस्थाओं में दिन रात केवल तुम्हारी ही स्मृति और गुणों में डूबा रहे।

यज्जापः सकृदेव गोकुलपतेराकर्षकस्तत्क्षणा-
द्यत्र प्रेमवतां समस्तपुरुषार्थेषु स्फुरेत्तुच्छता।
यन्नामांकितमन्त्रजापनपरः प्रीत्या स्वयं माधवः
श्रीकृष्णोपि तदद्भुतं स्फुरतु मे राधेतिवर्णद्वयम्॥

एक बार भी जिसका किया हुआ जप गोकुलेन्द्र श्रीकृष्णको उसी क्षण आकर्षण कर वश करनेवाला होता है, जिसमें प्रेम करनेवालो को अखिल चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति करता हुआ तुच्छ प्रतीत होता है, कान्त श्री लालजी भी प्रीतिपूर्वक जिस नामसे अंकितमन्त्रका तत्परतासे जप करते हैं, "राधा" ऐसा वह अक्षर-युगल अनुपम नाम मेरे

हृदयमे स्फुरित हो।

रे चित्त चिन्तय चिरं वृषभानुपुत्रीं
नो विस्मर क्षणमपीति ममाभिलाषः।
राधेति नामजप भो रसने ममाङ्ग
राधा वने वस तदङ्घ्रिरजोऽभिलिप्तम्॥

अरे मेरे चित्त! तू सदा वृषभानुनन्दिनी श्रीराधाका ही चिन्तन किया कर, उन्हे एक क्षण के लिये भी कभी न भूल—यह मेरी अभिलाषा है। हे रसने! तू राधा इस सरस—मधुर नामका जप करती रह तथा हे देह! तू श्री राधाकी परमपावन चरण रजसे लिप्त होकर, इस श्रीराधा वन (वृन्दावन) मे सदा वास किया कर।

मनसि वचसि नित्यं यस्य कारुण्यरूपा
अहह वसति राधा बाधिताशेषबाधा।
यजनभजनविधायोगतीर्थव्रतानि
चरणरजसि तस्य द्वारदेशे लुठन्ति

समस्त बाधाओंको दूर करनेवाली करुणामयी श्रीराधा जिसके मन और वाणी मे सदा निवास करती है, अहाहा! उसके द्वारपर यज्ञ, भजन, उपासना, योग, तीर्थ और व्रत आदि सभी आकर उसकी चरण—रजमे लोटते है।

राधाकरावचितपल्लववल्लरीके-
राधापदाङ्क विलसन्मधुरस्थलीके।
राधा यशोमुखरमत्तखगावलीके-
राधाविहार विपिने रमतां मनो मे॥

श्रीराधाजीके करकमलो द्वारा संस्पृष्ट पल्लववाली लताओंसे अलकृत श्रीराधाजीके चरणकमलो के चिह्नो से शोभायमान मनोहर स्थलियो से मण्डित एव श्रीराधाके कीर्तिगान से चहचहाते प्रसन्नचित मतवाले पक्षिसमूह से राजित श्रीराधाजी के ऐसे उपयुक्त विहारवन श्रीवृन्दावन मे मेरा मन निरंतर रमण करे।

हे राधे वृषभानभूपतनये हे पूर्णचन्द्राननजे।
हे कान्ते कमनीयकोकिलरवेवृन्दावनाधीश्वरी॥
हे मत्प्राणपरायणे च रसिके हे सर्व यूथेश्वरी।
आगत्य त्वरितं त्वमत्रमनिशं मां धीजमानन्दय॥
हे राधे वृषभानभूपतनये सर्वेश्वरी राधिके।
हे कृष्णाननपंकजभ्रमरिके कृष्णप्रिये माधवी॥
हे वृन्दावननागरी गुणगुरौ दामोदरप्रेयसी।
हे श्री श्रीललितादिसख्यखिलसखियाजिके पाहिमाम्॥

स्वामिनि श्रीराधिकाजी से प्रार्थना

इक कोर कृपा की कर दो, स्वामिनि श्री राधे ।
दासी की झोली भर दो, स्वामिनि श्री राधे ।
मैं तो राधा राधा सदा ही रटूँ ।
कभी द्वारे से लाड़ली के न हटूँ ।
मेरे शीश कमल पग धर दो, स्वामिनि श्री राधे ।
दासी की झोली भर दो, स्वामिनि श्री राधे ।। इक....
मेरी आस न टूटने पाये कभी ।
इस तन से प्राण न जाये जभी ।
मुझे निज दर्शन का वर दो, स्वामिनि श्री राधे ।
दासी की झोली भर दो, स्वामिनि श्री राधे ।। इक.....
मुझे प्रीति की रीति सिखा दीजै ।
निज नाम का मन्त्र बता दीजै ।
कृष्णा की व्यथा सब हर दो, स्वामिनि श्री राधे ।
दासी की झोली भर दो, स्वामिनि श्री राधे ।। इक.....

* * *

देखौ री, यह नन्द का छेरा

देखौ री, यह नन्द का छेरा बरछी मारे जाता है ।
बरछी-सी तिरछी चितवन की पैनी छुरी चलाता है।।
हम को पायल देख बेदरदी मंद-मंद मुसकाता है।
ललित किशोरी जख्म जिगर पर नौनपुरी बुरकाता है।।

श्री ललित किशोर जी

एक गोपी दूसरी से कहती है कि 'हे सुन्दरी मैं तुम्हारे शील स्वभाव से वशीभूत होकर तुम्हारे हित की एक बात कहती हूँ कि तुम यमुना पर मत जाना, यदि जाना ही पड़े तो कदम्ब-वन की ओर तो जाना ही मत, क्योंकि वहाँ कोई एक ऐसी अद्भुत से भी अद्भुत निर्मल से भी निर्मल उज्जवल से भी उज्जवल अर्धकार राशी है जो तनिक भी नेत्र के केवल एक ही कोने में लग गई हो तो हे कमल नयनी! फिर तुझे अपने पति का घर नहीं सूझेगा ।'

।।श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः।।

॥ श्रीराधानमस्कारस्तोत्रम् ॥

श्रीनारायण उवाच

नमस्ते परमेशानि रासमण्डलवासिनि।
रासेश्वरि नमस्तेऽस्तु कृष्णप्राणाधिके प्रिये ।।१।।

भगवान् नारायण कहते हैं–भगवती परमेशानि! तुम रासमण्डलमें विराजमान रहती हो! तुम्हें नमस्कार है। रासेश्वरि! भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय मानते हैं। तुम्हें नमस्कार है।

नमस्त्रैलोक्यजननि प्रसीद करुणार्णवे।
ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्देवैर्वन्द्यमानपदाम्बुजे।।२।।

करुणार्णवे! तुम त्रिलोकी की जननी हो, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम मुझपर प्रसन्न होने की कृपा करो! ब्रह्मा, विष्णु आदि समस्त देवता तुम्हारे चरण कमलों की उपासना करते हैं।

नमः सरस्वतीरूपे नमः सावित्रि शङ्करि।
गङ्गे पद्मावतीरूपे षष्ठिमङ्गलचण्डिके।।३।।

जगदम्बा! तुम सरस्वती, सावित्री, शंकरी गंगा, पद्मावती, षष्ठी और मंगल चंडिका इन रूपों में विराजमान हो। तुम्हें नमस्कार है।

नमस्ते तुलसीरूपे नमो लक्ष्मीस्वरूपिणि।
नमो दुर्गे भगवति नमस्ते सर्वरूपिणि।।४।।

तुलसी रूपे! तुम्हें नमस्कार है। लक्ष्मीस्वरूपिणी! तुम्हें नमस्कार है। भगवती दुर्गे! तुम्हें नमस्कार है। सर्वरूपिणि! तुम्हें नमस्कार है।

मूलप्रकृतिरूपां त्वां भजामः करुणार्णवाम्।
संसारसागरादस्मानुद्धराम्ब दयां कुरु।।५।।

जननी! तुम मूलप्रकृति स्वरूपा एवं करुणाकी सागर हो। हम तुम्हारी उपासना करते हैं, अतः तुम इस संसार–सागरसे उद्धार करनेकी कृपा करो।

इदं स्तोत्रं त्रिसंध्यं यः पठेद् राधां स्मरन्नरः।
न तस्य दुर्लभं किञ्चित् कदाचिन्न भविष्यति।।६।।

जो पुरुष त्रिकालसन्ध्याके समय भगवती राधाका स्मरण करते हुए इस स्तोत्र का पाठ करता है उसके लिये कभी कोईभी वस्तु किंचिन्मात्र भी दुर्लभ नहीं हो सकती।

देहान्ते च वसेन्नित्यं गोलोके रासमण्डले।
इदं रहस्यं परमं न वाख्येयं तु कस्यचित्।।७।।

देवी भागवत ९/५०/४६–५२।।

"आयु समाप्त होनेपर शरीरको त्यागकर वह बड़–भागी पुरुष गोलोकमें जाकर रासमण्डलमें निरंतर स्थान पाता है। यह परम रहस्य जिस–किसीके सामने नहीं कहना चाहिये"।। परमधन श्री राधाराम आधार ।।

श्रीराधाजीके सोलह नाम

राधा रासेश्वरी रासवासिनी रसिकेश्वरी।
कृष्ण प्राणाधिका कृष्णप्रिया कृष्णस्वरूपिणी।।१।।
कृष्णवामाङ्गसम्भूता परमानन्दरूपिणी।
कृष्णा वृन्दावनी वृन्दा वृन्दावनविनोदिनी।।२।।
चन्द्रावली चन्द्रकान्ता शरच्चन्द्रनिभानना।
नामान्येतानि साराणि तेषामभ्यन्तराणि च।।३।।

(ब्र. श्रीकृष्णजन्मखंड)

अर्थ–श्रीनारायणने कहा– राधा, रासेश्वरी, रासवासिनी, रसिकेश्वरी, कृष्णप्राणाधिका कृष्णप्रिया, कृष्णस्वरूपिणी, कृष्णवामाङ्गसम्भूता, परमानन्दरूपिणी, कृष्णा, वृन्दावनी, वृन्दा, वृन्दावनविनोदिनी, चन्द्रावली चन्द्रकान्ता और शरच्चन्द्रप्रभानना। ये सारभूत सोलह नाम उन सहस्र नामों के ही अन्तर्गत हैं।

श्रीराधाजी के अट्ठाईस नाम

राधा रासेश्वरी रम्या कृष्णामंत्राधिदेवता।
सर्वाद्या सर्ववन्द्या च वृन्दावनविहारिणी।।१।।
वृन्दाराध्या रमाशेषगोपीमण्डलपूजिता।
सत्या सत्यपरा सत्यभामा श्रीकृष्णवल्लभा।।२।।
वृषभानुसुता गोपी मूलप्रकृतिरीश्वरी।
गान्धर्वा राधिकाऽऽरम्या रुक्मिणी परमेश्वरी।।३।।
परात्परतरा पूर्णा पूर्णचन्द्रनिभानना।
भुक्तिमुक्तिप्रदा नित्यं भवव्याधिविनाशिनी।।४।।

(श्री राधोपनिषद् से)

अर्थ–१ राधा २ रासेश्वरी ३ रम्या ४ कृष्णमंत्राधिदेवता ५ सर्वाद्या, ६ सर्ववंद्या ७ वृन्दावन विहारिणी, ८ वृन्दाराध्या ९ रमा १० अशेषगोपीमण्डलपूजिता ११ सत्या १२

सत्यपरा १३ सत्यभामा १४ श्रीकृष्णवल्लभा १५ वृषभानुसुता १६ गोपी १७ मूलप्रकृति १८ ईश्वरी १९ गान्धर्वा २० राधिका २१ आरम्या २२ रुक्मिणी २३ परमेश्वरी २४ परात्परतरा २५ पूर्णा २६ पूर्णचन्द्रनिभानना २७ भुक्तिमुक्तिप्रदा तथा २८ भवव्याधिनाशिनी। इन अट्ठाईस नामोंका जो पाठ करते हैं वे जीवन्मुक्त हो जाते हैं। यों भगवान श्री ब्रह्माजी ने कहा है।

श्रीराधिकाजी के सैंतीस पवित्र नाम

राधा रासेश्वरी रम्या रामा च परमात्मनः।
रासोद्भवा कृष्णकान्ता कृष्णवक्षः स्थलस्थिता ।।१।।
कृष्णप्राणाधिदेवी च महाविष्णोः प्रसूरपि।
सर्वाद्या विष्णुमाया च सत्या नित्या सनातनी।।२।।
ब्रह्मस्वरूपा परमा निर्लिप्ता निर्गुणा परा।
वृन्दा वृन्दावनेशा च विरजातटवासिनी।।३।।
गोलोकवासिनी गोपी गोपीशा गोपमातृका।
सानन्दा परमानन्दा नन्दनन्दनकामिनी।।४।।
वृषभानुसुता शान्ता कान्ता पूर्णतमा च सा।
काम्या कलावतीकन्या तीर्थपूता सती शुभा।।५।।
सप्तत्रिंशच्च नामानि वेदोक्तानि शुभानि च।
सारभूतानि पुण्यानि सर्वनामसु नारद।।६।।
यः पठेत् संयतः शुद्धो विष्णुभक्तो जितेन्द्रियः।
इहैव निश्चलां लक्ष्मीं लब्ध्वा याति हरेः पदम्।।७।।
हरिभक्तिं हरेर्दास्यं लभते नात्र संशयः।।

(नारद पञ्चरात्र २/४/४८–५५)

अर्थ :– १ राधा २ रासेश्वरी ३ रम्या ४ परमात्मनोरमा ५ रासोद्भवा ६ कृष्णकान्ता ७ कृष्णवक्षःस्थलस्थिता ८ कृष्णप्राणाधिदेवी ९ महाविष्णो १० प्रसू ११ सर्वाद्या १२ विष्णुमाया १३ सत्या १४ नित्या १५ सनातनी १६ परमब्रह्मस्वरूपा १७ निर्लिप्ता १८ निर्गुणा १९ परा २० वृन्दा २१ वृन्दावनेशा २२ विरजातटवासिनी २३ गोलोकवासिनी २४ गोपी २५ गोपेश्वरी २६ गोपमातृका २७ सानन्दा २८ परमानन्दा २९ नन्दनन्दनकामिनी ३० वृषभानुसुता ३१ शान्ता ३२ कान्ता ३३ पूर्णतमा ३४ काम्या ३५ कलावतीकन्या ३६ तीर्थपूता ३७ सती और ३८ शुभा– ये सैंतीस अति उत्तम, पवित्र नाम हैं। नारद! सारे नामों की अपेक्षा अत्यन्त पवित्र और सब नामों में सारभूत ये नाम हैं। जो विष्णुभक्त जितेन्द्रिय पुरुष संयतचित्त होकर इनका पाठ करता है, वह इस लोकमें अचला लक्ष्मी को प्राप्त करके अन्तमें श्रीहरि के पद को प्राप्त होता है। उसे हरिभक्ति तथा हरि का दास्यभाव मिलता है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।

।। राधामुकुन्दयुगलं तदहं नमामि ।।

।। श्रीराधाजी का ध्यान ।।

श्वेतचम्पकवर्णाभां कोटिचन्द्रसमप्रभाम् ।
शरत्पार्वणचन्द्रास्यां शरत्पङ्कजलोचनाम् ।।१।।
सुश्रोणीं सुनितम्बां च पक्वबिम्बाधरां वराम् ।
मुक्तापङ्क्तिविनिन्दैकदन्तपङ्क्तिमनोहराम् ।।२।।
ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां भक्तानुग्रहकातराम् ।
वह्निशुद्धांशुकाधानां रत्नमालाविभूषिताम् ।।३।।
रत्नकेयूरवलयां रत्नमञ्जीर रञ्जिताम् ।
रत्नकुण्डलयुग्मेन विचित्रेण विराजिताम् ।।४।।
सूर्यप्रभाप्रतिकृति गण्डस्थलविराजिताम् ।
अमूल्यरत्ननिर्माण ग्रैवेयकविभूषिताम् ।।५।।
सद्रत्नसारनिर्माण किरीटमुकुटोज्ज्वलाम् ।
रत्नांगुलीयसंयुक्तां रत्नपाशकशोभिताम् ।।६।।
बिभ्रती कबरीभारं मालतीमाल्यभूषिताम ।
रूपाधिष्ठातृदेवीं च गजेन्द्रमन्दगामिनीम् ।।७।।
गोपीभिः सुप्रियाभिश्च सेवितां श्वेतचामरैः ।
कस्तूरी बिन्दुभिः सार्द्धमगन्धचन्दनबिन्दुना ।।८।।
सिन्दूरबिन्दुना चारु सीमन्ताधःस्थलोज्ज्वलाम् ।
रासे रासेश्वरयुतां राधां रासेश्वरीं भजे ।।९।।

(प्रकृति खण्ड ५५/१०–१५, १९)

श्रीराधा की अङ्गकान्ति श्वेतचम्पा के समान गौर है। वे अपने अङ्गों में करोड़ों चन्द्रमाओं के समान मनोहर कान्ति धारण करती है। उनका मुख शरदऋतु की पूर्णिमा के चन्द्रमा को लज्जित करता है। दोनों नेत्र शरत् काल के प्रफुल्ल कमलों की शोभा को छीने लेते है। उनके श्रोणि देश एवं नितम्बभाग बहुत ही सुन्दर है। अधर

पके हुए बिम्बफलकी लाली धारणकरते हैं। वे श्रेष्ठ सुन्दरी हैं। मुक्ता की पंक्तियों को तिरस्कृत करनेवाली दन्तपंक्ति उनके मुख की मनोहरता को बढ़ाती है। उनके बदन पर मन्द मुस्कान जनित प्रसन्नता खेलती रहती है। वे भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए व्याकुल रहती है। अग्निशुद्ध चिन्मय वस्त्र उनके श्रीअङ्गों को आच्छादित करते हैं। वे रत्नों के हार से विभूषित हैं। रत्नमय केयूर और कंगन धारण करती है। रत्नों के ही बने हुए मंजीर उनके पैरों की शोभा बढ़ाते हैं। रत्ननिर्मित विचित्र कुण्डल उनके दोनों कानों की श्रीवृद्धि करते है। सूर्यप्रभा की प्रतिमारूप कपोल–युगल से वे सुशोभित होती है। अमूल्य रत्नों के बने हुए कण्ठहार उनके ग्रीवाप्रदेश को विभूषित करते हैं। उत्तम रत्नों के सारतत्वों से निर्मित किरीट–मुकुट उनकी उज्जवलता को जाग्रत् किये रहते है। रत्नों की मुद्रिका और पाशक (चेन या पासा आदि) उनकी शोभा बढ़ाते है। वे मालती के पुष्पों और हारों से अलंकृत केशपाश धारण करती है। वे रूपकी अधिष्ठातृ देवी है और गजराज की भाँति मन्द गति से चलती हैं। जो उन्हें अत्यन्त प्यारी है, ऐसी गोप किशोरियाँ श्वेत चँवर लेकरउनकी सेवाकरती हैं। कस्तूरी की बेंदी, चन्दन के बिन्दु और सिन्दूर की टीकी से उनके मनोहर सीमन्त का निम्न भाग अत्यन्त उद्दीप्त दिखायी देता है। रास में रासेश्वर के सहित विराजित रासेश्वरी राधा का मैं भजन करता हूँ।

।। इति राधाध्यानम् ।।

श्री ठकुरजी से प्रार्थना

ब्रज धूरि ही प्रान सौ प्यारी लगै, ब्रजमंडल माहि बसाये रहो ।
रसिकों के समाज में मस्त रहूँ, जग जाल सौं मोहि बचाये रहो ।।
नितबाकी ए झाँकी निहारा करूँ, छवि छाक सौं नाथ छकाये रहो ।
अहो! बाके बिहारी यही बिनती, मेरे नैनों से नैना मिलाये रहो ।।

* * *

तिरछा है किरीट कसे उर में, तिरछा बनमाल पड़ा रहता है
तिरछी कटि काछनी है, जिसमें, सुख–सिन्धु सदा उमड़ा रहता है ।।
तिरछे पद कंज कदम्ब तरे, तिरछे दृग तान खड़ा रहता है ।
किस भाँति निकाले कहो दिल से, तिरछा घनश्याम अड़ा रहता है ।

– कृष्णकर्णामृतम् ।

।। श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ।।

।। श्रीब्रह्माण्ड पुराणोक्त श्रीराधा स्तोत्रम् ।।

मङ्गलाचरण

राधा पुरः स्फुरति पश्चिमतश्च राधा
राधाधिसव्यमिह दक्षिणतश्च राधा।
राधा खलु क्षितितले गगने च राधा
राधामयी मम बभूव कुतस्त्रिलोकी ।।

श्रीनारद उवाच

किं तद् गुह्यतरं ब्रह्मन् · वर्णितन्त्वमखिलेश्वरैः।
तन्मे ब्रूहि सुतत्पक्षा योगेशामयी वत्सल ॥१॥

ब्रह्मोवाच

शृणु गुह्यतमं तात नारायण मुखाच्छ्रुतम्।
सर्वै सम्पूजिता देवै राधावृन्दावने वने ॥२॥
राधा विश्लेषतः कृष्णह्येकदा प्रेमविह्वलः।
राधा मन्त्रं जपन् ध्यायन् राधां सर्वत्र पश्यति ॥३॥
ॐ अस्य श्रीराधास्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा
ऋषिरनुष्टुप छन्दः श्रीराधाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥४॥

श्रीकृष्णोवाच

गृहे राधा वने राधा पृष्ठे राधा पुरः स्थिता।
यत्र यत्र स्थिता राधा राधैवाराध्यते मया ॥१॥
जिह्वा राधा श्रुतौराधा नेत्रेराधा हृदिस्थिता।
सर्वांगव्यापिनी राधा राधैवाराध्यते मया ॥२॥
पूजा राधा जपे राधा राधिका चाभिवन्दने।
स्मृतौ राधा शिरोराधा राधैवाराध्यते मया ॥३॥

गाने राधा गुणे राधा राधिका भोजनेगतौ।
रात्रौ राधा दिवाराधा राधैवाराध्यते मया ॥४॥
माधुर्ये मधुराराधा महत्त्वे राधिका गुरुः।
सौन्दर्ये सुन्दरी राधा राधैवाराध्यते मया ॥५॥
राधा पद्मानना पद्मा पद्मोद्भव समुद्भवा।
पद्मे विवेदिता राधा राधैवाराध्यते मया ॥६॥
राधाकृष्णात्मिका नित्यं कृष्णोराधात्मकोध्रुवम्।
वृन्दावनेश्वरी राधा राधैवाराध्यते मया ॥७॥
जिह्वाग्रे राधिका नाम नेत्राग्रे राधिका तनुः।
कृष्णहार्दपरा राधा राधैवाराध्यते मया ॥८॥
कर्णाग्रे राधिका कीर्ति मनोऽग्रे राधिका तनुः।
कृष्णप्रेममयी राधा राधैवाराध्यते मया ॥९॥

* * *

॥ राधे कब तुम कृपा करोगी ॥

राधे कब तुम कृपा करोगी, ऊँचे बरसाने वारी ।
पतित जान ठुकराओ न राधे, अब तो अपनी कीजै ।
अबकी बार मोहे पार लगाओ, काहे कूँ देर लगाई ॥ऊँचे॥
जग है गहरा नाव पुरानी, बेग किनारे लगाओ ।
मल्लाह बनके आओ स्वामिनी, आकर पार लगाओ ॥ऊँचे॥
जन्म जन्म की भटकी मैं राधे, आई शरण तुम्हारी ।
कृपा दृष्टि अब मोपर कीजै, हे वृषभानु दुलारी ॥ऊँचे॥
कमल नयन शोभा की सागर, नैनों में बस जाओ ।
पल छिन तुमको कबहुँ न भूलूँ, प्रेम सुधारस पियाओ ॥ऊँचे॥
मेरी तो अभिलाष यही है, युगल चरण में राखो ।
वृन्दावन को बसिबो दीजै, रज में रज मिल जावै ॥ऊँचे॥

॥ श्री श्री राधिकायैनमः ॥

-: श्री राधिकाजी की प्राक्टय स्तुति :-

भई प्रकट कुमारी कीर्ति दुलारी, जन हितकारी भयहारी।
अतुलित छवि भारी मुनिमनहारी वृषभानुदुलारी सुकुमारी॥
सुन्दर सिंहासन तेहि पर आसन, कोटि हुतासन द्युतिकारी।
शिर छत्र विराजेसखिगण राजै निजनिज काजै करधारी॥
सुर सिद्ध सुजाना हनहिं निशाना चढ़े विमाना समुदाई।
बरषहिं बहुफूला मंगलमूला, श्यामा अनुकूला शुन गाई॥
देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े सुख बाढ़े उर-अधिकाई।
अस्तुति मुनि करहीं आनँदभरहीं पावन परहीं हरषाई॥
ऋषि नारद आये मन हरषाए अति सुखपाये नृपरानी।
राधा असनामा पूरनकामा सबसुखधामा गुणखानी॥
राधे सब मुनिराई विनय सुनाई समय सुहाई मृदुबानी।
लालनि तनु लिजै चरित सु किजै यह सुख दीजै नृप-रानी॥
सुनि मुनिवर बानी राधा मुसकानी लीलाठानी सुखदाई।
सोवत जनु जागी, रोवन लागी नृप बड़ भागी उर लाई॥
दम्पति अनुरागे प्रेम सुपागे तेहि सुख लागे मन भाई।
अस्तुति राधे केरी प्रेम लतेरी बरनि कुचेरी सिरनाई॥

दोहा

निज इच्छा वृष भूप के, प्रगट भई श्यामा आय।
चरित किये पावन परम बरधन मोद निकाय।

॥श्रीयुगलचरणकमलभ्यो नमः॥

श्री राधा जी की आरती एवं वन्दना

श्री राधिका वन्दन

व्रज राजकुमार वल्लभा कुलसीमन्तमणि प्रसीद मे।
परिवारगणस्य ते यथा पदवी मे न दवीयसी भवेत्॥

-: आरति श्री वृषभानुसुता की :-

आरति श्री वृषभानुसुता की।
मंजु मूर्ति मोहन-ममता की॥ टेक॥

त्रिविध तापयुत संसृति नाशिनी,
विमल विवेकविराग विकासिनी,
पावन प्रभु-पद-प्रीति प्रकाशिनी,
सुन्दरतम छवि सुन्दरता की॥ १॥

मुनि-मन-मोहन मोहन-मोहनि,
मधुर मनोहर मूरति सोहनि,
अविरलप्रेम-अमिय-रस दोहनि,,
प्रिय अतिसदा सखी ललिता की॥ २॥

संतत सेव्य संत-मुनि-जनकी,
आकर अमित दिव्यगुन-गन की,
आकर्षिणी कृष्ण-तन-मन की,
अति-अमूल्य सम्पति समता की॥३॥

कृष्णात्मिका, कृष्ण-सहचारिणि
चिन्मयवृन्दा-विपिन-विहारिणि,
जगज्जननि जग-दुःख निवारिणि,
आदि-अनादि शक्ति विभुताकी॥ ४॥

॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥

॥ आरती श्री गिरिवर धारी की ॥

गाओ सखि आरति, पिया और प्यारी की ।
भानु दुलारी की ।
गिरिवर धारी की ।।
गावो सखि आरति ।
कंचन थार कपूर सजाओ
धूपदीप और चंवर डुलाओ।
बलि बलि जाऊँ सखि, कुंज बिहारी की
।। भानु दुलारी की, गिरिवर धारी की ।।
बैठे सिंहासन दिये गलबाँही
रसिक जनन हिय बसत सदा ही ।
नयन लखो री छवि जुगल बिहारी की ।।
।। भानु दुलारी की, गिरिवर धारी की ।।
मोर मुकुट, कुण्डल वन माला
मुरली अधर-धर बैठे नन्दलाला ।।
ब्रज जीवन धन, हिय सुखकारी की ।।
।। भानु दुलारी की, गिरिवर धारी की ।।
शीश चन्द्रिका की छवि न्यारी
नील वसन तन सोहत सारी ।
ललित किशोरी राधे, बरसाने वारी की ।।
।। भानु दुलारी की, गिरिवर धारी की ।।

॥ श्रीराधा चालीसा ॥

दोहा

श्रीराधे वृषभानुजा, भक्तनि प्राणाधार।
वृन्दाविपिन विहारिणी, प्रणवों बारम्बार॥
जैसो तैसो रावरो, कृष्ण-प्रिया सुखधाम।
चरण शरण निज दीजिये, सुन्दरसुखद ललाम॥
राधिका कृष्णचन्द्र पद जय शरणम

जयहरि गोविन्द राधे गोविन्द, जयहरि गोविन्द राधे गोविन्द

- चौपाई -

जय वृषभान कुँवरि श्री श्यामा।
कीरति नंदिनि शोभा धामा॥
नित्य बिहारिनि श्याम अधारा।
अमित मोद मंगल दातारा॥
रास विलासिनि रस विस्तारिनि।
सहचरि सुभग सुख मन भावनि॥
नित्य किशोरी राधा गोरी।
श्याम प्राण धन अति प्रिय भोरी॥
करुणा सागर हियहिं उमंगिनि।
ललितादिक सखियन की संगिनि॥
दिनकर-कन्या कूल विहारिनि।
कृष्ण प्राण प्रिय हिय हुलसावनि॥
नित्य श्याम तुम्हरो सुध आवैं।
राधा राधा कहि हरषावैं॥
मुरली में नित नाम उचारैं।
तुव कारण लीला वपु धारैं॥
प्रेम स्वरूपिणि अति सुकुमारी।
श्याम प्रिया वृषभानु दुलारी॥
नवल किशोरी अति छवि धामा।
द्युति लघु लगै कोटि रति कामा॥
गौरांगी शशि निंदक वदना।
सुभग चपल अनियारे नयना॥

जावक युत युग पंकज चरणा।
नूपुर धुनि प्रीतम मन हरना॥
संतत सहचरि सेवा करहीं।
महा मोद मंगल मन भरहीं॥
रसिकन जीवन प्राण अधारा।
राधा नाम सकल सुख-सारा॥
अगम अगोचर नित्य- स्वरूपा।
ध्यान धरत निश दिन ब्रज-भूपा॥
उपजेउ जासु अंश गुण खानी।
कोटिन उमा रमा ब्रह्माणी॥
नित्य धाम गोलोक विहारिनि।
जन रक्षक दुःख दोष नसावनि॥
शिव अज मुनि सनकादिक नारद।
पार न पाँहि शेष अरु शारद॥
राधा शुभ गुण रूप उजारी।
निरखि प्रसन्न होत बनवारी॥
ब्रज जीवन धन राधा रानी।
महिमा अमित न जाय बखानी॥
प्रीतम संग देह गलबाँही।
बिहरत नित वृन्दावन माँही॥
राधा कृष्ण कृष्ण कहैं राधा।
एक रूप दोउ प्रीति अगाधा॥
श्री राधा मोहन मन हरनी।
जन सुख दायक प्रफुलित बदनी॥
कोटिक रूप धरे नँद नन्दा।
दर्श करन हित गोकुल चँदा॥
रास केलि करि तुम्हें रिझावें।
मान करौ जब अति दुःख पावें॥
प्रफुलित होत दर्श जब पावें।
विविध भाँति नित विनय सुनावें॥
वृन्दारण्य विहारिनि श्यामा।
नाम लेत पूरण सब कामा॥
कोटिन यज्ञ तपस्या करहू।
विविध नेम व्रत हिय में धरहू॥

तऊ न श्याम भक्तहिं अपनावें ।
जब लगि राधा नाम न गावें ॥
वृन्दाविपिन स्वामिनी राधा ।
लीला धाम अमित अगाधा ॥
स्वयं कृष्ण पावै नहिं पारा ।
और तुम्हें को जानन हारा ॥
श्री राधा रस प्रीति अभेदा ।
सादर गान करत नित वेदा ॥
राधा त्यागि कृष्ण को भजिहैं ।
ते सपनेहु जग जलधि न तरिहैं ॥
कीरति कुँवरि लाडिली राधा ।
सुमिरत सकल मिटहिं भव बाधा ॥
नाम अमंगल मूल नसावन ।
त्रिविधि-ताप-हर हरि मन भावन ॥
राधा नाम लेइ जो कोई ।
सहजहि दामोदर वस होई ॥
श्रीराधा नाम परम सुखदाई ।
भजतहिं कृपा करहि यदुराई ॥
वृषभानु नन्दन पीछे फिरिहैं ।
जो कोउ राधा नाम सुमिरिहैं ॥
रास विहारिनि श्यामा प्यारी ।
करहु कृपा बरसाने वारी ॥
वृन्दावन है शरण तिहारी ।
जय जय जय वृषभानु दुलारी ॥

दोहा

श्रीराधासर्वेश्वरी, रसिकेश्वर घनश्याम ।
देहु निरंतर वास मोहि, श्रीवृन्दावनधाम ॥

"राधिकाकृष्णचन्द्र पद जय शरणं ।
जय हरि गोविन्द राधे गोविन्द ।
जय हरि गोविन्द राधे गोविन्द" ॥

॥ श्रीवृन्दावनजी कवि कृत राधा चालीसा सम्पूर्ण ॥

परम धन राधा नाम आधार

-: श्रीराधाकृष्णयुगल कीर्तन :-

जय राधे जय राधे राधे,
जय राधे जय श्री राधे।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण,
जय कृष्ण जय श्री कृष्ण॥
श्यामा गोरी नित्य किशोरी,
प्रीतम जोरी श्री राधे।
रसिक रसीलो छैल छबीलो,
गुण गरवीलो श्रीकृष्ण॥
रासविहारिणि रस विस्तारिणि
पिय उरधारिणि श्रीराधे॥
नव नव रंगी नवलत्रिभंगी,
श्याम सुअंगी श्रीकृष्ण॥
प्राणपियारी रूपउजारी,
अति सुकुमारी श्री राधे॥
मैन मनोहर मदमोदकर,
सुन्दर वस्तर श्री कृष्ण॥
शोभाश्रेणी मोहामैनी,
कोकिलबैनी श्रीराधे।
कीरतिवन्ता कामिनिकन्ता,
श्री भगवन्ता श्रीकृष्ण॥
चन्द्रावदनि कुन्दारदनि,
शोभासदनि श्रीराधे।

परमउदारा प्रभाअपारा,
अतिसुकुमारा श्रीकृष्ण ॥
हंसागमनी राजतरमनी,,
क्रीडाकमनी श्रीराधे ।
रूपरसाला नैन विशाला,
परम कृपाला श्रीकृष्ण ॥
कञ्चन वेल्लि रतिरस रेल्लि,
अति अलबेली श्रीराधे ।
सब सुख सागर सब गुण आगर,
रूप उजागर श्रीकृष्ण ॥
रमणी रम्या तरुतरुतम्या,
गुण आगम्याश्रीराधे।
धामनिवासी प्रभा प्रकासी,
सहजसुहासी श्रीकृष्ण॥
शक्त्याह्लादिनिअतिप्रियवादिनि,
उर उन्मादिनी श्री राधे।
अंग अंग टोना सरस सलोना,
सुभग सुठोना श्रीकृष्ण॥
राधानामिनि गुण अभिरामिनि,
श्रीहरिः प्रियस्वामिनि श्रीराधे।
हरे हरे हरि हरे हरे हरि,
हरे हरे हरि श्री कृष्ण ॥

* * *

-: श्रीराधाष्टकम् :-

नैन मिलाकर मोहन सौं, वृषभानु लली मन में मुस्कानी ।
भौंह मरोर के दूसरी ओर, कछू वह घूंघट में शरमानी ॥
देखि निहाल भई सजनी, वह सूरतिया मन माँहि समानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिका रानी ॥१॥

खेलत खेलत कुन्जन में, वृषभानु लली तरू ओट छिपानी ।
ढूंढत ढूंढत गोप वधू, सबही अपने मन में अकुलानी ॥
नित्य विहार करे ब्रज में, वह लीला नहीं कछु जात न जानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिका रानी ॥२॥

पूनम की रजनी सजनी, यह चांदनी फैल रही है लुभानी ।
स्वच्छ बहे यमुना जलधार, नई कलियाँ वन में विकसानी ॥
रास कियो हरि के संग में, अखियाँ जिनकी भई प्रेम दिवानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिका रानी ॥३॥

शुद्ध करे तन को मन को, सखि प्रेम सरोवर को यह पानी ।
हमें करिके स्नान यहां, ब्रज की रज को निज शीश चढ़ानी ॥
वास मिले ब्रजमण्डल को, विनती हमको इतनी ही सुनानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिका रानी ॥४॥

हम बृज मण्डल के रसिया, नित प्रेम करें हरि सौं मनमानी ।
डोलत कुन्ज निकुन्जन में, गुन गान करे रस प्रेम कहानी ॥
जो मन मोहन संग रहे, वह भानु लली हमने पहचानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिका रानी ॥५॥

मस्त रहे अपने मन में, कबहूं नहि व्यापत लाभ न हानि ।
नाम जपे मन ही मन में, मनमोहन सौं नित प्रीत निभानी ॥

लोग बहु विधि के जग में, सब बोले भले कहके कटु बानी।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिका रानी ॥६॥

नाम महाधन है अपनो, नहिं दूसरी सम्पति और कमानी।
छोड़ अटारी अटा जग के, हमको कुटिया बृज मांहि छवानी॥
टूक मिले रसिको के सदा, अरू पीवन को यमुना को पानी।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिका रानी ॥७॥

वास करे बृज में फिर, दूसरे देशन की कहुं राह न जानी।
प्रेम समाय रह्यो हिय में, बनि है कबहूँन बिरागी न ज्ञानी॥
संग रहे रसिको के सदा, अरू बात करे रस ही रस सानि।
औरन की परवाह नहीं, अपनी ठकुराइन राधिका रानी ॥८॥

दोहा

वृन्दावन मे ही सदा, रहे तुम्हारे पास।
श्री राधारानी सदा मो मन करहु निवास॥
कुन्जन की सेवा मिले, मिटे जगत जंजाल।
कृपा सदा ही राखियो, राधा वल्लभ लाल॥

॥ श्रीराधा कृष्ण चरण कमलभ्यो अर्पितम् ॥

* * *

॥ चौराशगण्यं पुरुषं नमामि ॥

व्रजे प्रसिद्धं नवनीत् चोरम् ।
गोपाङ्गनानां च दुकूल चोरम् ॥
अनेक जन्मार्जित पाप चोरम् ।
चौराशगण्यं शिरसा नमामि ॥

श्री श्रीराधिकायै नमः

श्री श्रीराधारानी की चिन्मय गुणावली

१. वे माधुर्य की जीती-जागती प्रतिमा हैं।
२. वे नित्य-नूतन तरुणी हैं।
३. उनके नयन बड़े चंचल हैं।
४. उनकी मुस्कान अत्यन्त उज्ज्वल है।
५. उनकी दिव्य देह पर समस्त मंगलचिन्ह अंकित हैं।
६. वे अपने व्यक्तित्व की गन्धमात्र से ही श्री कृष्ण को सम्मोहित कर लेती हैं।
७. वे गायन कला में दक्षा हैं।
८. वे बहुत ही भली प्रकार से मीठी बोली बोलती हैं।
९. वे स्त्रियोचित आकर्षणों को प्रस्तुत करने में सुनिपुणा हैं।
१०. वे शालीना एवम् भद्रा हैं।
११. वे सदैव अतिशय अनुकम्पामयी हैं।
१२. वे अलौकिक कुटिला हैं।
१३. वे शृंगार कुशला हैं।
१४. वे सदैव लज्जायुक्ता हैं।
१५. वे सदैव मर्यादाशालिनी हैं।
१६. वे सदैव सहनशीला हैं।
१७ वे अति-गम्भीरा हैं।
१८. वे श्री कृष्ण के द्वारा भोग्या हैं।
१९. वे सदैव परम-विशुद्ध भक्ति के उच्चतम मंच पर स्थिता हैं।
२०. वे गोकुलवासियों के प्रेम की आधार स्थली हैं।
२१. वे सभी प्रकार के भक्तों को आश्रय प्रदान कर सकती हैं।
२२. वे उत्कृष्टों और निकृष्टों दोनों के प्रति वात्सल्यमयी हैं।
२३. वे अपनी सखियों-गोपिकाओं के स्नेह पूरित व्यवहारों से सदैव अनुग्रहीता हैं।
२४. वे श्री कृष्ण की सहेलियों-सखियों में सर्वाधिक महानतमा हैं।
२५. वे श्री कृष्ण को सदा-सर्वदा अपने नियंत्रण में रखती हैं।

(श्री चैतन्य महाप्रभु की शिक्षामृत, नामक पुस्तक से)

।। श्री श्री राधिकायै नमः ।।

आरती श्री कुञ्जबिहारी की

आरती श्री कुंजबिहारी की, श्री गिरधर कृष्णमुरारी की
गले में वैजयन्तीमाला, बजावे मुरली मधुर बाला
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला,
दिव्य छविरास विलासी की। ।।आरती।।

गगन सम अंग कांतिकाली, राधिका चमक रही आली
लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक,
चंद्र सी झलक, ललित छवि श्यामा प्यारी की। ।।आरती।।

कनकमय मोर मुकुट बिलसे, देवता दरसन को तरसे
गगन सों सुमन राशि बरसे, बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग
ग्वालिनी संग, अतुलरति गोपकुमारी की। ।।आरती।।

जहां से प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणी श्री गंगा,
स्मरणते होत मोह भंगा, बसी शिव शीश, जटा के बीच,
हरे अघ कीच, चरण छवि, श्री बनवारी की। ।।आरती।।

चमक रही यमुना तट रेणू, बाज रही वृन्दावन वेणू,
चहुं दिशि गोपी ग्वाल धेनू, हसत मृदु मन्द, चान्दनी चंद,
कटत भव फन्द, टेर सुन दीन भिखारी की। ।।आरती।।

-: स्तुति :-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव।
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

वसुदेव सुतं देवं कंसचाणूर मर्दनम्।

देवकी परमानंद कृष्णं वंदे जगद्गुरुम् ॥

एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो, दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः ।
दशाश्वमेधी पुनरेती जन्म कृष्ण प्रणामी न पुनर्भवाय ॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्त्र नाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ॥

गोपाल बालं भुवनैकपालं संसार माया मति मोह जालम् ।
यशोविशालं शिशुपाल कालं बालं मुकुन्दं शिरसा नमामि ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं ।
सदा वसंतं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवाम भागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

श्री राधेतू बड़ भागिनी कौन तपस्या कीन । तीन लोक तारण तरण सो तेरे आधीन ॥

मेरी भव बाधा हरो राधा नागरी सोय । जा तन की झाईं परे श्याम हरित दुति होय ॥

शीश मुकुट कटि काछिनी कर मुरली उर माल । यह बानिक मो मन बसो सदा बिहारीलाल ॥

सबसों हित निष्काम मति, श्री वृंदावन विश्राम । श्री राधावल्लभलाल को हृदय, ध्यान मुख नाम ॥

सब द्वारन को छाड़ि के आयो तेरे द्वार । अहो किशोरी लाडिली मेरी ओर निहार ॥

वंशी विभूषितकरान्नवनीरदाभात्पीताम्बरादरुण बिम्बफलाधरोष्ठात् ।
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादरविन्दनेत्रात् कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥

कृष्ण त्वदीय पद पंकज पंजरान्ते अद्यैव मे विशतु मानस राजहंस ।
प्राण प्रयाण समये कफवात पित्तैः कण्ठावरोधन विधौ स्मरणं कुतस्ते ॥

श्री राधा माधव चरण वन्दौ बारम्बार । एक तत्व दो तनु धरे नित रस पारावार ॥

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु र्देवो महेश्वरः । गुरु साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् । तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् । पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरं ॥

।। किशोरी राधे ।।

श्रीगीता प्रेस गोरखपुर की पुस्तक 'महाभाव-कल्लोलिनी' से उद्धृत

श्रीराधा-स्तवन

नवनीत-गुलाब तैं कोमल हैं, 'हठी' कंज की मंजुलता इन में।
गुललाला गुलाल प्रबाल जपा छवि, ऐसी न देखी ललाइन में।।
मुनि-मानस-मन्दिर मध्य बसैं, बस होत हैं सूधे सुभाइन में।
रहु रे मन, तू चित-चाइन सौं, बृषभानु-कुमारि के पाइन में।।

* * *

कोऊ उमाराज, रमाराज, जमाराज कोऊ,
कोऊ रामचंद सुखकंद नाम नाधे में।
कोऊ ध्यावै गनपति,फनपति,सुरपति कोऊ,
कोऊ देव ध्याय फल लेत पल आधे में।।
'हठी' की अधार निराधार की अधार तू ही,
जप-तप, जोग-जग्य-कछुवै न साधे मैं।
कटैं कोटि बाधे, मुनि धरत समाधे, ऐसे,
राधे, पद रावरे सदा ही अवराधे मैं।।

* * *

काहू कौ सरन संभु-गिरिजा, गनेस-सेस,
काहू कौ सरन है कुबेर-ऐसे धोरी कौं।
काहू कौ सरन मच्छ-कच्छ, बलराम-राम,
काहू कौंसरन गोरी-सांवरी-सी जोरी कौ।।
काहू कौ सरन बोध, बामन, बराह, ब्यास,
एही निराधार सदा रहै मति मोरी कौ।
आनँद करन बिधि-बंदित चरन एक,
'हठी' को सरन वृषभानु की किसोरी कौ।।

* * *

कोऊ धन, धाम कोऊ चाहै अभिराम, कोऊ

साहिबी सुरेस भौति लाख लहियतु है।
कोऊ गजराज, महाराज, सुखराज कोऊ,
तीरथ–बरत–नेम अंग दहियतु है।
ऐसो चित चाहै, चरचा है दुनिया की 'हठी',
चाहै ह्वै एक तौन ठीक ठहियतु है।
जन रखवारी की सु प्रभु–प्रान प्यारी की,
सुकीरति–दुलारी की नजर चहियतु है।।

• • •

हीन हौं, अधीन हौं, तिहारौ ब्रज–साहिबनी!
हिय में मलीन, करुना की कोर ढरिए।
भारी भवसागर में बूड़त बचावौ मोहि,
काम क्रोध लोभ मोह लागे सब अरिए।।
बुरौ–भलौ जैसौ, तेरे द्वार परयौ हौं तौ,
मेरे गुन–औगुन तू मन में न धरिए।
कीरति–किसोरी, बृषभानु की दुहाई तोहि,
लच्छ–लच्छ भौंति सौं 'हठी' कौ पच्छ करिए।।

• • •

जन–दुख–हरनी, धरनी–पति ध्यावैं तोहि,
तेरी जग करनी विधि बरनी बड़े थान की।
चिंता कैसा घेरा मन ढेरा–सौ भ्रमत फिरै,
ह्वै नहिं डेरा, सुधि खान की न पान की।।
ध्यावत बनै न मोहिं, तेरोई कहावत हौं,
'हठी' पै कृपा की कोर राखि दया–दान की।
औगुननि भरौ हौं कहत कर जोरि अब,
मेरो पच्छ करि तू किसोरी वृषभानु की।।

• • •

जाकी कृपा सुक ग्यानी भए, अतिदानी और ध्यानी भए त्रिपुरारी।
जाकी कृपा बिधि बेद रचे, भए ब्यास पुरानन के अधिकारी।।
जाकी कृपा तें त्रिलोकी–धनी सु कहावत श्रीब्रजचंद बिहारी।
लोक–घटी तें 'हठी' को बचाउ, कृपा करि श्रीबृषभानु–दुलारी।।

• • •

चंद–सौ आनन, कंचन–सौ तन, हौं लखि कैं बिन मोल बिकानी।
औ·अरबिंद–सी आँखिन कौं 'हठी' देखत मेरियै आँखि सिरानी।।
राजति है मनमोहन के सँग, वारौं मैं कोटि रमा, रति, बानी।

जीवनमूरि सबै ब्रज की, ठकुरानी हमारी है राधिका रानी।।

बामीकर–चौकी पर चंपक–बरन 'हठी',
अंग जु चमकैं चारु चंचला चलावती।
तारा–सी तरंगना–सी अतर लगावै रति,
मुकुर दिखावै बिजै बीजन डुलावती।।
कमला करनि जोरै, विमला सुतृन तोरै,
नवला लै मरजी कौं अरजी सुनावतीं।
सुरन की रानी, सुरपालन की रानी,
दिगपालन की रानीं द्वार मुजरा न पावतीं।।

• • •

फटिक सिलान के महल महरानी बैठी,
सुरन की रानीं जुरि आईं मन–भावतीं।
कोऊ जलदानी, पानदानी,पीकदानी लिऐं,
कोऊ कर बीनै लै सुहाए गीत गावतीं।।
कोऊ चौंर ढारैं चारु चाँदनी–से चौजवारे,
'हठी' लै सुगंधन सौं अलकें बनावतीं।
मोतिन के, मनिन के, पन्नन के, प्रवालन के,
लालन के, हीरन के हार पहिनावतीं।।

• • •

चंद की कला–सी, नवला–सी सखी संग वारौं,
रंभा, रमा, उमा, 'हठी' उपमा कौं को रही?
कीरति–किसोरी, वृषभानु की दुलारी राधा,
आली! बनमाली कौ सहज चित चोरही।।
भौन तें निकसि प्यारी पाय धारे बाहिर लौं,
लाली तरवान की उमड़ि इक ओर ही।
बगर–बगर अरु डगर–डगर बर,
जगर–मगर चान्यो ओर दुति हो रही।।

• • •

चाँदनी के आँगन, बिछौना नीके चाँदनी के,
चाँदनी–सी दुति, अँखियान सुख लह्यो है।
चाँदनी–सौ चीर चारु, चाँदनी के आभूषन,
चंपक के गातन बखानौ जाकौ कह्यो है।।
'हठी' आसपास बैठी सुघर–सुजान सखीं,

जिन्हें देखि रति कौ गुमान जात बह्यो है।
राधे मुखचंद की निकाई व्रजचंद आज,
अवनि–अकास लौं प्रकास फैलि रह्यौ है।।

* * *

कंचन–महल–चौक, चाँदनी बिछौना तामे,
जरी कौ वितान–तान भान–जोति मद की।
लालन की मालै,लाल सारी कोरदार अंग,
औठन की लाली जिमि लाली जीवबद की।।
रंभा–सी, रमा–सी जहाँ दासी मैनका–सी 'हठी',
ठाढ़ी कर जोरैं तेऊ, छीनैं जोति चंद की।
गावै बेद–बानी, चौंर ढारति भवानी, राधे
बैठी सुखदानी महारानी नंद–नंद की।।

* * *

चंदन लिपायौ चौक, चाँदनी–चंदोवे तामें,
चाँदनी–बिछौनौं फैली लहर सुगंद की।
चाँदनी की साज नीकी चंद–सम चमकन,
चान्यौ ओर चंदमुखी चंद जोति मंद की।।
चाँदनी–सो चार चारु चाँदनी–सी फैली 'हठी',
चाँदनी–सी हाँसी, कै मिठाई सुधा–कंद की।
चंदन की चौकी बैठी चंदन लगाय भाल,
चंद–से बदन राधे रानी व्रजचंद की।।

* * *

ध्यावत महेसहू, गनेसहू, धनेसहू,
दिनेसहू, फनेस त्यौं मुनेस मन मानी हैं।
तीनों लोक जपत, त्रिताप की हरनहारि,
नवो निद्धि, सिद्धि, मुक्ति भई दरबानी हैं।।
कीरति–दुलारी सेवैं चरन बिहारी धन्य,
जाकी कित्त नित्त बिधि बेदन बखानी है।
साधा काज पल में, अराधा छिन आधा 'हठी',
बाधा हरिबे कौं एक राधा महारानी हैं।।

* * *

बैठी रंग भरी है रँगीली रंग रावटी में,
कहाँ लौं बखानौं सुंदराई सिरताज की।
चाँदनी की, चंपक की, चंचला–चमीकर की,
इंदुमा, तिलोतमा की सोभा कौन काज की।।
मोतिन के हार गरे,मोतिन सौं माँग भरे,
मोतिन सौं बेनि गुही 'हठी' सुखसाज की।
चाल गजराज, मृगराज की–सी लंक, दुज–
राज–सौ वदन राजै रानी ब्रजराज की।।

• • •

बड़ो ही प्रताप, बड़ो ही सुहाग, बड़ो ही प्रभाव सुभाविक राखै।
बड़ी गुन–मान, बड़ीयै भुजान, सरूप–निधान पुरानन भाखै।।
बड़े–बड़े देव–दिवेसन की घरनीं मुख देखन कौं अभिलाषैं।
बड़ी दिलदार, बडे–बड़े हार, बड़े–बडे बार, बड़ी–बड़ी आँखैं।।

• • •

रंभा–रमा–सी, उमा–सी, 'हठी' बिमला नवला रति रूप छली सी।
चाँदनी–चंपा–चमीकर–सी चपला चमकावत जात चली सी।।
भागन आज लखी भरि नैनन,रावरी आवत देखि भली–सी।
जात चली गलि भानुलली अलि! मंजुल कोमल कंज–कली–सी।।

• • •

मोरपखा, गर गुंज की माल, किएँ नव भेष, बड़ी छबि छाई।
पीतपटी–दुपटी कटि में, लपटी लकुटी 'हठी' मो मन भाई।।
छूटी लटैं, डुलैं कुंडल कान, बजै मुरली–धुनि मंद सुहाई।
कोटिन काम गुलाम भए, जब कान्ह है भानु–लली बनि आई।।

महाभाव-कल्लोलिनी से उद्धृत

श्रीराधामाधव-चरन बंदौ बारंबार

वन्दना एवं प्रार्थना

(पद)

(राग टोड़ी-तीन ताल)

बंदौं राधा-पद-रज पावन।
स्याम-सुसेवित, परम पुन्यमय, त्रिविध ताप बिनसावन ॥
अनुपम परम अपरिमित महिमा सुर-मुनि-मन तरसावन।
सर्वाकर्षक रसिक कृष्णघन दुर्लभ सहज मिलावन ॥

(दोहा १)

मन्मथ-मन्मथ मन मथत जाके सुषमित अंग।
मुख-पंकज-मकरंद नित पियत स्याम दृग भृंग ॥१॥
जाके अंग सुगंध कौं नित नासा ललचात।
तन चाहत नित परसिबौ जाकौ मधुमय गात ॥२॥
मधु-रसमयि वचनावली सुनिबे कौं नित कान।
हरि के लालाइत रहत, तजि गुरुता कौ भान ॥३॥
जाके मधुर प्रसाद कौ मधु रस चाखन हेतु।
हरि-रसना अकुलात अति तजि दुस्त्यज श्रुति-सेतु ॥४॥
जाकी नख-दुति लखि लजत कोटि कोटि रवि-चंद।
बंदौं तिन राधा-चरन-पंकज सुचि सुखकंद ॥५॥

(दोहा २)

श्रीराधारानी-चरन बंदौं बारंबार।
जिन के कृपा कटाच्छ तें रीझें नंदकुमार॥
जिन के पद-रज-परस तें स्याम होयँ बेभान।
बंदौं तिन पद-रज-कननि मधुर रसनि के खान॥
जिन के दरसन हेतु नित बिकल रहत घनस्याम।
तिन चरनन में बसौ मन मेरौ आठौं जाम॥
जिन पद पंकज पै मधुप मोहन दृग मँडरात।
तिन की नित झाँकी करन मेरौ मन ललचात॥
'रा' अच्छर कौं सुनत ही मोहन होत बिभोर।
बसै निरंतर नाम सो 'राधा' नित मन मोर॥

* * *

बंदौं श्रीराधाचरन पावन परम उदार।
भय-बिषाद-अग्यान हर प्रेमभक्ति-दातार॥

(दोहा ३)

श्रीराधारानी चरन बिनवौं बारंबार।
विषय-वासना नास करि, करौ प्रेम-संचार॥
तुम्हरी अनुकंपा अमित, अबिरत, अकल, अपार।
मोपर सदा अहैतुकी बरसत रहत उदार॥
अनुभव करवायौ तुरत, जातें मिटें बिकार।
रीझें परमानंदघन मो पै नंदकुमार॥
पर्यौ रहौं नित चरन-तल, अर्यौ प्रेम-दरबार।
प्रेम मिलै मोय दुहुन के पद-कमलनि सुखसार॥

(दोहा ४)

श्रीराधा! अब देहु मोहि तव पद-रज-अनुराग।

जातें इह-पर-भोग में होय उदय वैराग ॥
मोच्छहु की माया मिटै, कटैं सकल भवभोग ।
तुम दोउन के चरन कौ बन्यौ रहै संजोग ॥
जो कछु तुम चाहौ, करौ राधा-माधव ! दोउ ।
तुम्हरे मन की सहज रुचि चाह पुनि मेरी होउ ॥
सेवा कौ कछु काम जो हो मेरे अनुहार ।
छोटौ-मोटौ बकसि मोहि करौ कृपा-विस्तार ॥
परयौ रहौं नित चरन-तल, परसौं नित पदधूल ।
पनदासी पौंछत रहौं अंग-अंग सगरौ भूल ॥

(दोहा ५)

हे राधे रासेश्वरी ! रसकी पूर्ण निधान ।
हे महान महिमामयी ! अमित श्याम-सुख-खान ॥
पाप-ताप-हारिणि, हरणि सत्वर सभी अनर्थ ।
परम दिव्य रस दायिनी पंचम शुचि पुरुषार्थ ॥
यद्यपि हैं सब भाँति हम अति अयोग्य, अघबुद्धि ।
सहज कृपामयि ! कीजिये पामर जनकी शुद्धि ॥
अति उदार ! अब दीजिये हमको यह वरदान ।
मिले मंजरी का हमें दासी-दासी-स्थान ॥

(दोहा ६)

करौ कृपा, श्रीराधिका ! बिनवौं बारंबार ।
बनी रहे स्मृति मधुर, शुचि, मंगलमय, सुखसार ॥
श्रद्धा नित बढ़ती रहै, बढ़ै नित्य विश्वास ।
अर्पण हों अवशेष तव जीवनके सब श्वास ॥

(दोहा ७)

श्यामस्वामिनी राधिके ! करौ कृपा कौ दान ।
सुनत रहैं सुरली मधुर, मधुमय बानी कान ॥

पद-पंकज-मकरंद नित पियत रहैं दृग-भृंग।
करत रहैं सेवा परम सतत सकल सुचि अंग॥
रसना नित पाती रहै दुर्लभ भुक्त प्रसाद।
बानी नित लेती रहै नाम-गुनन-रस-स्वाद॥
लगौ रहै मन अनवरत तुम में आठौं जाम।
अन्य स्मृति सब लोप हों सुमिरत छबि अभिराम॥
बढ़त रहै नित पलहिं-पल, दिव्य तुम्हारौ प्रेम।
सम होवैं सब छंद पुनि, बिसरै जोगच्छेम॥
मुक्ति-मुक्ति की सुधि मिटै, उछलैं प्रेम-तरंग।
राधा-माधव सरस सुधि करै तुरत भव-भंग॥

(पद)

(राग भैरवी-ताल कहरवा)

हे राधे! हे श्याम-प्रियतमे! हम हैं अतिशय पामर दीन।
भोग-रागमय, काम-कलुषमय मन प्रपंच-रत, नित्य मलीन॥
शुचितम दिव्य तुम्हारा दुर्लभ यह चिन्मय, रसमय दरबार।
ऋषि-मुनि-ज्ञानी-योगीका भी नहीं यहां प्रवेश-अधिकार॥
फिर हम-जैसे पामर प्राणी कैसे इसमें करें प्रवेश।'
मनके कुटिल, बनाये सुन्दर ऊपरसे प्रेमीका वेश॥
पर राधे! यह सुनो हमारी दैन्यभरी अति करुण पुकार।
पड़े एक कोने में जो हम देखा सकें रसमय दरबार॥
अथवा जूती साफ करें, झाड़ू दें-सौंपो यह शुचि काम।
रजकणके लगते ही होंगे नाश हमारे पाप तमाम॥
होगा दम्भ दूर फिर पाकर कृपा तुम्हारीका कण-लेश।
जिससे हम भी हो जायेंगे रहने लायक तव पद-देश॥
जैसे-तैसे हैं, पर स्वामिनि! हैं हम सदा तुम्हारे दास।
तुम्हीं दया कर दोष हरो, फिर दे दो निज पद-तलमें वास॥
सहज श्यामयि! दीनवत्सला! ऐसा करो स्नेहका दान।
जीवन-मधुप धन्य हो जिससे कर पद-पंकज-मधुका पान॥

श्रीराधा विषयक

(दोहा)

१. राधा मेरी स्वामिनी मैं राधा को दास।
जन्म जन्म मोहि दीजिये श्री वृन्दावनवास॥

२. मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोई।
जा तन की झाई परे श्याम हरित दुति होई॥

३. राधा राधा नाम जो सपने मेहु लेय।
ताको मोहन साँवरो किंकरी अपने को देय॥

४. राधे राधे रटत ही सब बाधा मिट जाय।
कोटी जन्म की आपदा राधा नाम ते जाय॥

५. राधा राधा जे कहे ते न परे भव फंद।
जासु कंध पर कमल कर धरे रहत वृजचन्द॥

६. राधा राधा कहत है, जो नर आठोयाम।
ते भव सिंधु उलंघिके बसत सदा वृजधाम॥

७. राधा श्री राधा रटू निसदिन आठो याम।
जा उर श्रीराधा बसे सोई हमारो धाम॥

८. सब द्वारन कूं छाड़िके आयो तेरे द्वार।
अहो भानु की लाड़ली मेरी ओर निहार॥

९. अहो किशोरी स्वामिनी गौरी परम दयाल।
तनिक कृपा की कोर लखिकीजे मोहि निहाल॥

१०. काहूके बल भजन को काहू के आधार।
व्यास भरोसे कुंवरी के सोवत पांव पसार॥

११. वृन्दावन के वृक्ष को मरम न जानेई कोई।
डार पात फल फूल में राधा राधा होई॥

१२. राधा रूप समुद्र में बह्यो जात मनमीन।
मानसरोवर राधिका, मनहंस हमारो किन॥

१३. हे राधा रानी सदा, करहु कृपा कीकोर।
कबहु तुम्हारे संग में, देखूँ नन्दकिशोर॥

श्रीराधे

(दोहे - श्रीधाम विषयक)

१. धन वृन्दावन धाम है धन वृन्दावन नाम।
धन वृन्दावन रसिक है, जो सुमिरे श्यामा श्याम॥

२. ब्रज चौरासी कोस में चार धाम निजधाम।
वृन्दावन अरु मधुपुरी बरसानो नन्द गाम॥

३. मोर मुकट कटि काछनी कर मुरली उरमाल।
यह बानिक मो मन बसो सदा बिहारीलाल॥

४. कर मुटकी मुरली अहे, घुंघर वारे केश।
यह बानिक मो हिय बसो श्याम मनोहर वेश॥

५. अमी हलाहल मद भरे श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत जिहिं चितवत एक बार॥

६. आओ प्यारे मोहना पलक झाँपी तोही लेहू।
ना मैं देखूं और को ना तोही देखन देऊ॥

७. मोहनी मूरती श्याम की मो मन रही समाय।
ज्यो मेहन्दी के पात में लाली लखी न जाय॥

८. लालहिं मेरे लाल की जित देखूं उतलाल।
लालहिं देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल॥

९. चलो सखी तहां जाइये जहां बसे ब्रजराज।
गो रस बेचत हरि मिले एक पंथ दो काज॥

१०. मेरे प्यारे मोहना बंशी नेकू बजाय।
तेरी बंशी मन हरयो घर आंगन न सुहाय॥

११. बसन पांति मोतिन लरी अधर ललाई पान।
ताहू पे हँसि हेरिबो को लखि बचे सुजान॥

१२. सब सो हित निसीकाम मति श्री वृन्दावन विश्राम।
श्री राधा वल्लभ लाल को हृदय ध्यान मुखनाम॥

१३. मैं नहीं देखूं और को मोय न देखे और।
मैं नित देखोई करूँ तुम दोउनि सब ठौर॥

१४. सुनों न काहू की कहूँ कहों न अपनी बात।
नारायण या रूप में मगन रहों दिन रात॥

१५. नारायण भूलों सबै खानपान विश्राम।
मन में लागी चटपटी कब निरखूँ घनश्याम॥

१६. देह गेह की सुधि नहीं टूटि जाय जग प्रीती।
नारायण गावत फिरों प्रेम-भरे रस गीत॥

१७. फूटि जाहू नैन जो और को निहारैं।
वाणी नसि जाय राधारमण ना पुकारैं॥

१८. तनधन मिटि जाइ ज्वाल तुम्हें यदि बिसारैं।
भूलिके न जाइ हाथ और पै पसारैं॥

१९. तोहि माँगि माँगनो न माँगनो कहायो।
सुनि सुभाय शील सुजश जाँचन जन आयो॥

२०. नारायण हरि लगन में ये पांचो न सुहात।
विषय भोग निन्द्रा हँसी जगत प्रीति बहुबात॥

हा ब्रजेश्वरी

।।श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः।।

प्रेम भरे दोहे

१. मृदु मुस्क्यान निहारिके, धीर धरत है कौन,
नारायण के तन तजे, कै बौरा कै मौन॥

२. ललन तरे ठाढो कबहुँ, कबहूँ यमुना तीर,
नारायण नैनन बसी, मूरति श्याम शरीर॥

३ कजरारी अँखियन में, बस्यो रहत दिन-रात,
प्रीतम प्यारो हे सखी ताते साँवर गात ॥

४ प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छवि कहा समाय,
भरी सराय रहीम लखि, आप पथिक फिरि जाय ॥

५ कबिरा काजर रेखहू, अब तो दई न जाय,
नैनन प्रीतम रमि रहा, दूजा कहाँ समाय ॥

६ या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय,
ज्यों ज्यों बूडे श्याम रंग, त्यों त्यों उज्ज्वल होय ॥

७ कीच लगी ब्रज खिरक की, इन गलियन की धूरि,
अंग लगी जानी जबै, भाजि गए जम दूरि ॥

८ जमुना-जल अँचवन करैं, जमुना जल में न्हाहिं,
जहाँ-जहाँ जमुना बहैं, तहाँ-तहाँ जम नाहिं ॥

९ कामधेनु कलपत रही, हौं न भई ब्रज गाय,
राधा देती दोहनी, मोहन दुहते आय ॥

१० तीन लोक, चौदह भुवन, भोजन पुजवत जोय,
द्वारें देख्यौ नन्द के, माँगत माखन रोय ॥

११ बाल कृष्ण माखन लिऐं, करत तोतरी बात,
हरें-हरें घुटरुन चलत, देखत नैन सिरात ॥

१२ जाके मनमें बस रही, मोहन की मुस्कान,
नारायण ताके हिये, और न लागत ज्ञान ॥

१३ ब्रह्मादिक के भोग सुख, विष सम लागत ताहि,
नारायण ब्रजचन्द्र की, लगन लगी है जाहि ॥

१४ अहो राधिके स्वामिनी, 'गौरी परम दयाल,
सदा बसो मेरे हिये, करके कृपा कृपाल ॥

१५ मैं काको जानो नहीं, ना मोहि जाने कोय,
तुमसों प्रीति लगी रहे, हम तुम जानें दोय ॥
मैं जानो तुम नाय ॥

दोहे-श्री धाममहिमा

१. वृन्दावन की रेणुको, सुरपति लावत माथ,
जहाँ आय गोपी भये, श्री गोपेश्वर नाथ॥
२. वृन्दावन में बास करि, साग पात नित खात,
तिनके भागनिको निरखि, ब्रह्मादिक ललचात॥
३. हम न भये ब्रज में प्रगट, यही रही मन आस,
निसिदिन निरखत युगल छवि, करि वृन्दावन वास॥
४. मुक्ति कहे गोपाल ते, मेरी मुक्ति कराइ,
ब्रज-रज उडि मस्तक लगे, मुक्ति मुक्त ह्वै जाइ॥
५. कबहुं कुंज ह्वै हौं कबै श्री वृन्दावन माँहि,
ललित किशोरी लाडिले, बिहरैंगे तेहि छाँहि॥
६. कब कालिंदी कूलकी, ह्वै हौं तरुवर-डार,
ललितकिशोरी लाडिले, झूले झूला डार॥
७. कब हौं सेवाकुंज में, ह्वै हौं श्याम तमाल,
लतिका कर गहि बिरमिहैं, ललित लडैती लाल॥
८. कब कालिंदी कूलकी ह्वै, हौं त्रिविध समीर,
युगल अँग अँग लागिहौं, उडिहै नूतन चीर॥
९. सुमन-वाटिका विपिन महँ, ह्वै हौं कबहू फूल,
कोमलकर दोउ आयते, धरिहैं वीना दुकूल॥

सवैया

यमुना-पुलिन-कुंज गह्वर की, कोकिल ह्वै तुम कूक मचाऊँ।
प्रिय-पद-पंकज लाल मधुप ह्वै, मधुरे-मधुरे गुण सुनाऊँ॥
कूकर ह्वै बन वीथिन डोलूँ, बचे सीथ रसिकन के खाऊँ।
ललित किशोरी आस यही मम ब्रजरज तजि छिन अनत न जाऊँ॥

पद

दीनबन्धु दीनानाथ रमानाथ ब्रजनाथ
राधानाथ मो अनाथ की सहाय कीजिये।
तात मात भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी
नातो तुम ही सो मो विनय सुनि लीजिये॥
रीझिये निहारि देर कीजिये न श्रीजी कहूँ
दीन दास जानि मोही आपनाय लीजिये।

कीजिये कृपा कृपाल साँवरे बिहारीलाल
मेटि दुख जाल बास वृन्दावन दीजिये ॥

* * *

श्री राधे

माथे पर मुकुट देखि चन्द्रिका चटक देखि,
छवि की छटक देखि रूप रस पीजिये।
लोचन विसाल देखि गले गुंजमाल देखि,
अधर रसाल देखि चित्त चुप्प कीजिये ॥
कुंडल हलनि देखि पलक चलनि देखि,
अलक बलनि देखि सरबस दीजिये।
पीताम्बर छोर देखि मुरली की घोर देखि,
साँवरे की ओर देखिदेखिबोई कीजिये ॥

* * *

॥ श्री राधे ॥

श्याम श्याम रटत राधे आपुहि श्याम भई।
पूँछति फिरि अपनी सखियनुसों प्यारी कहाँ गई ॥
वृन्दावन वीथिन जमना-तट श्री राधे-राधे-राधे।
चतुर सखी यह दशा देखिके रही सकल मौन साधे ॥
गरुई प्रीति कला न करावै क्यो न होय अति ऐसी।
कह भगवान हित रामराय प्रभु लगन लगै तो ऐसी ॥

।।श्रीराधे ।।

सवैया

श्याम-गौर बइजारबिन्द पर जिसको वीर मचलते देखा,
नैन बान मुसुकान मन्द पर कभी न नेक सँभलते देखा ॥
ललित किशोरी जुगल इश्क में बहुतो का घर घलते देखा,
दूबा प्रेमसिन्धु का कोई हमने नहीं उछलते देखा ॥

* * *

मुकुट की चटक लटक बिबि कुंडल की,
भौंह की मटक नेक आँखिनु दिखाइ जा।
ऐहो बनवारी बलिहारी मैं तुम्हारी मेरी
गैल क्यों न आइ नेक गाइन चराइ जा ॥
'आलिम' सुजान रूप गुनके निधान कान्ह,

बंसीको बजाई तन तपति बुझाइ जा।
नन्दके किसोर चितचोर मोर-पंखवारे,
बंसीवारे साँवरे प्यारे इत आइजा॥

।।श्रीराधे।।

पद

भगवान की प्रतिज्ञा

मैं निज भक्तन हाथ बिकाऊँ।
आठों याम हृदय में राखूँ पलक नहीं बिसराऊँ॥
भक्तनकी जैसी रुचि देखौं तैसोइ बेश बनाऊँ।
टारौं अपने बचन भक्त लखि तिनके बचन निभाऊँ॥
ऊँच-नीच सब काज भक्तके निजकर सकल बनाऊँ।
रथ हाँको पग धोऊ बासन माजों छानि छवाऊँ॥
माँगौ नहिं दाम कछु तिन्हतें नहिं कछु तिनहि सताऊँ।
प्रेम सहित जल पत्र पुष्प फल जोइ देवै सोइ पाऊँ॥
निज सरबस्व भक्तको सौंपौं अपनो स्वत्व भुलाऊँ।
भक्त कहै सोइ करौं निरन्तर बेचौ तो बिक जाऊँ॥

विशेष : एक भक्त की हार्दिक अभिलाषा

परोगुरदन[1] बनाये जाँयेगे सागर[2] मेरी गिलके[3]
लबें[4] जानाँके[5] बोसे[6] खूब लेंगे खाक में मिलके
१ मरने के पश्चात २ प्याले ३ मिट्टी ४ होठ ५ प्यारे ६ चुम्बन

(अर्थ)

सुजानशिरोमणि श्यामसुन्दर? हे महादानी श्री राधारमण? बस मेरी भी अब यही हार्दिक इच्छा आकांक्षा है कि मुझे भी शीघ्र उस मिट्टी में मिल जाना चाहिए, जिस मेरी मिट्टी के कुम्हार पात्र बनावे, गोप बालाएँ उस पात्र में दही जमावें और उस दधि को पात्र सहित तुम मुँह से लगाये खाते भागते जाओ और मैं मिट्टी का पात्र बन तुम्हारे ललाम होठों का मधुर मधुरामृत पान करता रहूँ, नाथ? मैं भी कृतार्थ हो जाऊँ।

भक्त की अभिलाषा (पद)

करुनाकर? करुना करि बेगहि सुधि लीजे।
सहि न सकत जगत दाव तुरत दया कीजे॥
हमरे अवगुनहि नाथ सपने जनि देखहु।
आपनी दिसि प्राणनाथ प्यारे अवरेखहु॥
मैं तो सब भाँति हीन कूर कुटिल कामी।
करत रहत धन-जन के चरन की गुलामी॥
महापाप पुष्ट दुष्ट धर्महिं नहिं जानौ।
साधन नही करत एक तुमहिं शरण मानौ॥

जैसो हौं तैसो अब तुमहिं शरण प्यारे।
कानू विधि राखि लेहु हम तो अब हारे॥
दुष्टसुता अजामिल गजकी सुधि कीजे।
दीन जानि हरीचन्द बाँह पकरि लीजे॥

॥ श्रीराधे ॥

भक्त की अभिलाषा

गिरिकीजे गोधन मयूर नव कुंजनुको,
पशु कीजे महाराज नन्दके अगरको।
नर कौन तौन जौन राधे राधे नाम रटै,
तरु कीजे बरु कछु कालिन्दी कगर को॥
इतने ही पै कीजे जो कछु कुँवर कान्ह,
राखिवे न फेरि या हठी के झगर को।
गोपी-पद-पंकज-पराग कीजे महाराज,
तृण कीजे सबरे ही गोकुल नगर को।

॥ श्री राधे ॥

भक्त की अभिलाषा

मानुष हौं तो वही रसखानि
बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन को।
जो पशु हौं तो कहा बसु मेरो
चरौं नित नन्दकी धेनु मझारन॥
पाहन हौं तो वही गिरिको
जो धरयौ कर छत्र पुरंदर-धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि
कालिन्दी कूल कदम्बकी डारन॥

॥श्री राधे॥

श्री राधेजी की महिमा

गाये जा राधे राधे

पद

भजे जा राधे राधे! कहे जा राधे-राधे।
श्री वृन्दावन धाम अपार, रटे जा राधे राधे॥१॥
वृन्दावन गलियों डोले, श्री राधे-राधे बोले।
याको जनम सफल हो जाय, रटे जा राधे-राधे॥२॥

या ब्रज की रज सुन्दर है देवन को भी दुर्लभ है।
मुक्ता रज शीश चढाय, रटे जा राधे राधे ।।३।।
ये वृन्दावन की लीला, नहीं जाने गुरु या चेला।
ऋषि-मुनि गये सब हार, रटे जा राधे-राधे ।।४।।
वृन्दावन रास रचायो, शिव गोपी रूप बनायो।
सब देवन करे विचार, रटे जा राधे राधे ।।५।।
जो राधे राधे रटतो, तुरत जनम-जनम को कटतो।
तेरो बेड़ो होतो पार, रटे जा राधे राधे ।।६।।
जो राधे-राधे गावे, सो प्रेम पदारथ पावे।
भवसागर होवे पार, रटे जा राधे राधे ।।७।।
जो राधा नाम न गायो, सो बिरथा जनम गवायो।
वाको जीवन है धिक्कार, रटे जा राधे राधे ।।८।।
जो राधा जनम न होतो, रसराज बिचारो रोतो।
होतो न कृष्ण अवतार, रटे जा राधे राधे ।।९।।
मन्दिर की शोभा न्यारी, या में राजत राजदुलारी।
ड्योढ़ी पर ब्रह्मा राजे, रटे जा राधे राधे ।।१०।।
जेहि वेद पुराण बखाने, निगमागम पार न पावे।
सोई वे राधाके दरबारे, रटे जा राधे राधे ।।११।।
तू माया देख भुलायो, वृथा ही जनम गवायो।
फिर भटकेगो संसार, रटे जा राधे राधे ।।१२।।

।।श्री राधे।।

पद

आली म्हाँने लागे वृन्दावन नीको।
घर-घर तुलसी ठाकुर पूजा, दरसण गोविन्दजी को।।१।।
निरमल नीर बहत जमुना में भोजन दूध दही को।
रतन सिंहासण आप विराजे, मुकुट धरयो तुलसी को।।२।।
कुंजन-कुंजन फिरत राधिका, सबद सुणत मुरली को।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीको।।३।।

।।श्री राधे।।

पद

राधे तेरे चरनों की.

राधे तेरे चरनों की, गर धूल ही मिल जावे।
सच कहती हूँ की मेरी, तकदीर ही बदल जावे।
राधे तेरे चरनो की. . . .
सुनते हैं तेरी रहमत, दिन-रात बरसती है।
इक बूँद ही मिल जावे, मन की कली खिल जाये।।
राधे तेरे चरनो की. . . .
ये मन बड़ा ही चंचल है, कैसे तेरा भजन करूँ।
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाये।।
राधे तेरे चरनो की. . . .
नजरो से गिराना ना, चाहे जितनी भी सजा देना।
नजरो से जो गिर जावे, मुश्किल ही संभल पावे।।
राधे तेरे चरनो की. . . .
राधे इस जीवन में, बस इतनी तमन्ना है।
तुम सामने हो मेरे, मेरा दम ही निकल जाये।।
राधे तेरे चरनो की. . . .

।।श्री राधे।।

श्री बरसाने की महिमा

पद

(१) जो रसबरस रह्यो बरसाने सो रस तीन लोक में नाही।
तीन लोक में नाही, वो रस बैकुंठ हू में नाही।।टेक।।
सँकरी गली बनी पर्वत की, दही ले चली कुमरि कीरती की।
आगे गाय चरै गिरधर की, दीने सखा सिखाये।।जो रस.।।
दै जा दान कुँवरी मोहन कों, तब छोडें तेरे गोहन को।
राज याहा बन में गिरधर को, दान लेइंगे धाय ।।जो रस.।।

इनके संग सखी मद माती, उनके संग सखा उत्पाती।
घेरी लेई ग्वालिन रसमाती, मन में अति हरषाय ॥ जो रस॥
सुर तैंतिसन की मति बौरी भजि के चले बिरज के ओरी।
देखी-देखी या ब्रजकी खोरी, ब्रह्मादिक ललचाय ॥ जो रस॥

॥श्री राधे॥

पद

(२) राधे राधे करुणामयी कृष्ण पियारी।
मेरी सुध लिज्यो श्री वृषभान दुलारी॥
हे अखिल लोक चूड़ामणी किरती किशोरी।
बृज भूषण उर भूषण बृजचन्द्र चकोरी॥
बृज जीवन जीवनी बृज तरुणी मणी श्यामा।
आनन्दमयी आनन्दकन्द की भामा॥
बृज मण्डल की शोभा बृज की उजियारी।
मेरी सुध लीज्यो श्री वृषभान दुलारी॥
हे मनोहारिणी रासेश्वरी रस रूपा।
बृज विलासनी बृज वासिनी बृज की भूपा॥
ललीतादिक सहचरी सर्वस्व स्वरूपा।
निज प्रणत वत्सला स्वामिनी परम अनूपा॥
हे गोपवंश मणि बृज बरसाने वारी।
मेरी सुध लीज्यो श्री वृषभान दुलारी॥

॥श्री राधे॥

पद

(3) मन भूल मत जैयो, राधा रानी के चरण।
राधा रानी के चरण, श्यामा प्यारी के चरण।
बाँके ठाकुर की बाँकी, ठकुरानी के चरण ॥टेर॥
वृषभानु की किशोरी, सुनी मैया हूँ ते भोरी।
प्रीती प्राणि के हूँ थोरी, तोही राखेगी शरण ॥१॥
जाकूँ श्याम उर हेर, राधे राधे राधे टेर।
बाँसुरी में बेर बेर, करे नाम से रमण ॥२॥
भक्त प्रेमिन बखानी,, जाकी महिमा रसखानी।

मिले श्रीरज मनमानी, कर प्यार से वरण ॥३॥
ऐरे मन मतवारे, छोड़ि दुनिया के द्वारे।
राधा नाम के सहारे, सोंप जीवन मरण ॥४॥

॥श्री राधे॥

पद

(4) वृषभान की लली या सामलिया सौ नेह लगाय के चली,
अइयौ रे अहीर के तू हमरी गली,
चंदन छिड़कूँगी तेरी पगड़ी॥
कोरी कोरी मटकी दही दूध ते भरी,
रंग महल में श्री राधे जू खड़ी॥
हाथन में गजरे गुलाब की छड़ी,
ठाढ़े रहियो मैं लालजी कब की खड़ी॥
नैनन में कजरा मुख भर्यौ पान,
वारी सी उमरियाँ राधे बड़ो ही गुमान,
वृन्दावन की कुंजन में रच्यौ है रास,
यह धुनि गावै स्वामी कान्हा दास॥

॥श्री राधे॥

पद

(५) प्रबल प्रेम के पाले पड़ कर, प्रभु को नियम बदलते देखा।
उनका मान टले टल जावे, भक्त का मान न टलते देखा॥
जिनकी केवल कृपादृष्टि से,सकल सृष्टि को पलते देखा।
उनको गौकुल के गोरस पर, सौ-सौ बार मचलते देखा॥
जिनके चरण-कमल, कमला करतल से न निकलते देखा।
उनको बृज करील कुंजो में, कंटक पथ पर चलते देखा॥
जिनका ध्यान विरंचि शंभु, सनकादीक से न संभलते देखा।
उनको ग्वाल सखा-मण्डल में, लेकर गेंद उछलते देखा॥
जिनके बंक भृकुटि के भय से, सागर सप्त उछलते देखा।
उनको माँ यशोदा के भय से, अश्रु बिंदु दुलकाते देखा॥

॥श्री राधे॥

पद

(६) म्हारी हुण्डी सिकारो महाराज रे साँवरा गिरधारी।
मोहे एक तिहारो आधार रे साँवरा गिरधारी॥
सखी पल प्रहलाद की, लियो नरसिंह अवतार।
खंभ फाड़ प्रकट भये, सो उतार्यो भूमि को भार रे॥
पूँजी गोपी चन्दन मारी, तुलसी-माला सोने को हार रे।
साँचो गहनो मैरो साँवरो, मेरी दौलत है झाझ करताल रे॥
भरी सभा के बीच में, खड़ी द्रौपदी नार,
खींचत मेरी चीर प्रभो, रखियो मेरी लाज,
नहीं तो जायेगी तिहारी लाज रे साँवरा गिरधारी॥
माता के कठोर वचन से, पाँच बरस के बाल,
वन में जाकर तप कियो, मिले कृष्ण गोपाल,
मोहे दर्शन तो दीजो घनश्याम रे साँवरा गिरधारी॥
'नरसी' भक्त की बीनती सुनियो दीनदयाल रे,
चरण कमल मोहे राखियों, मोहे दीजो वृन्दावन वास रे॥

॥ श्री युगल महामंत्र ॥

राधे कृष्ण राधे कृष्ण,
कृष्ण कृष्ण राधे राधे।
राधे श्याम राधे श्याम
श्याम श्याम राधे राधे॥

श्री युगल महामंत्र श्री सनकादिक महाऋषि का अलौकिक तथा आर्ष मंत्र है। इसको जपने तथा गाने का एक ही नियम है कि इसका कोई नियम नहीं है। आप जिस भी अवस्था में हों, जिस किसी भी जगह बैठे हों, पवित्र हों या अपवित्र हों, स्नान किया हो या नहीं किया हो, चल रहे हों या बैठे हों, यात्रा में हों या बिस्तर पर हों, इस मंत्र को आप चाहे जब जप कर सकते हैं।

॥श्री राधे॥

प्रातः स्मरण पंचकम्

(1)

प्रातः स्मरामि-जननी-चरणारविन्दं,
संसार - सागर - समुत्तरणैक - सेतुम्।
प्रातः स्मरामि गुरुदेव-पदारविन्दं,
अज्ञान घोरतिमिरान्ध-विनाश-हेतुम्॥

(2)

प्रातः स्मरामि गणनाथ-पदारविन्दं,
देवैर्नुतं सकल-विघ्न-विनाश हेतुम्।
प्रातः स्मरामि भुवनेश-पदारविन्दं,
मुक्तिप्रदं सकल-कल्मष-नाश हेतुम्॥

(3)

प्रातः स्मरामि गिरिजा-चरणारविंदम,
कामादि-दोष-जल-पूर्ण-भवाब्धि-पोतम्।
प्रातः स्मरामि गिरिजेश-पदारविन्दं,
धर्मार्थकाम-भव-मोक्ष-विधान-हेतुम्॥

(4)

प्रातः स्मरामि मिथिलेश-सुतांघ्रि-पद्मम्,
अज्ञान-नाश-हरी भक्ति-विकाश-हेतुम्।
प्रातः स्मरामि रघुनाथ पदारविन्दं,
ब्रह्मा-सुरेश-शिव नारद-सेव्यमानम्॥

(5)

प्रातः स्मरामि वृषभानु-सुतांघ्रिपद्मं,
प्रेमामृतैकमकरंद सौंदर्यपूर्णम्।
प्रातः स्मरामि मधुसूदन-पाद पद्मं,
प्रेमास्पदं सजल-मेघरुचि मनोज्ञम्॥

* * *

॥श्री राधे॥

पद

किशोरी तेरेचरनन् की रज पाऊँ।
पड़ी रहुँ कुंजनके कोने श्याम राधिका गाऊँ॥
जेहि रज शिव सनकादिक दुर्लभ सोई रस शीश चढाऊँ।
व्यास स्वामिनी की छवि निरखि वेद विमल यश गाऊँ॥

॥श्री राधे॥

सवैया

दास लखै मुखचन्द्र प्रकाश चकोर समान न नैन हटावै।
तात सखा धन धाम सबै तुमको तजि और कछू न सुहावै॥
राग रहै अनुराग भरो नित प्रीति प्रतीति प्रमोद बढावै।
ग्वाल हिये यह सॉवरी सूरति माधुरि मूरति वेणु बजावै॥
सोवत जागत ध्यान रहै मन श्याम स्वरूप नहीं बिसरावै।
शांति स्वरूप रहै मन चंचल त्यागि तुम्हें फिर अनत न जावै॥
तुमकी संपति लेहि बनाय बसाव के भीतर ही सुख पावै।
ग्वाल हिये यह सॉवरी सूरति माधुरि मूरति वेणु बजावै॥

श्रीरसिकन प्राणधन श्री राधे जू

पद

भक्त की अन्तिम अभिलाषा

कदम की छॉंह हो जमुना का तट हो।
अधर मुरली हो माथे पर मुकुट हो॥
खड़े हों आप इक बाँकी अदा से।
मुकुट झोकों में हो मौजे हवासे॥
जो आवे आँख में दम प्राणप्यारे।
लगा हो ध्यान चरणों में तुम्हारे॥
शिर सरकत ढुलककर पीत पट पर।
खुलीरह जायें यह आँखें मुकुट पर॥
अगर इस तौर हो अंजाम मेरा।
तुम्हारा नाम हो औ. काम मेरा॥

पद

हो वक्ते[1] मर्ग[2] धरवालो ने घेरा।
अदा हो सब लदा असबाब[3] मेरा॥
पड़े जाँ[4] और अजल[5] में आके तकरार।
लड़े दोनों बराबर बार बार॥
यह बिछुड़ी हो कि झट पट तन से निकलूँ।
यह मचली हो कि दर्शन करके निकलूँ॥
नजर आ जाये छवि बाँकी अदा की।
खुले आँखें तो झाँकी हो अदा की॥
जो आये आँख में दम प्राण प्यारे।
लगा हो ध्यान चरणों में तुम्हारे॥

१. समय २. मृत्यु ३. सामान ४. प्राण ५. मृत्यु

* * *

भक्त की आर्त पुकार

मेरे जीवन धन? तुम्हें अब साष्टांग प्रणाम है। प्रिया व प्रीतम मुझे तुम भूल मत जाना—जैसी तैसी कुछ भी हूँ, मैं तिहारी ही हूँ—तिहारी ही कहलाती हूँ।

।

बाँह छुड़ाये जात हौ निबल जानिकै मोहि।
हिरदै ते जब जाहुगे मर्द बदौंगी तोहि॥

* * *

प्यारे? जा तो रहे ही हो, अब मेरी अंतिम अभिलाषा और है—

मूरति यह माधुरी मेरे मनमें बसी रहे।
मम पेंट सदा कृष्णनाम पै कसी रहे॥
लौ लाडिले तुमसे सदा मेरी लगी रहे।
प्रभु-प्रीतिकी प्रतीति पदाम्बुज पगी रहे॥
राधा-रमण बाधा-हरण मंगल-करण कहूँ।
चाहे जहाँ कृपानिधे! जिस वेष में रहूँ॥
जाना न कभी याद भूल जन की मुरारे।
मन में रमे मोहन? रहो मुरली अधर धारे॥
सब भाँति से प्रभु-चरण-शरण हम हैं तुम्हारे।
माता पिता सखा स्वजन तुम ही हो हमारे॥
ज्वाला तुम्हीं पै तन तथा मन और धन वारे।
यह मन्द-मन्द माधुरी मुसुकानि निहारे॥

रसिकन की जीवन मूरि

पद - (भक्त का पूर्ण समर्पण)

आप सब जियेर अरु दूरि की पहिचानत हो
छिपी नाहि काहु क्रूर साहिब सहूर की।
गुक्ता निवाजी करि राजी छिन ही में होत
करत ऐतराजी न सुनिकै कसूरकी ॥
तुम सो न दूसरो दयालु श्री बिहारीलाल
जाहि लाज आवै निज जनके जरूरकी।
अरजी बिचारेको अरजी दिये ही बने
मानौ या न मानौ वह मरजी हुजूरकी॥

* * *

॥ रसिक रसीलो ॥

पद

आजलौं जो देख्यो सुन्यो पढ्यो गुन्यो जीवन भरि
मेरे घनश्याम मेरे चित्तसों भुलाइदै।
तेरे अवलोकन में शंका जो न उठै फेरि
ऐसो महाघोर मोहि मूरख बनाइदै।
बिसरी जाँय राग साज धुनि स्वर ताल सम।
जो पै मन-मन्दिर में बाँसुरी बजाइदै।
छको फिरौं रूपरस माधुरी को पान कैके
प्रेमी मतवाला तू ज्वाला को बनाइदै।

श्यामसुन्दर? वास्तव में तो मुझमे कोई ज्ञान है ही नही, मै तो सामान्य पठित-मूर्ख हूँ। परन्तु मुझे अपनी यह अभिमान भरी ओछी-सी जानकारी ही महान कष्ट दे रही है। तुम्हारे ध्यान में अनेकों अगर-मगर, परन्तु किन्तु की शंका उठती रहती है। प्यारे अब तो मुझे अपना ही मस्ताना दीवाना बना लो और जो कुछ जानता हूँ, वह कृपा करके भुला दो। तुम्हारे सिवा और कुछ ज्ञात ही न रहे?

– श्री ज्वालासिंह जी की मनन माला पुस्तक से उद्धृत

।।श्री राधे।।

श्रीपादरूपगोस्वामी विरचित

श्रीकार्पण्यपंजिका स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

(अनुवादक—श्री चिम्मनलालजी गोस्वामी एम.ए. शास्त्री, गीता प्रेस, गोरखपुर)

श्री वृन्दावन के कुंज में स्थित हुआ यह दीनजन वृन्दावनेश्वर श्री कृष्ण तथा वृन्दावनेश्वरी श्रीराधा के चरण कमलों में इस प्रकार निवेदन करता है।।१।।

श्रीकृष्ण की अंग कान्ति नवीन नीलकमलों के सौन्दर्य को मात करती है तथा श्री राधा की गौर छवि मनोहर गोरोचन के गर्वपूर्ण गौरव का ग्रास कर लेती है। श्रीकृष्ण का चमकीला पीताम्बर सुवर्ण की शोभा का तिरस्कार करता है और श्रीराधा के अंगों पर किंशुक (टेसू के फूल) की कान्ति का हरण करने वाला लाल वस्त्र शोभा दे रहा है। श्रीकृष्ण जगत् के समस्त किशोरवृन्द के शिरोभूषण रूप में अवस्थित मरकत मणि के सदृश हैं तो श्रीराधा व्रज की अशेष किशोरियों के जूड़े को सुशोभित करनेवाले मल्लिका-पुष्प के तुल्य है। श्रीकृष्ण के मंगल विग्रह की शोभा भगवान लक्ष्मीपति नारायण प्रभृति अपने स्वरूपभूत ईश्वर विग्रहों के सौन्दर्य का अतिक्रमण कर जाती है और इधर श्रीराधा की कमनीयता भगवती लक्ष्मी की अपेक्षा भी अधिक सुन्दर व्रजांगनाओं के समूह को भी आश्चर्य में डुबा देने वाली है। श्रीकृष्ण के श्री अंगों की सौरभ से श्रीराधा खिंची हुई उनके समीप चली आती है और श्रीराधा के अंगों का दिव्य गन्ध श्रीकृष्ण को उन्मत्त बना देता है। श्रीकृष्ण की मुरली - ध्वनि श्रीराधा की गति का अवरोध कर देती है और श्री राधा की वीणा का मधुर स्वर श्रीकृष्ण को मोहित कर लेता है। श्रीकृष्ण के नेत्र-प्रान्तों की चपलता श्रीराधा के धैर्यरूपी धन को चुरा लेती है और श्रीराधा की कटाक्ष-चातुरी रूपा भ्रमरी श्रीकृष्ण के हृदय कमल को चिकोट लेती है। श्रीराधा की मार्मिक परिहासपूर्ण प्रौढोक्ति श्रीकृष्ण को निरुत्तर कर देती है और व्रजेन्द्रसुत श्रीकृष्ण के नर्म वचन श्री राधा की अंग लता को रोमांचित कर देते है। श्रीकृष्ण दिव्य सद्गुणरूप माणिक्य श्रेणी से समलंकृत रत्नमय पर्वत के समान है तो श्रीराधा के गुणसमूह जगज्जननी उमा आदि महादेवियों के हृदय में भी लोभ उत्पन्न कर देते हैं।।२-९।।

हे वृन्दावनेश्वर श्रीकृष्ण एवं वृन्दावनेश्वरि श्रीराधे ! यह दीन जन आप दोनों के चरणों में सिर नवाता हुआ निम्नांकित दैन्योक्तियों के द्वारा आप से विनय करता है।।१०।।

यद्यपि मुझ में आपकी कृपा को प्राप्त करने की कोई योग्यता नहीं है,फिर भी महाकृपालुओं के मुकुटमणि होने के कारण आप दोनों इस दीन पर अवश्य कृपा करें। हे लोकपालों के द्वारा वन्दित प्रिया-प्रियतम ! बड़े ही हर्ष की बात है कि इस जगत में ऐसे महान कृपालु भी देखे जाते हैं, जो अयोग्य एवं अपराधी जन के प्रति भी दया से कातर हो जाते हैं। (फिर आप तो उन सब के शिरोमणि ही ठहरे।) मैं जानता हूँ कि भक्ति ही आप के हृदय में करुणा का संचार करती है; किन्तु मुझ दीन में भक्ति के लेश का आभास भी नहीं है। फिर भी आप दोनों बड़े ही लीलामय एवं सर्व-समर्थ हैं, अतः इस जन पर अवश्य प्रसन्न होइये। हे प्राणेश्वर एवं हे प्राणेश्वरी! इस पृथ्वी पर बहुत-से ऐसे महान कौतुकी एवं महासमर्थ पुरुष दुष्ट एवं अभक्तों पर भी प्रसन्न होते देखे जाते हैं। यद्यपि यह प्राणी अधम होते हुए भी अपने को उत्तम समझता है, अज्ञानी होने पर भी अपने को पण्डित मान बैठा है, और दुष्टों का सरदार होकर भी अपने को शिष्ट माने हुए है और इस प्रकार यह आपका विशेष अपराधी है, फिर भी कभी-कभी यह आप दोनों के नामों का उच्चारण कर लेता है। अतः हे स्वामिन् एवं स्वामिनी? मुझ पर आप दोनों अवश्य रीझ जायँ, क्योंकि आपका नामाभास भी राशि-राशि दोषों से छुटकारा दिला देता है! एक बार भक्ति का लेशमात्र आचरण करने पर भी आपदोनों जिसे क्षमा न करें दें, ऐसा अपराध कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता-इसी आशा को लेकर मैं आपके चरणों में यह याचना कर रहा हूँ।।११—१७।।

हाय? हाय? सर्वथा असमर्थ एवं पौरुषहीन होने पर भी इस जीव को कष्टों ने ढीठ बना दिया है, इसलिए हे स्वामिन् और स्वामिनी? यह बार-बार आपसे प्रार्थना करने का दुःसाहस कर रहा है। इसे आपका यत्किंचित् प्रसाद तो मिलना ही चाहिये। हे स्वामिन् और स्वामिनीजू? हाय, हाय यह पापी दाँतों में तृण दबाकर उच्च स्वर से विलाप करता हुआ आप से कृपा की भीख माँगता है, अतः इस दुःखी जीव पर आप अवश्य ढरें। यह अभागा जन्तु हाहाकार करता हुआ आपसे करुणा की याचना करताहै। अतः हे! स्वामिन और हे स्वामिनीजू? आप मेरी इस विनय-वाणी को अवश्य सुनें, मेरी प्रार्थना पर अवश्य कान दें। मैं व्याकुल होकर सुबक-सुबक कर हा हा खाता हुआ दीन शब्दों में आपसे (कृपा की) याचना करता हूँ, अतः हे करुणासागर प्रिया-प्रियतम! इस अयोग्य जन पर भी आप अवश्य कृपा करें। मुँह में अँगूठा देकर यह जीव आर्तस्वर से विलाप कर रहा है। अतः हे

स्वामिनी एवं स्वामिनीजू ! इस पर करुणा का एक छोटा सा कण अवश्य डाल दें। अत्यन्त मन्दबुद्धि मैं क्रन्दन करता हुआ दीन-वाणी से आप दोनों से प्रार्थना करता हूँ कि आप करुणापूर्ण हृदय से मुझ पर करुणा की एक छोटी सी लहर अवश्य बहा दें।।१८-२३।। सम्पूर्ण जगत् में अन्तःकरण के जितने भी मधुर भाव हैं, उन सबसे आपके चरणों का प्रेम मधुरतर है! अतः कृपया उसी प्रेम का प्रसाद इस जन को दें। हे देवशिरोमणि तथा महादेवि ! मैं आज आपकी सेवा को ही चाहता हूँ और किसी वस्तु की मुझे अभिलाषा नहीं है; अतः आप दोनों कृपा करके मुझ दीन के प्रति प्रसन्न हो जायें। हे अनाथ-जनवत्सल प्रिया-प्रियतम! मुझे आपसे केवल यही याचना करनी है कि आप इस दीनजन को प्रसन्न होकर अपनी प्रत्यक्ष सेवाका ही अधिकार प्रदान करें। मस्तक पर अंजलि बाँधकर यह दीनजन आप दोनों से भीख माँगता है कि एक बार ही सही, इसका मनोरथ अवश्य सिद्ध करें।।२४-२७।।

अहा! यह दिन कब होगा, जब वृन्दावन में आप दोनों के श्रीअंगों की निर्मल गन्ध सम्मिलित रूप से मेरी नासिका में प्रविष्ट कर अपनी अमूल्य सौरभ से उसे मतवाली कर देगी। अहा! क्या कभी हंसों के कलरव का भी तिरस्कार करने वाली आप दोनों के नूपुरों की मधुरातिमधुर झनकार मेरे कानों को आनन्दित करेगी। वह दिन कब होगा, जब वृन्दावन की भूमि पर चक्र, कमल आदि परम सौभाग्य सूचक चिह्नों से युक्त आपके पदांकों का दर्शन करके यह जन उन्मत्त हो जायेगा। हे प्रिया-प्रियतम! आपके वे चरणकमल, जिन पर जगत के सम्पूर्ण सौन्दर्य की चरम सीमा भी न्योछावर की जा सकती है। मेरे नेत्रों को हाय, कब अपूर्व आनन्द से सराबोर कर देंगे? प्रिया-प्रियतम! क्या इस जन्म में वह शुभ अवसर मुझे प्राप्त होगा, जब आपके चरण-कमलों का प्रत्यक्ष दर्शन करके इस दीनजन की चिरसंभृत आशा फलवती होगी। अहा! वह दिन कब होगा, जब वृन्दावन की किसी एकान्त कुंज अथवा गोवर्धन की निभृत कन्दरा में विहार करते हुए आप दोनों की रम्यातिरम्य झाँकी का निकट से दर्शन करूँगा। किशोर-किशोरी रूप में माता-पिता के परवश होने के कारण जब आप दोनों को एक दूसरे का दर्शन दुर्लभ होगा, उस समय एक दूसरे के संदेश रूप अमृतमय मधु का पान कराकर मैं आप दोनों को कब आह्लादित करूँगा? अहा! वृन्दावन के गहन प्रदेश में जब आप दोनों एक

दूसरे को अधीर होकर ढूँढ़ रहे होंगे, उस समय आपका मिलन कराके मै कब आप दोनो से अत्यन्त चित्ताकर्षक पुरस्कार प्राप्त करूँगा? आप दोनों जिस समय अपने अमूल्य हारों की बाजी लगाकर खेल रहे होंगे और अपनी-अपनी विजय की घोषणा करते हुए एक दूसरे के हार को छीनने के लिए व्यग्र होकर विवाद कर रहे होंगे, ऐसे अवसर पर आपके इस प्रेम-कलह का दर्शन करके मै कब निहाल होऊँगा? जब आप किसी एकान्त कुंज मे पुष्पविनिर्मित शय्या पर पौढ़ रहे होंगे। उस समय आप दोनों के चरणों का संवाहन करके यह जन कब कृतकृत्य होगा? अहा! वह दिन कब होगा, जब किसी लता-मण्डल में प्रेमकलहजनित संघर्ष से टूटे हुए आपके अमूल्य हारों को पुन: पिरोने के लिए आप दोनों मुझे आदेश देंगे? हे वृन्दावनेश्वर एवं हे वृन्दावनेश्वरी। वह दिन कब होगा, जब प्रेम-रस-प्रवाह से अस्त-व्यस्त आप दोनों के केश-कलापों का मोरपंखों के द्वारा मै श्रृंगार करूँगा? मिलन-रस-दक्ष आप दोनों के वदनारविन्द का श्रृंगार जब मिट जायेगा, उस समय आपके ललाटदेश को तिलक से अलंकृत करके मै कब अपने मन की साध पूरी करूँगा? हे देवशिरोमणे! कुंजमण्डप मे आपके वक्ष:स्थल को वनमालाओं से और हे देवि! आपके नेत्रों को काजल से यह दीन जन कब सम्यलंकृत करेगा ! सुनहले ताम्बूलदलों का चूर्ण बना कर यह दीन जन कब आप दोनो के कमल सदृश मुखो मे अपने हाथ से अर्पित करेगा?॥३८–४२॥

कहाँ तो मै पापाचारी और कहाँ आपसे इस प्रकार की कृपा के लिए प्रार्थना करना। इन दोनों में कोई संगति नहीं है, परन्तु मेरा क्या वश है, आप दोनो की अनुपम माधुरी जड़ चेतन वर्ग में से किसको उन्मत नही बना देती? जिस कृपा के कारण यह जीव सर्वथा अयोग्य होने पर भी वृन्दावनवास कर रहा है। उसी कृपा से प्रेरित होकर हे स्वामिन् एवं स्वामिनी! मुझे अभिलषित सिद्धि प्रदान करे! हे वृन्दावन विहारी श्रीराधा-कृष्ण! यद्यपि यह जन्तु इस कार्पण्य पंजिका (दैन्योक्ति) का केवल वाणी से ही उच्चारण कर रहा है (इसके भीतरी दीनता का आभास भी नही है), फिर भी आप दोनों की कृपा से इसका मनोरथ अवश्य पूर्ण हो।।४३–४५॥

।। श्री मद्रूपगोस्वामी विरचित श्री कार्पण्य पञ्जिका स्तोत्र सम्पूर्ण ।।

गोपी-गीत

(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध १०, अध्याय ३१)

संगति

'प्रणयगीत' के बाद यह 'गोपीगीत' है। भगवान् ने गोपियों के हृदय के प्रेम को आवरणरहित कर दिया। परन्तु विहार में उनके मन में 'काम' आने लगा। 'अहं सुखी' यह अभिमान आया। यह आया इसलिए कि प्रियतम पर से दृष्टि हटकर अपने पर चली गयी। यह प्रेम में विघ्न है। जो अपनेमें रस लेने लगा वह प्रेम का अधिकारी कहाँ?

श्रीकृष्ण ने सम्मान दिया गोपियों को; स्वयं उनके इशारे पर नाचने लगे। गोपियों ने समझा कि हमारी सुन्दरता मधुरता के कारण ये हमारे वश में हो गये हैं। 'आत्मानं मेनिरे स्त्रीणां मानिन्योन्यधिकं भुवि।'

वियोग के बिना संयोग का रस आता ही नहीं। इस प्रकार गर्व-विघ्न को नष्ट करने तथा सुप्रसन्न करने के लिए श्रीकृष्णचन्द्र वहीं अन्तर्धान हो गये। 'प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत'।

अब जब गोपियों ने देखा कि हमारे परम प्रियतम हमारे मध्य नहीं है तब वे व्याकुल हो गयीं- अपनी सब सुध-बुध भूल गयीं। संयोग के समय उनके भावों में भले ही कुछ अन्तर रहा हो, अब इस वियोग में उनके भाव सर्वथा एक हो गये हैं। सबकी-सब एक ही बात चाहती हैं: मदनमोहन श्रीश्यामसुन्दर शीघ्र प्रकट हों और उनकी मुख चन्द्रिका से हमारा यह ताप प्रशमित हो। इस प्रकार सब का भाव, सब का चित्त एक हो जाने से उनके संगीत का स्वर भी एक हो गया- उनकी हृत्तंत्री बज उठी:

गोप्यः ऊचुः

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।

दयित दृश्यतां दिक्षु तावका-
स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥१॥

श्रीकृष्ण के विरह में व्याकुल वे प्रेममयी गोपियाँ गाने लगीं- हे प्रियतम! तुम्हारे प्रकट होने के कारण इस व्रज का गौरव वैकुण्ठ आदि दिव्यलोकों से भी अधिक हो गया है; तभी तो अखिल सौन्दर्य-माधुर्य की दिव्य मूर्ति श्रीलक्ष्मीजी अपने नित्य निवास वैकुण्ठ को छोड़कर इस व्रज को सुशोभित करती हुई यहाँ निरन्तर निवास कर रही हैं। इस महान् सुखसे पूर्ण सौभाग्यमय व्रज में हम गोपियाँ ही ऐसी हैं, जो तुम्हारी होकर भी, तुममें अपने प्राणों को पूर्णरूप से समर्पण करके भी वन-वन भटककर सब ओर तुम्हें ढूंढ रही हैं, पर तुम मिल नहीं रहे हो। विरहज्वाला से जलती हुई भी इसी आशासे हम सर्वथा भरम नहीं हो रही हैं कि तुम शीघ्र मिलोगे! अतएव अब तुम तुरंत दिख जाओ ॥१॥

शरदुदाशये साधुजातसत्-
सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका
वरद निघ्नतो नेह किं वधः ॥२॥

हे हमारे रसेश्वर! हे वर देने वालों में श्रेष्ठ! हम तुम्हारी बिना मोल की दासियाँ हैं। तुम शरदऋतु के सरोवर में खिले हुए उत्कृष्ट जाति के परम सुन्दर कमलकोशों की कर्णिका की सौन्दर्य सुषमा को चुराने वाले अपने नेत्रों की मार से हमें मार चुके हो। इस जगतमें इस प्रकार नेत्रों से किसी को मार डालना क्या वध नहीं हैं ? ॥२॥

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्
वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतोभया-
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः॥३॥

हे पुरुषश्रेष्ठ! कालियहृदके विषमय जलपान के कारण होनेवाली मृत्यु से, अघासुरसे, इन्द्र की वर्षा, आँधी अथवा तृणावर्त दैत्यसे, तथा व्रजपातसे, भीषण दावानलसे, अरिष्टासुर और मय के पुत्र व्योमासुर

आदिसे और इसी प्रकारके अनेक भयों से तुमने ही तो बार-बार हमारी रक्षा की थी। फिर आज तुम्हीं अपनी विरह ज्वाला से हमें क्यों भस्म कर रहे हो ? ॥३॥

न खलु गोपिकानन्दनो भवा-
नखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान् सात्वतां कुल ॥४॥

हम जानती हैं कि आप निश्चय ही केवल यशोदा मैया के लाला ही नहीं हैं, अपितु समस्त प्राणियोंके अन्तरात्मा के साक्षी हैं। ब्रह्माजीकी प्रार्थना सुनकर विश्व की रक्षा के लिये ही आप यदुकुलमें आर्विभूत हुए हैं। इस प्रकार विश्वभर की रक्षा के लिये अवतीर्ण होकर भी आप हमारे प्रति इतने निर्दय होकर हमें क्यों मार रहे हैं ? ॥४॥

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।
करसरोरुहं कान्त कामदं
शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥५॥

हे यादवों में श्रेष्ठ! संसार से- जन्म-मरण के चक्र से भयभीत होकर जो प्राणी तुम्हारे चरणों की शरण में आ जाते हैं, तुम्हारे कर-कमल उनको अभय कर देते हैं। श्रीलक्ष्मीजी के कर-कमल को धारण करने वाला तथा सबकी समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला वह अपना कर-कमल हमारे सिर पर रख दो- शीघ्र दर्शन देकर हमें भी अभय कर दो ॥५॥

व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां
निजजनस्मयध्वंसनस्मित।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो
जलरुहाननं चारु दर्शय ॥६॥

हे व्रजवासियों के दुःखों का नाश करने वाले वीरशिरोमणि! तुम्हारी मधुर मन्द मुसकान तुम्हारे प्रेमीजनों के गर्व का ध्वंस करने-वाली है। हे हमारे प्राणसखा! हम सब तुम्हारी दासियाँ हैं, हमें अवश्य प्रेमदान दो और हम अबलाओं को अपना मनोहर मुखकमल दिखलाकर सुखी करो ॥६॥

प्रणतदेहिनां पापकर्शनं
तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं
कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥७॥

तुम्हारे जो चरण-कमल शरण में आये हुए मनुष्यों के समस्त पापों को नष्ट कर डालते हैं, जो समस्त सौन्दर्यश्री के धाम हैं- श्रीलक्ष्मीजी के परम आश्रयभूत हैं, जो घास चरने वाले गौ-वत्सों के पीछे-पीछे चलते हैं तथा जिन्होंने कालियानाग के फणों पर चढ़कर नृत्य किया था, उन अपने चरण-सरोजों को हमारे वक्षःस्थल पर पधरा दो। हमारे हृदय तुम्हारे विरह की ज्वाला से जल रहे हैं, इस प्रकार चरण-सरोजों को पधरा कर उस जलन को मिटा दो। ॥७॥

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया
बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यती-
रधरसीधुनाऽऽप्यायस्व नः ॥८॥

हे कमलनयन! तुम्हारे वचन बड़े ही मधुर हैं, उनका एक-एक पद परम मनोहर है। बड़े-बड़े पण्डित भी उनके गाम्भीर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। उन वचनों से हम सब गोपियाँ मोहित हो रही हैं। हम सभी तुम्हारे चरणों की किंकरियाँ हैं। हमारे प्राण निकले जा रहे हैं। हे दानवीर! तुम अपनी दिव्य मधुर अधर-सुधा पिलाकर हम सबको आप्यायित करो और जीवनदान दो ॥८॥

नव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥९॥

हे प्राणेश्वर! तुम्हारी लीला-कथा अमृतमयी है। वह जलते हुए प्राणियों को जीवनदान करती है, बड़े-बड़े ब्रह्मज्ञानी कवियों ने उसका गान तथा स्तवन किया है, उसके श्रवण-कीर्तन से सब पापों का नाश होता है। जो श्रवणमात्र से ही प्रेमरूपी परम सम्पति का दान करती हैं, ऐसी अत्यन्त विस्तृत कथा का पृथ्वी पर जो कीर्तन-गान करते हैं, वे जगत में सबसे बड़े

दानी लोग हैं। यह तुम्हारी लीला-कथा की महिमा है। तुम्हारे दर्शन की महिमा तो अवर्णनीय है ॥९॥

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं
विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम्।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः
कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥१०॥

हमारे प्यारे श्यामसुन्दर! तुम्हारे ध्यानमात्र से ही परम आनन्द प्राप्त होता है। फिर हमें तो तुमने अपनी मधुर हँसी, प्रेमभरी दृष्टि तथा लीला-विहार का सुख प्रदान किया था, एकान्त में हमारे साथ हृदयस्पर्शी विनोद तथा प्रेमभरी संकेत-चेष्टाएँ की थीं। अरे छलिया! आज वे ही तुम हमलोगों से छिप गये हो। तुम्हारी वे सभी प्रेमभरी बातें इस समय याद आ रही हैं और हमारे मन को क्षुब्ध कर रही हैं ॥१०॥

चलसि यद व्रजाच्चारयन् पशून्
नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्।
शिलतृणांकुरैः सीदतीति नः
कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥११॥

हमारे प्राणनाथ, जीवनसर्वस्व! तुम्हारे चरण अरुणिमा, मृदुता तथा दिव्य सुगन्ध में कमल के समान अत्यन्त सुन्दर है; जिस समय तुम गौओंको चराते हुए व्रज से वन की ओर आते हो, उस समय यह सोचकर कि तुम्हारे उन अत्यन्त मृदु चरण-कमलों में कुश, काँटे, अंकुर तथा कंकड़ आदि गड़ते होंगे और बड़ी पीड़ा होती होगी, हमलोगों के मन में बड़ी ही व्यथा होती है। यह दशा तो दिन में वनगमन के समय होती है। इस रात्रि के समय तो उन मृदुल चरणों में विशेष पीड़ा हो रही होगी- इस चिन्ता से हमारे प्राण निकले जा रहे हैं। तुम तुरंत यहाँ आकर उनकी रक्षा करो ॥११॥

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलै-
र्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम्।
घनरजस्वलं दर्शयन् मुहु-
र्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥१२॥

हमारे हृदयों को प्रेमबाण से बींध देने में तुम बड़े ही शूरवीर हो। संध्या के समय जब तुम वन से लौटते हो, तब हम देखती हैं कि तुम्हारे मुख

सरोजपर नीली घुंघराली अलकावली छायी हुई है और वह गोधूलि से धूसरित हो रहा है उस समय तुम अपनी उस मुख-माधुरी के हमें बार-बार दर्शन कराकर हमारे मन में प्रेम-व्यथा का संचार कर देते हो। इस प्रकार नित्य ही तुम हमारे हृदयों को प्रेमबाण से बींधा करते हो; पर आज तो उसकी चरम सीमा हो गयी है- पहले तो हमें वेणुगान करके अपने पास बुलाया, हमारे साथ लीला-विहार किया और फिर यों छोड़कर चले गये ॥१२॥

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं
धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपङ्कजं शन्तमं च ते
रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥१३॥

परंतु प्रियतम! हमारे मन की सारी व्यथा का हरण करने वाले भी एकमात्र तुम्हीं हो। तुम्हारे चरण-कमल शरण में आये हुए मनुष्यों के मनोरथों को पूर्ण करने वाले हैं। स्वयं ब्रह्माजी उनका नित्य पूजन करते हैं। विपत्ति के समय ध्यानमात्र से ही वे समस्त विपत्तियों का नाश कर देते हैं और पृथ्वी के तो वे भूषण ही हैं। उन अपने चरण-सरोजों को, हे विहार-सुख देने वाले प्रियतम! हमारे वक्ष-स्थल पर पधरा कर हृदय की सारी व्यथा का नाश कर दो ॥१३॥

सुरतवर्धनं शोकनाशनं
स्वरितवेणुना सुष्ठ चुम्बितम्।
इतररागविस्मारणं नृणां
वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥१४॥

हृदय की व्यथा का हरण करने में समर्थ वीरशिरोमणे! तुम्हारी अधर-सुधा दिव्य सम्भोग-रस को बढ़ाने वाली है, तुरंत ही समस्त शोक-संतापों का शमन करने वाली है, सुन्दर स्वरों में गान करने वाली बाँसुरी उसे सदा भलीभाँति चूमती रहती है। जिसने एक क्षण के लिये एक बिन्दुमात्र भी कभी उसका पान कर लिया, उसकी अन्य समस्त आसक्तियाँ तथा कामनाएँ सदा के लिये विस्मृत हो जाती हैं, ऐसी अपनी वह अधरसुधा हमलोगों में वितरण कर दो- हम सब को पिलाकर कृतार्थ कर दो ॥१५॥

अटति यद् भवानह्नि काननं
त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।

कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते
जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ॥१५॥

प्रियतम! दिन के समय जब तुम गौएँ चराने के लिये वन में चले जाते हो, तब तुम्हें देखे बिना हमारे आधे क्षण का समय भी युग बन जाता है। फिर जब संध्या के समय तुम वन से लौटते हो, तब तुम्हारे घुंघराले केशों से सुशोभित श्रीमुख का हम दर्शन करती हैं। उस समय पलकों का गिरना हमें असह्य हो जाता है; क्योंकि उतने समय तक तुम्हारे दर्शन से नेत्र वञ्चित रहते हैं। इसलिये हमे जान पड़ता है कि नेत्रों पर पलकें बनाने वाला विधाता मूर्ख है ॥१५॥

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवा-
नतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः
कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥१६॥

प्रियतम! तुम कभी अपने प्रेममय स्वभावसे च्युत नहीं होते। तुम चतुर-शिरोमणि भलीभाँति जानते हो कि हम सब तुम्हारे मधुरतम मुरलीगान से मोहित होकर अपने पति-पुत्र, भाई-बन्धु, कुल-परिजन-सबका त्याग करके उनकी इच्छा का अतिक्रमण करके तुम्हारे पास आयी हैं। फिर भी तुम हमें छोड़कर चले गये। अरे कपटी! इस प्रकार की घोर रात्रि के समय शरण में आयी हुई तरुणियों को तुम्हारे अतिरिक्त और कौन त्याग सकता है ॥१६॥

रहसि संविदं हृच्छयोदयं
प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते
महुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥१७॥

प्रियतम! तुमने एकान्त में हमसे प्रेमभरी बातें की हैं, तुम्हारा वह प्रेमालाप, प्रेम की कामना को उदीप्त करने वाला तुम्हारा मुसकाता हुआ मुख कमल, तुम्हारी प्रेम भरी तिरछी चितवन, लक्ष्मीजी का नित्यनिवासधाम तुम्हारा विशाल वक्ष-स्थल इन सभी को देखकर, इनका स्मरण करके हमारी तुमसे मिलने की लालसा अत्यन्त बढ़ गयी है और हमारा मन अधिकाधिक मुग्ध हो रहा है ॥१७॥

व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते
वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां
स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥१८॥

प्रियतम श्यामसुन्दर! तुम्हारा यह व्रज में आविर्भाव व्रज-वासियों के समस्त दुःखों का नाश करने और विश्व का परम कल्याण करने के लिये हैं। हमारे हृदय के समस्त मनोरथ एकमात्र तुम्हीं में केन्द्रित हो गये है, हम तुम्हारे सिवा और कुछ चाहतीं ही नहीं। हम तुम्हारी अपनी ही हैं; हमें अब थोड़ी-सी वह वस्तु दो, जो तुम्हारे निजजनों के हृदयरोगों को सर्वथा नष्ट कर दे ॥१८॥

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताःशनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित्
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥१९॥

प्रियतम! तुम्हारे चरणकमल अत्यन्त सुकुमार हैं, हम उन्हें अपने उरोजों पर भी बहुत ही धीरे से रखती है; हमें डर लगता रहता है कि हमारे कठोर उरोजों से उन कोमल पद-कमलों को कहीं चोट न लग जाय। उन्हीं सुकुमार चरणों से आज हम से छिपकर तुम वन-वन भटक रहे हो। कंकड़-पत्थरों की नोक लगकर उनमें बड़ी पीड़ा हो रही होगी। हमारी बुद्धि इसी चिन्ता से व्याकुल होकर चक्कर खा रही है। प्यारे! हमारे जीवन के जीवन तो एकमात्र तुम्हीं हो हम तुम्हारे लिए जी रही हैं, हम तुम्हारी ही हैं ॥१९॥

श्री शुक-उवाच

इति गोप्यः प्रगायन्त्यः प्रलपन्त्यश्च चित्रधा
रुरुदुः सुस्वरं राजन् कृष्णदर्शनलालसा ॥१॥
तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥२॥

विक्रीडितं व्रजवधूभिरिदं च विष्णोः
श्रद्धान्वितोऽनुश्रृणुयादथ वर्णयेद्यः।
भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं,
हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेण धीरः॥

(श्रीमद्भागवत १०/३३-४०

बोलिये श्री रास रासेश्वरी व रास रासेश्वर श्री राधामाधव भगवान की जय हो । जयजयकार हो ।

* * *

।। शिक्षागुरु श्रीकृष्ण की शिक्षा-प्रणाली ।।

दृष्टान्त : शारदीय महारास के प्रसंग में जब भगवान अन्तर्धान के पश्चात् प्रकट हुए, तब व्रजांगनाओं ने उनसे तीन कूट-प्रश्न किये हैं-

'इक भजते कौ भजें, एक दिन भजते भजहीं ।
कहो कान्ह ते कौन, जो इन दोउन तजहीं ।।'

भगवान सब प्रश्नों के उत्तर देते हुए तीसरे प्रश्न के उत्तर में बोले- जो किसी को भी नहीं भजते हैं, वे चार प्रकार के हैं, आत्माराम, आप्तकाम, अकृतज्ञ और गुरुद्रोही। प्रश्न हुआ कि 'आप को कौन-सी श्रेणी में रक्खा जाय?' तुरन्त उत्तर मिला- 'किसी में भी नहीं? मैं इन चारों से बाहर हूँ।' गोपी- 'तो आप महानिष्ठुर हैं?' कृष्ण- 'नहीं, मैं महादयालु हूँ?' गोपी- 'तो हमको रुला- मारने का नाम ही क्या दया है?' कृष्ण- 'तो निष्ठुर से प्रेम क्यों करती हो? भूल जाओ न मुझे?' गोपी- 'यह प्रेम भूलने नहीं देता।' कृष्ण- 'अच्छा तो यह बताओ कि- यह तुम्हारा प्रेम मेरे रुलाने से घट तो नहीं गया?' गोपी- घटने की तो बात ही क्या? यह तो और बढ़ गया है!' कृष्ण-' जब पूँजी बढ़ी, धेन बढ़ा तो-सुख आनन्द भी बढ़ा? यह हानि है या लाभ? गोपी- 'लाभ ही है।' कृष्ण- 'तो मैंने तुम्हारे प्रेम की पूँजी को बढ़ाकर तुम्हारा उपकार किया है या अपकार? गोपियाँ निरुत्तर हो गयीं। तब श्रीकृष्ण बोले- 'गोपियों! मैं कृतघ्नी या गुरुद्रोही नहीं हूँ, परमस्नेही और सुहृद हूँ? मैं कठोर क्रूर नहीं, अपितु परम कोमल हूँ। मैंने, तुम्हारी प्रीति के कषाय एवं कचाई को पकाकर उसे मधुर एकरस बना दिया है।' गोपी 'हम लोकवेद की दुर्जर शृंखला को छिन्न-भिन्न कर तुम्हारे समीप आई हैं- हमारी प्रीति में ऐसी क्या कचाई थी कि जिसे पकाने के लिए हमें इतना ताप सहना पड़ा?' कृष्ण- 'गोपियों! आम की कचाई पकाई को आम नहीं जान सकता, माली ही जान सकता है, जिसने

उसे लगाया, बड़े प्रेम से सींचा, बीज से अंकुर, पौधा और वृक्ष बनाया, जब उसमें बौर आये, आँधियाँ लगीं-तो उसके नीचे झोपड़ी डालकर दिनरात उसकी निगरानी करने लगा। जैसे-जैसे फल बड़े होते गये वैसे-वैसे उसकी आशा-अभिलाषाएँ भी बढ़ती गयीं। समय आया, आम पके, तब वर्षों में उसका परिश्रम सफल हुआ- उसको मधुर सरस फल, आस्वादन करने को मिले! व्रजवनिताओ! मैंने ही तुम्हारी हृदयवाटिका में प्रीति का बीज बोया, मैंने ही उसे गोकुल की गली-गली में, गृह-गृह में, वीथि-वीथि में जा-जा कर नाना प्रकार के लीला रस द्वारा सींचा- पुष्पित, पल्लवित किया, जब फल लगे तो माली तुरन्त तोड़कर खाने को नहीं बैठ क्योंकि कच्चा फल खाने से अपने मुख का स्वाद बिगड़े या न बिगड़े, किन्तु फल का तो जीवन ही नष्ट हो जाता है और वह अकृतार्थ रह जाता है। ऐसे माली को क्या चतुर कह सकती हो? ऐसे ही मैं भी फल को पकाता हूँ। पकने से पहले हाथ नहीं लगाता, इसके लिए कोई अकुला कर मुझे क्रूर कहे या कठोर कहे, तो भले ही कहे? मैं अकुला कर अपनी रीति-नीति नहीं छोड़ता, परिणाम स्वरूप रस विकृत न होकर दोनों ओर प्रीति संवर्धन करता है। अन्त में दोनों परम कृतार्थ हो जाते हैं- एक अशेष सेवा द्वारा, दूसरा विशेष आस्वादन द्वारा ।

यह है शिक्षागुरु श्रीकृष्ण की शिक्षा प्रणाली। यह है करुणामय की करुणा का स्वरूप! स्वयं भगवान अर्जुन के प्रति कहते हैं- 'जिस पर मैं अनुग्रह करता हूँ, उसकी धन-सम्पत्ति का हरण, उसको बन्धु-बान्धवों से विच्छेद, उसे लौकिक सुख-साधनों से शून्य करके उसका जीवन दुःखमय बना देता हूँ । इतनी मार पर भी यदि वह मुझ से प्यार नहीं छोड़ता, तब मैं प्रसन्न होकर अपना देवदुर्लभ पद उसे प्रदान करता हूँ ।

करुणामय वरुणालय भगवान की जय हो

(श्रीकृष्णकर्णामृत)

-: श्री राधाकृष्ण दर्शन प्रार्थना मंत्र :-

नमः प्रियायै राधायै ब्रह्मणो वरदायिने।
सर्वेष्टफलरम्याय राधाकृष्णाय मूर्तये।।
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिः प्रणमेत् प्रियाम्।

वाञ्छितं फलं आप्नोति विचरन् व्रजमण्डले।
मुक्ति भागी भवेल्लोकः नित्यदर्शन कारकः॥

-: अनन्तर श्रीराधाकृष्ण दर्शन प्रार्थना मन्त्र :-

हे श्रीराधे! प्रियाजी! आपको नमस्कार है। आप ब्रह्माजी को वर देने वाली हैं। आप दोनों मनोहर, सभी को सभी वांछापूर्ण करने वाले मनोहर श्रीराधाकृष्ण स्वरूप हैं। इस मंत्र का पाठ करके सात बार राधाजी को प्रणाम करे और व्रजमण्डल में विचरण करे, तभी वांछित फल को प्राप्त कर के मुक्ति भागी होकर नित्यदर्शन का सौभाग्य होता है।

(श्रीराधाचरितामृतम्)

* * *

श्री श्रीराधिकायैनमः

श्रीश्रीराधिकासहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीश्रीराधिकायै नमः

श्रीपार्वत्युवाच

देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक ।
यद्यस्ति मयि कारुण्यं यद्यस्ति मयि ते दया ।
यद्यत् त्वया निगदितं तत्सर्वं मे श्रुतं प्रभो ।
गुह्याद् गुह्यतरं यत्तु यत्ते मनसि काशते ॥
त्वया न गदितं यत्तु यस्मै कस्मै कदाचन ।
तस्मात् कथय देवेश सहस्रं नाम चोत्तमम् ॥
श्रीराधाया महादेव्या गोप्या भक्तिप्रसाधनम् ।
ब्रह्माण्डकर्त्री हर्त्री सा कथं गोपीत्वमागता ॥

श्रीमहादेव उवाच

शृणु देवि विचित्रार्थां कथां पापहरां शुभाम् ।
नास्ति जन्मानि कर्माणि तस्या नूनं महेश्वरि॥

यदा हरिश्चरित्राणि कुरुते कार्यगौरवात् ।
तदा विधत्ते रूपाणि हरिसांनिध्यसाधिनी ।।
तस्या गोपीत्वभावस्य कारणं गदितं पुरा ।
इदानीं शृणु देवेशि नाम्नां चैव सहस्रकम् ।।
यन्मया कथितं नैव तन्त्रेष्वपि कदाचन ।
तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामिभक्त्याधार्यं मुमुक्षुभिः ।।
मम प्राणसमा विद्या भाव्यते मे त्वहर्निशम् ।
शृणुष्व गिरिजे नित्यं पठस्व च यथामति ।।
यस्याःप्रसादात् कृष्णस्तुगोलोकेशः परः प्रभुः ।
अस्या नामसहस्रस्य ऋषिर्नारद एव च ।
देवी राधा परा प्रोक्ता चतुर्वर्गप्रसाधिनी ।।

अथ सहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीराधा राधिका कृष्णवल्लभा कृष्णसंवुता ।
वृन्दावनेश्वरी कृष्णप्रिया मदनमोहनी ।।
श्रीमती कृष्णकान्ता च कृष्णानन्दप्रदायिनी ।
यशस्विनी यशोगम्या यशोदानन्दवल्लभा ।।
दामोदरप्रिया गोपी गोपानन्दकरी तथा ।
कृष्णाङ्गवासिनी हृद्या हरिकान्ता हरिप्रिया ।।
प्रधानगोपिका गोपकन्या त्रैलोक्यसुन्दरी ।
वृन्दावनविहारिणी विकासितमुखाम्बुजा ।।
गोकुलानन्दकर्त्री च गोकुलानन्ददायिनी ।
गतिप्रदा गीतगम्या गमनागमनप्रिया ।।
विष्णुप्रिया विष्णुकान्ता विष्णोरङ्गनिवासिनी ।
यशोदानन्दपत्नी च यशोदानन्दगेहिनी ।।
कामारिकान्ता कामेशी कामलालसविग्रहा ।
जयप्रदा जया जीवा जीवानन्दप्रदायिनी ।।
नन्दनन्दनपत्नी च वृषभानुसुता शिवा ।
गणाध्यक्षा गवाध्यक्षा गवां गतिरनुत्तमा ।।

काञ्चनाभा हेमगात्रा काञ्चनाङ्गदधारिणी ।
अशोकाशोकरहिताविशोका शोकनाशिनी ।।
गायत्री वेदमाता च वेदातीता विदुत्तमा ।
नीतिशास्त्रप्रिया नीतिर्गतिर्मतिरभीष्टदा ।।
वेदप्रिया वेदगर्भा वेदमार्गप्रवर्द्धिनी ।
वेदगम्या वेदपरा विचित्रकनकोज्ज्वला ।।
तथोज्ज्वलप्रदानित्या तथैवोज्ज्वलगात्रिका ।
नन्दप्रियानन्दसुताराध्याऽऽनन्दप्रदा शुभा ।।
शुभाङ्गी विमलाङ्गी च विलासिन्यपराजिता ।
जननी जन्मशून्या च जन्ममृत्युजरापहा ।।
गतिर्गतिमतां धात्री धात्र्यानन्दप्रदायिनी ।
जगन्नाथप्रिया शैलवासिनी हेमसुन्दरी ।।
किशोरी कमला पद्मा पद्महस्ता पयोदरा ।
पयस्विनी पयोदात्री पवित्रा सर्वमङ्गला ।।
महाजीवप्रदा कृष्णकान्ता कमलसुन्दरी ।
विचित्रवासिनी चित्रवासिनी चित्ररूपिणी ।।
निर्गुणा सुकुलीना च निष्कुलीना निराकुला ।
गोकुलान्तरगेहा च योगानन्दकरी तथा ।।
वेणुवाद्या वेणुरतिर्वेणुवाद्यपरायणा ।
गोपालस्य प्रिया सौम्यरूपासौम्यकुलोद्वहा ।।
मोहामोहा विमोहा च गतिनिष्ठा गतिप्रदा ।
गीर्वाणवन्द्या गीर्वाणा गीर्वाणगणसेविता ।।
ललिता च विशोका च विशाखा चित्रमालिनी ।
जितेन्द्रिया शुद्धसत्त्वा कुलीना कुलदीपिका ।।
दीपप्रिया दीपदात्री विमला विमलोदका ।
कान्तारवासिनी कृष्णा कृष्णचन्द्रप्रिया मतिः।।
अनुत्तरा दुःखहन्त्री दुःखकर्त्री कुलोद्वहा ।
मतिर्लक्ष्मीर्धृतिर्लज्जा कान्तिः ।

पुष्टिः स्मृतिः क्षमा ।।
क्षीरोदशायिनी देवी देवारिकुलमर्दिनी ।
वैष्णवी च महालक्ष्मीः कुलपूज्या कुलप्रिया ।
संहर्त्री सर्वदैत्यानां सावित्री वेदगामिनी ।
वेदातीता निरालम्बा निरालम्बगणप्रिया ।।
निरालम्बजनैः पूज्या निरालोका निराश्रया ।
एकाङ्गी सर्वगा सेव्या ब्रह्मपत्नी सरस्वती ।।
रासप्रिया रासगम्या रासाधिष्ठातृदेवता ।
रसिका रसिकानन्दा स्वयं रासेश्वरी परा ।।
रासमण्डलमध्यस्था रासमण्डलशोभिता ।
रासमण्डलसेव्या च रासक्रीडामनोहरा ।।
पुण्डरीकाक्षनिलया पुण्डरीकाक्षगेहिनी ।
पुण्डरीकाक्षसेव्या च पुण्डरीकाक्षवल्लभा ।।
सर्वजीवेश्वरी सर्वजीववन्द्या परात्परा ।
प्रकृतिः शम्भुकान्ता च सदाशिवमनोहरा ।।
क्षुत् पिपासा दया निद्रा
क्षान्तिः श्रान्तिः क्षमाकुला ।
वधूरूपा गोपपत्नी भारती सिद्धयोगिनी ।।
सत्यरूपा नित्यरूपा नित्याङ्गी नित्यगेहिनी ।
स्थानदात्री तथा धात्री महालक्ष्मीःस्वयंप्रभा ।।
सिन्धुकन्याऽऽस्थानदात्री
द्वारकावासिनी तथा ।
बुद्धिः स्थितिः स्थानरूपा सर्वकारणकारणा ।।
भक्तप्रिया भक्तगम्या भक्तानन्दप्रदायिनी ।
भक्तकल्पद्रुमातीता तथातीतगुणा तथा ।
मनोऽधिष्ठातृदेवी च कृष्णप्रेमपरायणा ।
निरामया सौम्यदात्री तथा मदनमोहिनी ।।
एकानंशाशिवा क्षेमा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ।

ईश्वरी सर्ववन्द्या च गोपनीया शुभंकरी ।।
पालिनी सर्वभूतानां तथा कामान्नहारिणी ।
सद्योमुक्तिप्रदा देवी वेदसारा परात्परा ।।
हिमालयासुता सर्वा पार्वती गिरिजा सती ।
दक्षकन्या देवमातामन्दलज्जा हरेस्तनूः ।।
वृन्दारण्यप्रिया वृन्दा वृन्दावनविलासिनी ।
विलासिनी वैष्णवी च ब्रह्मलोकप्रतिष्ठिता ।।
रुक्मिणी रेवती सत्यभामा जाम्बवती तथा ।
सुलक्ष्मणा मित्रविन्दा कालिन्दी जह्नुकन्यका।
परिपूर्णा पूर्णतरा तथा हैमवती गतिः ।
अपूर्वा ब्रह्मरूपा च ब्रह्माण्डपरिपालिनी ।।
ब्रह्माण्डभाण्डमध्यस्था ब्रह्माण्डभाण्डरूपिणी ।
अण्डरूपाण्डमध्यस्था तथाण्डपरिपालिनी ।।
अण्डबाह्याण्डसंहर्त्री शिवब्रह्महरिप्रिया ।
महाविष्णुप्रिया कल्पवृक्षरूपा निरन्तरा ।।
सारभूता स्थिरा गौरी गौरीड्डी शशिशेखरा ।
श्वेतचम्पकवर्णाभा शशिकोटिसमप्रभा ।।
मालतीमाल्यभूषाढ्यामालतीमाल्यधारिणी ।
कृष्णस्तुताकृष्णकान्तावृन्दावनविलासिनी ।।
तुलस्यधिष्ठातृदेवी संसारार्णपारदा ।
सारदाऽऽहारदाम्भोदा यशोदा गोपनन्दिनी ।।
अतीतगमना गौरी परानुग्रहकारिणी ।
करुणार्णवसम्पूर्णा करुणार्णवधारिणी ।।
माधवी माधवमनोहारिणी श्यामवल्लभा ।
अन्धकारभयध्वस्ता मङ्गल्या मङ्गलप्रदा ।।
श्रीगर्भा श्री प्रदा श्रीशा श्रीनिवासाच्युतप्रभा ।
श्रीरूपा श्रीहरा श्रीदा श्रीकामा श्रीस्वरूपिणी।।
श्रीदामानन्ददात्री च श्रीदामेश्वरवल्लभा ।

श्रीनितम्बा श्रीगणेशा श्रीस्वरूपाश्रितां श्रुतिः ।
श्रीक्रियारूपिणी श्रीला श्रीकृष्णभजनान्विता ।
श्रीराधा श्रीमती श्रेष्ठा श्रेष्ठरूपा श्रुतिप्रिया ।।
योगेशी योगमाता च योगातीता युगप्रिया ।
योगप्रिया योगगम्या योगिनीगणवन्दिता ।।
जपाकुसुमसंकाशा दाडिमीकुसुमोपमा ।
नीलाम्बरधरा धीरा धैर्यरूपधराधृतिः ।।
रत्नसिंहासनस्था च रत्नकुण्डलभूषिता ।
रत्नालंकारसंयुक्ता रत्नमालाधरा परा ।।
रत्नेन्द्रसारहाराढ्या रत्नमालाविभूषिता ।
इन्द्रनीलमणिन्यस्तपादपद्मशुभा शुचिः ।।
कार्तिकी पौर्णमासी च अमावस्या भयापहा ।
गोविन्दराजगृहिणी गोविन्दगणपूजिता ।।
वैकुण्ठनाथगृहिणी वैकुण्ठपरमालया ।
वैकुण्ठदेवदेवाढ्या तथा वैकुण्ठसुन्दरी ।।
मदालसा वेदवती सीता साध्वी पतिव्रता ।
अन्नपूर्णा सदानन्दरूपा कैवल्यसुन्दरी ।।
कैवल्यदायिनी श्रेष्ठा गोपीनाथमनोहरा ।
गोपीनाथेश्वरी चण्डी नायिकानयनान्विता ।।
नायिका नायकप्रीता नायकानन्दरूपिणी ।
शेषा शेषवती शेषरूपिणी जगदम्बिका ।।
गोपालपालिकामायाजायाऽऽनन्दप्रदातया ।
कुमारी यौवनानन्दा युवती गोपसुन्दरी ।।
गोपमाता जानकी च जनकानन्दकारिणी ।
कैलासवासिनी रम्भा वैराग्यकुलदीपिका ।।
कमलाकान्तगृहिणी कमला कमलालया ।
त्रैलोक्यमाताजगतामधिष्ठात्रीप्रियाम्बिका ।।
हरकान्ता हरता हरानन्दप्रदायिनी ।

हरपत्नी हरप्रीता हरतोषणतत्परा ।।
हरेश्वरी रामरता रामा रामेश्वरी रमा ।
श्यामला चित्रलेखा च तथा भुवनमोहिनी ।।
सुगोपी गोपवनिता गोपराज्यप्रदा शुभा ।
अन्नपूर्णा माहेयी मत्स्याराजसुता सती ।।
कौमारी नारसिंह च वाराही नवदुर्गिका ।
चञ्चलाचञ्चलामोदा नारी भुवनसुन्दरी ।।
दक्षयज्ञहरा दाक्षी दक्षकन्या सुलोचना ।
रतिरूपा रतिप्रीता रतिश्रेष्ठा रतिप्रदा ।
रतिलक्षणगेहस्था विरजा भुवनेश्वरी ।
शङ्कास्पदा हरेर्जाया जामातृ कुलवन्दिता ।।
वकुला वकुलामोदधारिणी यमुनाजया ।
विजया जयपत्नी च यमलार्जुनभञ्जिनी ।।
वक्रेश्वरी वक्ररूपा वक्रवीक्षणवीक्षिता ।
अपराजिता जगन्नाथा जगन्नाथेश्वरी यतिः ।।
खेचरी खेचरसुता खेचरत्वप्रदायिनी ।
विष्णुवक्षःस्थलस्था च विष्णुभावनतत्परा ।।
चन्द्रकोटिसुगात्री च चन्द्राननमनोहरा ।
सेवा सेव्याशिवाक्षेमा तथा क्षेमंकरी वधूः ।।
यादवेन्द्रवधूः शैब्या शिवभक्ता शिवान्विता ।
केवला निष्कला सूक्ष्मा महाभीमाभयप्रदा ।।
जीमूतरूपा जैमूती जितामित्रप्रमोदिनी ।
गोपालवनिता नन्दा कुलजेन्द्रनिवासिनी ।।
जयन्ती यमुनाङ्गी च यमुनातोषकारिणी ।
कलिकल्मषभङ्गा च कलिकल्मषनाशिनी ।।
कलिकल्मषरूपा च नित्यानन्दकरी कृपा ।
कृपावती कुलवती कैलासाचलवासिनी ।।
वामदेवी वामभागा गोविन्दप्रियकारिणी ।

नरेन्द्रकन्या योगेशी योगिनी योगरूपिणी ।।
योगसिद्धा सिद्धरूपा सिद्धक्षेत्रनिवासिनी ।
क्षेत्राधिष्ठातृरूपा च क्षेत्रातीता कुलप्रदा ।।
केशवानन्ददात्री च केशवानन्ददायिनी ।
केशवा केशवप्रीता केशवी केशवप्रिया ।।
रासक्रीड़ाकरी रासवासिनी राससुन्दरी ।
गोकुलान्वितदेहा च गोकुलत्वप्रदायिनी ।।
लवङ्गनाम्नी नारङ्गी नारङ्गकुलमण्डना ।
एलालवङ्गकर्पूरमुखवासमुखान्विता ।।
मुख्या मुख्यप्रदामुख्यरूपा मुख्यानेवासिनी।
नारायणी कृपातीता करुणामयकारिणी ।।
कारुण्या करुणा कर्णा गोकर्णा नागकर्णिका ।
सर्पिणी कौलिनी क्षेत्रवासिनी जगदन्वया ।।
जटिला कुटिला नीला नीलाम्बरधरा शुभा ।
नीलाम्बरविधात्री च नीलकण्ठप्रिया तथा ।।
भगिनीभागिनीभोग्या कृष्णभोग्या भगेश्वरी ।
बलेश्वरी बलाराध्या कान्ता कान्तनितम्बिनी ।।
नितम्बिनी रूपवती युवती कृष्णपीवरी ।
विभावरी वेत्रवती संकटा कुटिलालका ।।
नारायणप्रिया शैला सृक्कणीपरिमोहता ।
दृक्पातमोहिता प्रातराशिनी नवनीतिका ।।
नवीना नवनारी च नारङ्गफलशोभिता ।
हैमी हेममुखी चन्द्रमुखी शशिसुशोभना ।।
अर्द्धचन्द्रधरा चन्द्रवल्लभा रोहिणी तमिः ।
तिमिंगिलकुलामोदमत्स्यरूपाङ्गहारिणी ।।
कारिणी सर्वभूतानां कार्यातीता किशोरिणी ।
किशोरवल्लभा केशकारिका कामकारिका ।।
कामेश्वरी कामकला कालिन्दी कूलदीपिका ।

कलिन्दतनयातीरवासिनी तीरगेहिनी ।।
कादम्बरीपानपरा कुसुमामोदधारिणी ।
कुमुदा कुमुदानन्दा कृष्णेशी कामवल्लभा ।।
तर्काली वैजयन्ती च बिम्बदाडिम्बरूपिणी ।
बिल्ववृक्षप्रिया कृष्णाम्बरा बिल्वोपमस्तनी ।।
बिल्वात्मिका बिल्ववसुर्बिल्ववृक्षनिवासिनी ।
तुलसीतोषिका तैतिलानन्दपरितोषिका ।
गजमुक्ता महामुक्ता महामुक्तिफलप्रदा ।
अनङ्गमोहिनी शक्तिरूपा शक्तिस्वरूपिणी ।।
पद्मशक्तिस्वरूपा च शैशवानन्दकारिणी ।
गजेन्द्रगामिनी श्यामलतानङ्गालता तथा ।।
योषिच्छक्तिस्वरूपा च योषिदानन्दकारिणी ।
प्रेमप्रिया प्रेमरूपा प्रेमानन्दतरङ्गिणी ।।
प्रेमहारा प्रेमदात्री प्रेमशक्तिमयी तथा ।
कृष्णप्रेमवती धन्या कृष्णप्रेमतरङ्गिणी ।।
प्रेमभक्तिप्रदा प्रेमा प्रेमानन्दतरङ्गिणी ।
प्रेमक्रीड़ापरीताङ्गी प्रेमभक्तितरङ्गिणी ।।
प्रेमार्थदायिनी सर्वश्वेता नित्यरङ्गिणी ।
हावभावान्विता रौद्रा रूद्रानन्दप्रकाशिनी ।।
कपिला शृङ्खला केशपाशसम्बन्धिनी घटी ।
कुटीरवासिनी धूम्रा धूम्रकेशा जलोदरी ।।
ब्रह्माण्डगोचरा ब्रह्मस्वरूपिणी भवभाविनी ।
संसारनाशिनी शैवा शैवलानन्ददायिनी ।।
शिशिरा हेमरागाढ्या मेघरूपातिसुन्दरी ।
मनोरमा वेगवती वेगाढ्या वेदवादिनी ।।
दयान्विता दयाधारा दयारूपा सुसेविनी ।
किशोरसङ्गसंसर्गा गौरचन्द्रानना कला ।।
कलाधिनाथवदना कलानाथशिरोहिणी ।

विरागकुशला हेमपिङ्गला हेममण्डना ।।
भाण्डीरतालवनगा कैवर्ती पीवरी शुकी ।
शुकदेवगुणातीता शुकदेवप्रिया सखी ।।
विकलोत्कर्षिणी कोषा कौशेयाम्बरधारिणी ।
कौषावरी कोषरूपा जगदुत्पत्तिकारिका ।।
सृष्टिस्थितिकरी संहारिणी संहारकारिणी ।
केशशैवलधात्री च चन्द्रगात्रा सुकोमला ।।
पद्माङ्गरागसंरागा विन्ध्याद्रिपरिवासिनी ।
विन्ध्यालया श्यामसखी सखीसंसाररागिणी ।
भूता भविष्या भव्या च भव्यगात्रा भवातिगा ।
भवनाशान्तकारिण्याकाशरूपा सुवेशिनी ।।
रतिरङ्गपरित्यागा रतिवेगा रतिप्रदा ।
तेजस्विनी तेजोरूपा कैवल्यपथदा शुभा ।।
भक्तिहेतुर्मुक्तिहेतुर्लङ्घिनी लङ्घनक्षमा ।
विशालनेत्रा वैशाली विशालकुलसम्भवा ।।
विशालगृहवासा च विशालबदरीरतिः ।
भक्त्यतीता भक्तिगतिर्भक्तिदा शिवभक्तिदा ।।
शिवभक्तिस्वरूपा च शिवार्द्धाङ्गविहारिणी ।
शिरीषकुसुमामोदा शिरीषकुसुमोज्ज्वला ।।
शिरीषमृद्वी शैरीषी शिरीषकुसुमाकृतिः ।
वामाङ्गहारिणी विष्णोः शिवभक्तिसुखान्विता ।।
विजिता विजितामोदा गणगा गणतोषिता ।
हयास्या हेरम्बसुता गणमाता सुखेश्वरी ।।
दुःखहन्त्री दुःखहरा सेवितेप्सितसर्वदा ।
सर्वज्ञत्वविधात्री च कुलक्षेत्रनिवासिनी ।।
लवङ्गा पाण्डवसखी सखीमध्यनिवासिनी ।
ग्राम्यगीता गया गम्या गमनातीतनिर्भरा ।।
सर्वाङ्गसुन्दरी गङ्गा गङ्गाजलमयी तथा ।

गङ्गेरिता पूतगात्रा पवित्रकुलदीपिका ।।
पवित्रगुणशीलाढ्या पवित्रानन्ददायिनी ।
पवित्रगुणसीमाढ्या पवित्रकुलदीपिनी ।
कल्पमाना कंसहरा विन्ध्याचलनिवासिनी ।
गोवर्द्धनेश्वरी गोवर्द्धनहास्या हयाकृतिः ।।
मीनावतारा मीनेशी गगनेशी हया गजी ।
हरिणी हारिणी हारधारिणी कनकाकृतिः ।।
विद्युत्प्रभा विप्रमाता गोपमाता गयेश्वरी ।
गदेश्वरी गवेशी च गवीशी गतिवासिनी ।।
गतिज्ञा गीतकुशला दनुजेन्द्रनिवारिणी ।
निर्वाणधात्री नैर्वाणी हेतूयुक्ता गयोत्तरा ।।
पर्वताधिनिवासा च निवासकुशला तथा ।
संन्यासधर्मकुशला संन्यासेशी शरन्मुखी ।।
शरच्चन्द्रमुखी श्यामहारा क्षेत्रनिवासिनी ।
वसन्तरागसंरागा वसन्तवसनाकृतिः ।।
चतुर्भुजा षड्भुजा च द्विभुजा गौरविग्रहा ।
सहस्रास्या विहास्या च मुद्रास्या मुददायिनी ।।
प्राणप्रिया प्राणरूपा प्राणरूपिण्यपावृता ।
कृष्णप्रीता कृष्णरता कृष्णतोषणतत्परा ।।
कृष्णप्रेमरता कृष्णभक्ता भक्तफलप्रदा ।
कृष्णप्रेमा प्रेमभक्ता हरिभक्तिप्रदायिनी ।।
चैतन्यरूपा चैतन्यप्रिया चैतन्यरूपिणी ।
उग्ररूपा शिवक्रोडा कृष्णक्रोडा जलोदरी ।।
महोदरी महादुर्गकान्तारसुस्थवासिनी ।
चन्द्रावली चन्द्रकेशी चन्द्रप्रेमतरङ्गिणी ।।
समुद्रमथनोद्भूता समुद्रजलवासिनी ।
समुद्रामृतरूपा च समुद्रजलवासिका ।।
केशपाशरता निद्रा क्षुधा प्रेमतरङ्गिका ।

दूर्वादलश्यामतनुर्दूर्वादलतनुच्छविः ।।
नागरी नागरारागा नागरानन्दकारिणी ।
नागरालिङ्गनपरा नागराङ्गमङ्गला ।।
उच्चनीचा हैमवतीप्रिया कृष्णतरङ्गदा ।
प्रेमालिङ्गनसिद्धाङ्गीसिद्धसाध्यविलासिका ।।
मङ्गलामोदजननी मेखलामोदधारिणी ।
रत्ननञ्जीरभूषाङ्गी रत्नभूषणभूषणा ।।
जम्बालमालिका कृष्णप्राणा प्राणविमोचना ।
सत्यप्रदा सत्यवती सेवकानन्ददायिका ।।
जगद्योनिर्जगद्बीजा विचित्रमणिभूषणा ।
राधारमणकान्ता च राध्या राधनरूपिणी ।।
कैलासवासिनी कृष्णप्राणसर्वस्वदायिनी ।
कृष्णावतारनिरता कृष्णभक्तफलार्थिनी ।।
याचकायाचकानन्दकारिणीयावकोज्ज्वला ।
हरिभूषणभूषाढ्याऽऽनन्दयुक्ताऽऽर्द्रपादगा ।।
हे-हे तालधरा थै-थै-शब्दशक्तिप्रकाशिनी ।
हे-हे शब्दस्वरूपा च ही-ही-वाक्यविशारदा ।।
जगदानन्दकर्त्री च सान्द्रानन्दविशारदा ।
पण्डिता पण्डितगुणा पण्डितानन्दकारिणी ।।
परिपालनकर्त्री च तथा स्थितिविनोदिनी ।
तथा संहारशब्दाढ्या विद्वज्जनमनोहरा ।।
विदुषां प्रीतिजननी विद्वत्प्रेमविवर्द्धिनी ।
नादेशी नादरूपा च नादविन्दुविधारिणी ।।
शून्यस्थानस्थिता शून्यरूपपादपवासिनी ।
कार्तिकव्रतकर्त्री च वसनाहारिणी तथा ।।
जलाशया जलतला शिलातलनिवासनी ।
क्षुद्रकीटाङ्गसंसर्गा सङ्गदोषविनाशिनी ।।

कोटिकंदर्पलावण्या कोटिकंदर्पसुन्दरी ।
कंदर्पकोटिजननी कामबीजप्रदायिनी ।।
कामशास्त्रविनोदा च कामशास्त्रप्रकाशिनी ।
कामप्रकाशिका कामिन्यणिमाद्यष्टसिद्धिदा ।।
यामिनी यामिनीनाथवदना यामिनीश्वरी ।
यागयोगहरा भुक्तिमुक्तिदात्री हिरण्यदा ।।
कपालमालिनी देवी धामरूपिण्यपूर्वदा ।
कृपान्विता गुणागौण्या गुणातीतफलप्रदा ।।
कूष्माण्डभूतवेतालनाशिनी शरदान्विता ।
शीतला शबला हेला लीला लावण्यमङ्गला ।
विद्यार्थिनी विद्यमाना विद्या विद्यास्वरूपिणी ।
आन्वीक्षिकीशास्त्ररूपाशास्त्रसिद्धान्तकारिणी ।।
नागेन्द्रा नागमाता च क्रीडाकौतुकरूपिणी ।
हरिभावनशीला च हरितोषणतत्परा ।।
हरिप्राणा हरप्राणा शिवप्राणा शिवान्विता ।
नरकार्णवसंहर्त्री नरकार्णवनाशिनी ।।
नरेश्वरी नरातीता नरसेव्या नराङ्गना ।
यशोदानन्दनप्राणवल्लभा हरिवल्लभा ।।
यशोदानन्दवारम्या यशोदानन्दनेश्वरी ।
यशोदानन्दनाक्रीड़ा यशोदाक्रोडवासिनी ।।
यशोदानन्दनप्राणा यशोदानन्दनार्थदा ।
वत्सला कोशला काला करुणार्णवरूपिणी ।।
स्वर्गलक्ष्मीर्भूमिलक्ष्मीर्द्रौपदी पाण्डवप्रिया ।
तथार्जुनसखी भौमी भैमी भीमकुलोद्भवा ।।
भुवनामोहना क्षीणा पानासक्तस्तरा तथा ।
पानार्थिनी पानपात्रा पानपानन्ददायिनी ।।
दुग्धमन्थनकर्माढ्या दधिमन्थनतत्परा ।
दधिभाण्डार्थिनीकृष्णकोधिनी नन्दनाङ्गना ।।

घृतलिप्ता तक्रयुक्ता यमुनापारकौतुका ।
विचित्रकथका कृष्णहास्यभाषणतत्परा ।
गोपाङ्गनावेष्टिता च कृष्णसङ्गार्थिनी तथा ।
रासासक्ता रासरतिरासवासक्तवासना ।।
हरिद्रा हारिता हारिण्यानन्दार्पितचेतना ।
निश्चैतन्या च निश्चेता तथा दारुहरिद्रिका ।।
सुबलस्य स्वसा कृष्णभार्या भाषातिवेगिनी ।
श्रीदामस्य सखी दाम दामिनी दामधारिणी ।।
कैलासिनी केशिनी च हरिदम्बरधारिणी ।
हरिसांनिध्यदात्री च हरिकौतुकमङ्गला ।।
हरिप्रदा हरिद्वारा यमुनाजलवासिनी ।
जैत्रप्रदा जितार्थी च चतुरा चातुरी तमी ।।
तमिसाऽऽतपरूपा च रौद्ररूपा यशोऽर्दिनी ।
कृष्णार्दिनीकृष्णकलाकृष्णानन्दविधायिनी ।।
कृष्णार्दवासना कृष्णरागिणी भवभाविनी ।
कृष्णार्यरहिता भक्ता भक्तभक्तिशुभप्रदा ।।
श्रीकृष्णरहिता दीना तथा विरहिणी हरेः ।
मथुरा मथुराराजगेहभावनभावना ।।
श्रीकृष्णभावना मोदा तथोन्मादविधायिनी ।
कृष्णार्थव्याकुला कृष्णसारचर्मधरा शुभा ।
अलकेश्वरपूज्या च कुबेरेश्वरवल्लभा ।
धनधान्यविधात्री च जाया काया हया हयी ।।
प्रणवा प्रणवेशी च प्रणवार्थस्वरूपिणी ।
ब्रह्मविष्णुशिवार्धाङ्गहारिणी शैवशिंशपा ।।
राक्षसीनाशिनी भूतप्रेतप्राणविनाशिनी ।
सकलेप्सितदात्री च शची साध्वी अरुन्धती ।।
पतिव्रता पतिप्राणा पतिवाक्यविनोदिनी ।
अशेषासाधिनी कल्पवासिनी कल्परूपिणी ।।

देखते हैं और अपने को अत्यन्त दीन और दूसरे का ऋणी अनुभव करते है, क्योंकि विशुद्ध प्रेमका यही स्वभाव है।

रस-साहित्य में अधिकांश रचनाएं ऐसी ही उपलब्ध होती हैं, जिनमें श्रीकृष्ण प्रेमास्पद के रूप में और श्रीराधा प्रेमिका के रूप में चित्रित की गयी हैं। इन सोलह गीतों में आठ पद ऐसे हैं, जिनमें श्रीकृष्ण श्रीराधा को अपनी प्रेमास्पदा मानकर उन्हें प्रेम की स्वामिनी और अपने को प्रेम का कंगाल स्वीकार करते हैं और उनके उत्तर - रूप में आठ पद श्रीराधा के द्वारा कहे गये हैं, जिनमें श्रीराधा अपने को अत्यन्त दीना और श्रीकृष्ण को प्रेम के धनी रूप में स्वीकार करती हैं। इस प्रकार इन सोलह पदों में प्रेमिगत दैन्य और प्रेमास्पद की महत्ता का उत्तरोत्तर विकास दृष्टिगत होता है।

पाठक विशेष गहराई में जाकर इन पदों के भावों को ग्रहण करने का प्रयास करेंगे तो उन्हें पता लगेगा कि श्रीराधाकृष्ण के प्रेम का स्वरूप कितना पवित्रतम, समर्पणपूर्ण तथा दिव्य है। इसी प्रेम को आदर्श मानकर प्रेममार्ग के साधक अपना मार्ग निश्चय करें और श्रीराधा-माधव के चरणों में प्रेम प्राप्त करें, इसी हेतु इन पदों का प्रकाशन किया गया है।

श्रीराधा

'श्रीराधा-माधव-रस-सुधा' के षोडशगीतों के अध्ययन, मनन एवं नित्यपाठ के प्रति परम विशुद्ध, पूर्ण त्यागमय, समर्पणमय तथा निःस्वार्थ भगवत्प्रेम के इच्छुक भक्त, विद्वान् तथा सभी आश्रमों के नर-नारी बहुत रुचि दिखला रहे हैं। विदेश के अनेकों विद्वानों ने इन गीतों के भावों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। भावसम्पन्न हृदय से इन गीतों का प्रतिदिन नियमित पाठ करने से अनेकों प्रेमी साधकों को विशेष लाभ हुआ है। अनेक स्थानों पर भावुक भक्त इन गीतों का रात्रि में 2 बजे से 4।। तक गान करते हैं तथा स्थान-स्थान पर सहस्रों व्यक्ति अपनी सुविधा से इन गीतों का नियमित पाठ करते हैं। समय की सुविधा से पाठ करने वाले व्यक्तियों ने तीन पद्धतियाँ अपना रखी हैं-

(१) आरम्भ की वन्दना एवं उपसंहार की पुष्पिका के सहित प्रतिदिन पूरे 16 गीतों का एक या एक से अधिक पाठ।

(२) आरम्भ की वन्दना एवं उपसंहार की पुष्पिकासहित श्रीकृष्ण के प्रेमोद्-गार का एक गीत और श्रीराधा के प्रेमोद्गार का एक गीत प्रतिदिन पाठ करना। इस प्रकार 8 दिनों में सोलहों गीतों का एक पूरा पाठ।

(३) प्रतिदिन एक गीत का पाठ करना। इस प्रकार वन्दना और पुष्पिकासहित सोलह गीतों का 18 दिनों में पूरा एक पाठ।

जिनकी रुचि हो, वे इनमें किसी पद्धति के अनुसार पाठ कर सकते हैं।।

* * *

* * *

।। श्री राधा ।।

पुज्यश्री नित्यलीलालीन श्री भाईजी श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार के सदुपदेश

इन उपदेशों से विकीर्ण होने वाली किरणें मानव जीवन के मानस को दुर्लभ प्रकाश पुंज से आलोकित करती रहेगी इसका अनन्त प्रकाश साधक जीवन का सम्बल होगा :-

विश्वास करो भगवान सदा ही तुम्हारे अत्यन्त समीप हैं, तुम्हारी प्रत्येक परिस्थिति को जानते हैं, तुम्हारी हर बात सुनते हैं, बस विश्वास पूर्वक पुकारने की देर है वह तुरन्त तुम्हारी पुकार सुनेंगे कष्टो से छुड़ा देंगे ।

अपने हृदय को सदा पैनी नजर से देखते रहो याद रक्खो जहाँ मन है तुम वहीं हो। मन्दिर में रहो या वन में मन यदि कारखाने या बाजार में है तो तुम भी वहीं हो ।

श्री गंगाजी पापों को क्षय कर देती है। चन्द्रमा ताप को शमन करने में समर्थ है और कल्पवृक्ष दैन्य को नष्ट कर देता है

किन्तु सन्त महापुरुष तो पाप, ताप और दैन्य इन सभी को नष्ट करने में समर्थ होते हैं।

संसार में भली-बुरी दोनों ही चीजें हैं। जो जिसका ग्राहक है उसे वही मिलती है। तुम बुरी को छोड़कर भली के ग्राहक बनो, फिर देखो तुम्हें भली मिलेगी। हाट उसी माल की लगा करती है जिसके खरीददार होते हैं।

कम बोलो, कम सुनो, कम देखो, कम मिलो-जुलो। यह सब उतना ही करो जितना अत्यन्त जरूरी है। एक पल भी बिना जरूरत इन कामों में मत लगाओ।

घर में अतिथि की ज्यों रहो, कुछ भी अपना मत समझो। सेवा कराने का संकोच करो, डर-डर कर व्यवहार करो। सबका हित चाहो। किसी को दुःख न पहुँच जाये, इस बात का ख्याल रक्खो। ममता मत बढ़ाओ। अतिथि को घर से चले ही जाना है, इस बात को याद रक्खो ।

पूछते हो, कैसे पुकारें वैसे ही पुकारो जैसे अनन्य-आश्रित मातृपरायण बच्चा पूरे विश्वास से माँ को पुकारता है। पुकारना तो तुम जानते हो, परन्तु विश्वास नहीं करते, इसी से नहीं पुकार पाते। पूर्ण विश्वास से द्रोपदी ने पुकारा था, गजराज ने पुकारा था।

विश्वास करो-सरलता, कोमलता तथा भरोसे से हृदय को भर लो फिर पुकारो। तुम्हारी पुकार व्यर्थ नहीं जायेगी ।

जो मनुष्य लोभ के वश होकर धर्म को छोड़ देता है और धन बटोरने में लग जाता है, वह मानो सोने के ढेर को छोड़कर मुट्ठी भर राख के लिये लपकता है।

अन्त समय में धन कुछ भी काम नहीं आता। जीवन भर बटोरे हुए धन पर दूसरे मालिक बन बैठते हैं। अपने द्वारा किया हुआ धर्म ही एक ऐसा सहायक है जो मरने के बाद भी साथ जाता है।

यदि पापों का नाश चाहते हो, मन को वश में करना चाहते हो और भगवान की कृपा चाहते हो तो श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक भगवान के दिव्य मंगलमय चरित्रों का श्रवण करो ।

विश्वास करो, केवल भगवान का विश्वास करो। संसार का विश्वास करोगे तो धोखा खाओगे। भगवान-सा विश्वास पात्र जब तुम्हें सुलभ हैं, तो क्यों दर-दर मारे-मारे फिर रहे हो?

निश्चय करो- भगवान तुम्हारे भारी से भारी दोषों को भी क्षमा कर देंगे, यदि तुम उनके लिये पश्चाताप करोगे और भविष्य में वैसे दोषों को करना छोड़ दोगे।

मनुष्य जन्म बहुत ही दुर्लभ है, जन्म मृत्यु के बहुत लम्बे मार्ग को तय करने पर कहीं भगवान की कृपा से ही प्राप्त होता हैं, इसे यों नष्ट कर देना आत्महत्या से बढ़कर पाप है।

याद रक्खो भोगों में सुख या आराम नहीं है। सुख केवल भगवान में ही है और भगवान तुम्हारे (हमारे) अपने हैं। भगवान पर विश्वास रक्खो वे सदा तुम्हारे (हमारे) साथ हैं, वे स्वयं तुम्हारी (हमारी) सहायता करते हैं। इस दृढ़ विश्वास से निश्चय ही उनके कोमल कर का स्पर्श पाकर कृतार्थ हो (जाओगे) जायेंगे।

एक मात्र भगवत्कृपा की ही बाट देखते हुए भगवान का भजन करो मन के दोष चंचलता, विषयों में आसक्ति आदि न मिटे तो निराश मत होओ, भजन के बल से सब दोष अपने आप दूर हो जायेंगे।

दूसरे के दोषों का न प्रचार करो, न चर्चा करो और न उन्हें याद करो। तुम्हारा इसी में परम लाभ है। भगवान सर्वान्तर्यामी हैं वे किसने किस परिस्थिति में किस नियत से कब क्या किया है, सब जानते हैं और वे ही उसके फल का विधान करते हैं।

याद रक्खो-मनुष्य जीवन की सच्ची सफलता भगवान के प्रेम को प्राप्त करने में ही है । भगवत्प्रेम की प्राप्ति किसी भी साधन से नहीं होती। यह तभी मिलता है जब भगवान स्वयं कृपा

करके देते हैं।

उपदेश करो अपने लिये, तभी तुम्हारा उपदेश सार्थक होगा। जो कुछ दूसरों से करवाना चाहते हो, उसे पहले स्वयं करो। नहीं तो तुम्हारा उपदेश नाटक के अभिनय के सिवा और कुछ भी नहीं है।

किसी से डरो मत! डरो बुरे आचरण से, अपने हृदय की गन्दगी से और भगवान के प्रति होने वाले अविश्वास से। जिनके मन से भगवान का विश्वास उठ गया, यह निश्चय समझो कि उसकी आध्यात्मिक मृत्यु ही हो गयी।

सेवा करके भूल जाओ, कराके याद रक्खो, दुःख पाकर भूल जाओ, देकर याद रक्खो, भला करके भूल जाओ, कराके याद रक्खो, बुरा कराके भूल जाओ, करके याद रक्खो।

विश्वास करो तुम पर भगवान की बड़ी कृपा है, तभी तो यह मनुष्य देह और विशेष कृपा से भजन करने की बुद्धि और सुअवसर मिला है।

'यदि तुम ईश्वर के प्रीतिपात्र होना चाहते हो तो ईश्वर जिस स्थिति में रखना चाहे उसी में सन्तुष्ट होना सीखो।'

सदा याद रखो-जिस पर ईश्वर की कृपा होती है, सांसारिक सुखों का उसी को अभाव होता है। जो विपत्ति में भगवत्कृपा का दर्शन करते हैं वे ही भगवत्कृपा के यथार्थ अधिकारी हैं।

भगवत्प्रेम अत्यन्त दुर्लभ होने पर भी सहज ही प्राप्त हो सकता है, यदि कोई अनन्य उत्कंठा के साथ इसके लिये भगवान पर निर्भर हो जाय।

जीवन बहुत थोड़ा है। सबसे प्रेमपूर्वक हिल-मिलकर चलो, सबसे अच्छा बर्ताव करो, अमृत का विस्तार कर जाओ, विष की बूंद कहीं भी न डालो। तुम्हारा प्रेमपूर्ण व्यवहार अमृत है और द्वेषपूर्ण व्यवहार ही विष है।

याद रक्खो जिस कार्य के परिणाम में अपना और दूसरों

का हित हो, वही धर्म है और जिसके परिणाम में अपना और दूसरों का अहित हो, वही पाप है।

प. पू. श्री भाईजी की अतुल सम्पत्ति :-

१) सबमें भगवान को देखना ।

२) भगवत्कृपा पर अटूट विश्वास ।

३) श्रीभगवान का अनन्य आश्रय ।

शरमाइये मत । दोनों हाथ ऊपर उठाकर बोलिये

जय जय श्री राधे, जय जय श्री राधे, जय जय श्री राधे,

* ॐ नमःश्रीराधिकायै *

ऋग्वेदीय श्रीराधिकोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीमद एधि। वेदस्य म आणीस्थ: श्रुतं मे मा प्रहासी: अनेनाधितेनाहोरात्रान् संदधाम्यृतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु मामवतु वक्तारमवतु। वक्तारम्॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

ओमथोर्ध्वमन्थिन ऋषय: सनकाद्या भगवन्तं हिरण्यगर्भमुपासित्वोचु: देव क: परमो देव: का वा तच्छक्तय:, तासु च का वरीयसी भवतीति सृष्टिहेतुभूता च केति॥ सहोवाच। हे पुत्रका: शृणुतेदं ह्वाव गुह्याद् गुह्य तरमप्रकाश्यं, यस्मै कस्मै न देयम्। स्निग्धाय, ब्रह्मवादिने, गुरुभक्ताय, देवमन्यथा दातुर्महदघम्भवतीति। कृष्णो ह वै हरि: परमो देव: षड्विधैश्वर्य परिपूर्णो भगवान गोपीगोपसेव्यो वृन्दाऽराधितो वृन्दावनाधिनाथ:, स एक एवेश्वर:। तस्य ह्वै द्वैततनु

नारायणोऽखिलब्रह्माण्डाधिपतिरेकोंऽशः प्रकृतेः प्राचीनो नित्यः। एवं हि तस्य शक्तयस्त्वनेकधा। आह्लादिनी-सन्धिनी-ज्ञानेच्छा -क्रियाद्या, बहुविधाः शक्तयः। तास्वाह्लादिनी वरीयसी परमान्तरङ्गभूता राधा, कृष्णेन आराध्यत इति राधा, कृष्णं समाराधयति सदेति राधिका गान्धर्वेति व्यपदिश्यत इति। अस्या एव कायव्यूहरूपा गोप्यो महिष्यःश्रीश्चेति। येयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धिर्देहेनैकः क्रीडनार्थं द्विधाऽभूत्।

एषा वै हरेःसर्वेश्वरी सर्वविद्या सनातनी कृष्णप्राणाधिदेवी चेति, विविक्ते वेदाः स्तुवन्ति, यस्या गतिं ब्रह्मभागा वदन्ति। महिमाऽस्याः स्यायुर्मानेनापिकालेन वक्तुं न चोत्सहे। सैव यस्य प्रसीदति, तस्य करतलावकलितम्परमधामेति। एतामवज्ञाय यः कृष्ण माराधयितुमिच्छति, स मूढतमोमूढतमश्चेति। अथ हैतानि नामानि गायन्ति श्रुतयः।

राधा रासेश्वरी रम्या कृष्णमन्त्राधिदेवता। सर्वाद्या सर्ववन्द्या च वृन्दावनविहारिणी। वृन्दाराध्या रमाऽशेषगोपीमण्डलपूजिता। सत्या सत्यपरा सत्यभामा श्रीकृष्णवल्लभा॥ वृषभानुसुता गोपी मूलप्रकृतिरीश्वरी। गान्धर्वा राधिका रम्या रुक्मिणी परमेश्वरी॥ परात्परतरा पूर्णा पूर्णचन्द्रनिभानना। भुक्तिमुक्तिप्रदा नित्यं भवव्याधिविनाशिनी॥

इत्येतानि नामानि यः पठेत् स जीवन्मुक्तो भवति इत्याह हिरण्यगर्भो भगवानिति। सन्धिनी तु धामभूषणशय्यासनादिमित्रभृत्यादिरूपेण परिणता मृत्युलोकावतरणकाले मातृ-पितृ रूपेण चाऽसीदित्यनेकावतारकारणा ज्ञानशक्ति स्तु क्षेत्रज्ञशक्तिरिति, इच्छान्तर्भूता माया सत्वरजस्तमोमयीबहिरंगा जगत्कारणभूता सैवाऽविद्यारूपेण जीवबन्धनभूता क्रिया शक्तिस्तु लीलाशक्तिरिति। य इमामुपनिषदमधीते, सोऽव्रती व्रतीभवति, स वायुपूतो भवति, स सर्वपूतो भवति, राधाकृष्णप्रियो भवति, स यावच्चक्षुः पातं पंक्तीः पुनाति। ॐ तत्सत्।

"इति श्री श्रीमदृग्वेदे ब्रह्मभागे परमरहस्ये श्रीराधिकोपनिषद् सम्पूर्णा"

भावार्थ : ऊर्ध्वरेता सनकादि महर्षियों ने भगवान श्रीब्रह्माजी की स्तुति करके यों पूछा हे देव! सर्व प्रधान देवता कौन हैं और उनकी कौन कौन सी शक्तियाँ हैं, उन शक्तियों में सृष्टि का सर्व श्रेष्ठ कारण कौन सी शक्ति है? इनके वचन सुनकर श्री ब्रह्माजी बोले हे बेटा! सुनो, किन्तु इस अति गोप्य वार्ता को

प्रकट मत करना और ऐरे-गैरे को इसे मत बताना। हाँ, जो स्नेही हों, ब्रह्मवादी हों, गुरुभक्त हों, उन्हें अवश्य देना, नहीं तो देने वाले को महान पाप लगेगा। श्री हरि श्रीकृष्ण ही परम देव हैं, ये छहो ऐश्वर्यों से परिपूर्ण श्रीभगवान हैं, यह गोपियों और गोपों के सेव्य हैं, ये वृन्दा के द्वारा आधारित हैं, ये श्रीवृन्दावन के अधीश्वर हैं और ये ही एकमात्र सर्वेश्वर हैं। उन्हीं श्रीहरि के नारायण भी एक रुप हैं, जो अखिल ब्रह्माण्डों के अधीश्वर हैं। ये ही एक श्रीकृष्ण स्वभावत: प्रकृति से परे और नित्य हैं। इस प्रकार इनकी शक्तियाँ भी अनेक हैं। आह्लादिनी, सन्धिनी, ज्ञानेच्छा, क्रिया आदि बहुत सी इनकी शक्तियाँ हैं। उन आह्लादिनी सर्व प्रधान शक्ति हैं, ये परम अन्तरङ्ग भूता हैं, 'ये राधा' हैं, जिनका आराधन श्रीकृष्ण भी करते हैं।

श्रीराधा भी श्रीकृष्ण का सदा आराधना किया करती हैं। ये इसीलिए यह राधिका कहलाती है। श्रीराधिका को गान्धर्वा भी कहते हैं। इन्हीं श्रीराधिका के शरीर से गोपियाँ, श्रीकृष्णकी महिषियाँ और लक्ष्मीजी उत्पन्न हुई हैं। ये जो श्रीकृष्ण हैं, वे रस सागर श्रीकृष्ण ही एक रुप से दो रुप हो गये हैं। यह श्रीकृष्ण का युगल स्वरुप भक्तोद्धारिणी क्रीड़ाके निमित्त ही हुआ है। यह श्रीराधा सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के सदृश सर्वेश्वरी हैं। ये श्रीकृष्ण की समस्त विद्याओं में सनातनी हैं। ये श्रीकृष्ण की प्राणाधिका प्रेयसी हैं- ऐसा एकान्त में चारों वेद भी स्तुति किया करते हैं; और जिनकी गति ब्रह्मवादी ऋषि जानते और कहते हैं। इनकी महिमा को हम (ब्रह्मा) अपने आयु पर्यन्त भी वर्णन करने में सर्वथा असमर्थ हैं। वे ही श्रीराधा जिस पर प्रसन्न होती हैं, उसके हाथ में परम धाम आ जाता है। इन (राधा) की अवज्ञा करके जो मात्र श्रीकृष्ण का आराधन करने की इच्छा करता है, वह मूढ़तम है। इन (श्रीराधा) के ये नाम हैं :-

१. श्रीराधा, २. रासेश्वरी ३. रम्या, ४. कृष्णमन्त्राधिदेवता, ५. सर्वाद्या, ६. सर्ववन्द्या ७. वृन्दावनविहारिणी ८. वृन्दाराध्या, ९ रमा, १० 'अशेषगोपीमण्डलपूजिता, ११. सत्या १२. सत्यपरा, १३. सत्यभामा, १४. श्रीकृष्णवल्लभा, १५. वृषभानुसुता, १६. गोपी, १७. मूलप्रकृति, १८ ईश्वरी, १९. गान्धर्वा, २० राधिका, २१ आरम्या, २२. रुक्मिणी, २३. परमेश्वरी, २४. परातपरतरा, २५. पूर्णा, २६. पूर्णचन्द्रनिभानना, २७. भुक्तिमुक्तिप्रदा, २८ भवव्याधिविनाशिनी।

इन (सप्तविंशति) २८ नामों को जो पढ़ते हैं, वे जीवनमुक्त हो जाते हैं, ऐसा भगवान् श्रीब्रह्माजी ने कहा है। इस प्रकार श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति श्रीराधा का वर्णन किया, अब श्रीकृष्ण की सन्धिनी शक्ति का वृतान्त सुनो। यह (सन्धिनी) शक्ति, धाम, भूषण, शय्या, आसन आदि तथा मित्र भृत्यादि रुप से परिणाम को प्राप्त होती है और मृत्युलोक में अवतार लेने के समय माता और पिता रुप से परिणाम को प्राप्त होती है। यही अनेक अवतार का कारण है। ज्ञान शक्ति को ही क्षेत्रज्ञ शक्ति कहते हैं और इच्छा शक्ति के अन्तर्भूत मायाशक्ति है। यह सत्वरजतमो गुण रुपा है और वहिरङ्ग हैं, जड़ है। जड़ होने के कारण श्रीभगवान् की दृष्टि पड़ने से अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों को उत्पन्न करती है और यही माया अविद्या रुप से जीव का बन्धन करती है। क्रियाशक्ति ही लीलाशक्ति है। जो इस उपनिषद् को पढ़ते है, वे अव्रती भी व्रती हो जाते हैं, वे समस्त तीर्थों में स्नात हो जाते हैं, वे अग्निपूत हो जाते हैं, वे वायुपूत हो जाते हैं, वे सर्वपूत हो जाते हैं, वे श्रीराधाकृष्ण के प्यारे हो जाते हैं और वे जहाँ तक दृष्टिपात करते हैं, वहाँ तक सबको पवित्र कर देते हैं। ॐ तत्सत्।

अथर्ववेदीय श्रीराधिकातापनीयोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंङ्गैस्तुष्टुवाम सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

ब्रह्मवादिनो वदन्ति, कस्माद्राधिकामुपासते आदित्योऽभ्यद्रवत् ॥१॥ श्रुतय ऊचुः सर्वाणि राधिकाया दैवतानि सर्वाणि भूतानि राधिकयास्तां

नमामः।।२।। देवतायतनानि कम्पन्ते राधाया हसन्ति नृत्यन्ति च सर्वाणिराधादैवतानि। सर्वपापक्षयायेति व्याहृतिभिर्हुत्वाऽथ राधिकायै नमामः।।३।। भासा यस्याः कृष्णदेहोऽपि गौरो जायते देवस्येन्द्रनील प्रभस्य। भृङ्गः काकः कोकिलाश्चपि गौरास्तां राधिकां विश्वधात्रीं नमामः ।।४।। यस्या अगम्यता श्रुतयः सांख्ययोगा वेदान्तानि ब्रह्मभावं वदन्ति। न यां पुराणानि विदन्ति सम्यक् तां राधिकां देवधात्रीं नमामः।।५।। जगद्भर्तु विश्व संमोहनस्य श्रीकृष्णस्य प्राणतोऽधिकामपि। वृन्दारण्ये स्वेष्टदेवीं च नित्यं तां राधिकां वनधात्रीं नमामः।।६।। यस्या रेणुं पादयोर्विश्वभर्ता धारयते मुर्ध्नि रहसि प्रेमयुक्तः। रास्तवेणुः कबरीं न स्मरेद्यत्स्तीनः कृष्णः क्रीतवत्तुतां नमाम ।।७।। यस्या क्रीडां चन्द्रमा देवपत्न्यो दृष्ट्वा नग्ना आत्मनो न स्मरन्ति। वृन्दारण्ये स्थावराः जंगमाश्च भावाविष्टां राधिका तां नमामः ।।८।। यस्या अङ्के विलुण्ठन् कृष्णदेवो गोलोकाख्यं नैव ससमार धामपदं सांशा कमला शैलपुत्री तां राधिकां शक्तिधात्रीं नमामः ।।९।। स्वरै ग्रामैश्च त्रिभिर्मूर्च्छनाभिर्गीतां देवीं सखिभिः प्रेमबद्धा। ब्राह्मीं निशां याऽतनोदेकशक्त्या वृन्दारण्ये राधिकां तां नमामः।।१०।। क्वचिद्भूत्वा द्विभुजा कृष्णदेहा वंशीरन्ध्रैर्वादयानासचक्रे। यस्याभूषां कुन्दमन्दारपुष्पैर्मालांकृत्वाऽनुनयेदेवदेवः ।।११।। येयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धिर्देहश्चैकः क्रीडनार्थं द्विधाऽभूत्। देहो यथा छायया शोभमानः शृण्वन पठन् याति तद्धाम शुद्धम ।।१२।। वशिष्ठे च बृहस्पतिं यार्वागध्यापयति यजमानस्यवार्हस्पत्यद्ध।।१३।।

।। इति श्रीमदथर्ववेदीय श्रीराधिकातापिनी उपनिषद् ।।

अथर्ववेदीय श्रीराधिकातापनीयोपनिषद्

भावार्थ- ब्रह्मादी ऋषियों के चित्त में यह तर्क उत्पन्न हुआ कि अन्य उपासनाओं को छोड श्रीराधिका की ही उपासना क्यों की जाती है? उसी क्षण एक तेज का पुञ्ज प्रकट हुआ। वह तेज श्रुतियों का समुदाय ही था ।।१।। श्रुतियों ने कहा-

सम्पूर्ण उपास्य देवताओं में देवत्व शक्ति श्रीराधिकाजी से ही आविर्भूत होती है, अतएव समस्त अधिभूत और अधिदेवों की जननी श्रीराधाजी को हम सब नमन करती हैं ॥२॥

श्रीराधिकाजी की कृपा के लेश-मात्र से देवता आनन्दित हो-होकर हँसते और नृत्य करते हैं और उनकी भ्रकुटी के नेक वक्र होने मात्र से थर-थर काँपते रहते हैं। अत: हमें किसी प्रकार के दूषण न दबा लेवें, इसीलिये व्याहृतियों से स्तवन करती हुई हम श्रीराधाजी को नमन करती हैं ॥३॥

इन्द्रनील मणियों के समान भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का श्याम विग्रह भी जिसकी कान्ति से गौर प्रतीत होता है। काकादि जैसे क्रूर कर्मा प्राणी भी जिसकी दृष्टि से पुनीत बन जाते हैं, उन विश्व माता श्रीराधिकाजी को हम सब नमन करती हैं ॥४॥

जिसका हम श्रुतियाँ और सांख्य, योग, वेदान्त भी पार नहीं पा सकते एवं पुराण भी जिसका वर्णन नहीं कर सकते, उन ब्रह्मस्वरूपिणी श्रीराधिकाजी को हम प्रणाम करती हैं ॥५॥

जगन्नियन्ता विश्वविमोहन श्रीनन्दनन्दन की प्राणप्रिया, अपनी वरेण्योपास्या, शरणागतों को अभय देने वाली श्रीराधिकाजी को हम सब प्रणाम करती हैं ॥ ६॥

प्रेम परायण विश्वम्भर श्रीनन्दनन्दन रास केलि में जिनकी चरण रज को भी मस्तक पर धर लेते हैं और जिनके प्रेम में अपनी मुरली-लकुट आदि विभूतियों को भी भुला देते हैं एवं स्वयं बिके हुये से प्रतीत होते हैं, उन श्रीराधिकाजी को हम नमन करती हैं ॥७॥

वृन्दावन में जिसकी अद्भुत लीला देखकर चन्द्रमा और देवाङ्गनायें निमग्न होकर अपने शरीर की सुधि-बुधि भूल जाती हैं और प्रेमोन्मत्त चर भी अचर की भाँति स्तब्ध बन बैठते हैं, उन श्रीराधिकाजी को हम सब प्रणाम करती हैं ॥८॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जिनकी अङ्कस्थली शय्या के आगे सच्चिदानन्द स्वरूप अपने गोलोक का भी स्मरण नहीं करते, लक्ष्मी और पार्वती आदि सभी शक्तियाँ जिनकी अंशस्वरूपा हैं, उन शक्तिसिन्धु श्रीराधिकाजी को हम सब प्रणाम करती हैं ॥९॥

सखियों स्वर, ग्राम और मूर्च्छनाओं के द्वारा जिनके गुणों का गान करती हैं और उनके प्रेम को वशीभूत हो जिन्होंने अपनी एक शक्ति से वृन्दावन में ब्राह्मी रात्रि रच दी, अर्थात् रास-विलास की आनन्द सुधा का अविच्छिन्न रूप से पान कराया, उन श्रीराधिकाजी को हम प्रणाम करती हैं ॥१०॥

कभी द्विभुज श्रीकृष्ण का रूप धारण करके सुन्दर स्वरों पर मृदुल अँगुलि रखकर मुरली बजाती हैं और श्रीनन्द-नन्दन कुन्द कल्पवृक्ष आदि के पुष्पों से जिनका श्रृंङ्गार करते हैं, उन श्रीराधिकाजी को हम नमस्कार करती हैं ॥११॥

श्रीराधा और श्रीकृष्ण दोनों एक ही रस के समुद्र हैं, केवल भक्तों को आनन्द देने वाली लीलाओं के लिये ही दो रूप बने हैं। वस्तुतस्तु ये दो रूप भी देह और छाया के सदृश ही हैं। कभी किसी दशा में भी इनका वियोग नहीं होता। इनके चरितामृत को कर्णों द्वारा पीकर भक्तजन विशुद्धपद की प्राप्ति कर लेते हैं, अर्थात् सदा के लिये अमर बन जाते हैं ॥१२॥

अब इस विद्या की गुरु परम्परा बताते हैं यह तत्व ज्ञान आदित्य से वशिष्ठ को, उनसे बृहस्पति को, उनसे उनके शिष्य कच एवं इन्द्रादि को प्राप्त हुआ ॥ इति ॥

* * *

श्रीराधारसमञ्जरी

कुच-कलश-भरार्तां केसरिक्षीणमध्या
विपुलतरनितम्बा पक्वबिम्बाधरोष्ठी।
प्रणयमदिवशया-स्कन्ध-विन्यस्तहस्ता
निधुवनरसपुन्जं याति राधा निकुञ्जम् ॥१॥

रमणिरमणखेलारम्भसम्भावनीया
रतिरभसगभीरऽभीरनारीषु धीरा।
निकटविनयबद्धोद्भूतकान्ताप्रसादा
नरपतिवरपुत्री याति राधा निकुञ्जम् ॥२॥

श्यामप्रेमविनोदिनी मधुरिमाधाराधरे स्मेरिणी
गौरी प्रेमवती शुभा च सुभगा प्रेमाब्धिसंवर्धिनी।
गण्डे मण्डितकुण्डला कटितटे धत्ते मुदा किंकिणीं
लीलाकाञ्चनदेहिनी विजयते वृन्दावन-स्थायिनी ।।३।।

शुद्धस्वर्णविडम्बिनी परिलसल्लावण्यसम्मोहिनी
नानारत्नविलासिनी मधुरिमाधाराधरे वंशिनी।
कृष्णप्रेमतरंगिणी निरवधि प्रेमामृतालापिनी
श्यामप्रेमविनोदिनी विजयते राधा सुधादेहिनी ।।४।।

राधेयं नवयौवनाद् युवयसोल्लासेन सानन्दिता
सुस्मेराधरबिम्बचन्द्रवदना हेमाद्रिकान्त्युज्ज्वला।
नित्यं कल्पतरोस्तले निवसिता वेशेन भूषामयी
नानाशक्तिसमन्विता वितनुते प्रेमप्रवृत्तिं सदा ।।५।।

नानागीतविलासनृत्यर भसैरापूरितं दिङ्मुखं
गौरी चन्द्रमुखी सरोजनयनी कंदर्पसम्मोहिनी।
रम्भाचारुनितम्बिनी रसवती प्रेमामृतोद्गारिणी
राधा काञ्चनदेहिनी विजयते वृन्दावन-स्थायिनी ।।६।।

वक्त्रे चन्द्रविलासिनी नयनयोः प्रेम्णा कृपापांगिणी
बिम्बोष्टाधरदन्तदृक्तिविलसन्मुक्तावलीचन्द्रिका।
दोर्दण्डाङ्घ्रिसमुल्लसत्पुलकिनी सन्यासविन्यासिनी
राधा काञ्चनदेहिनी विजयते कारुण्यकल्लोलिनी ।।७।।

या श्रीः सत्यवती स्वयं भगवती प्रेमानुसंवादिनी
या नित्या मधुभाषिणी सुखमयी संतोषरत्नाकरी।
या राधा सुधियां सुधारसमयी कृष्णप्रिया दुर्लभा
सा जीयात् क्षितिमण्डले प्रियतमा वृन्दावनावासिनी ।।८।।

प्रेमोद्गारिदृगन्तवीक्षणलतामाजीरयन्तीं परां
नानाभावविकासिनीं सुमधुरां स्मेरातिकान्त्याननाम्
प्रोद्यत प्रोद्युतिशातकुम्भलतिकादेहां मनोहारिणीं
श्रीमन्नागररासरत्नजलधिं श्रीराधिकामाश्रये ।।९।।

सेयं विभाति परिनिन्दितहेमकान्ती

राधा विनिन्दितसुधाम्बुदैर्वचोभिः।
प्रेमणा वशेन गुरुणा नवरत्नवेश
यत्किंकिणी कटितटे परिसीति चित्रमे ॥१०॥
नवीना श्रीराधा नवरुचिरपूर्णेन्दुवदना
नवीन प्रेमाभिर्नवनवरसैर्भिः परिवृता।
नवं वृन्दारण्यं नवकिसलयालम्बिततरुं
नवीनं रासार्थं व्रजति नवरंगे त्रिभुवनम् ॥११॥
गौरी पद्ममुखी कुरङ्गनयनी क्षीणोदरी वत्सला
संगीतागमवेदनी सुखमयी तुङ्गस्तनी कामिनी।
श्यामप्रेमविनोदिनी मधुरिमाधाराधरे स्मेरिणी
त्रैलोक्यैकनितम्बिनी विजयते राधा सुधादेहिनी ॥१२॥
रासोल्लासविलासिनी नवलसत् सम्पूर्णचन्द्रानना
शुद्धस्वर्णविडम्बिकान्ति विलसत् वक्त्रेण व्याकुण्डला।
लावण्यामृतमञ्जरी रसकला-लोलाब्धिहिल्लोलिनी
राधा प्रेमविनोदिनी विजयते नित्यस्थलस्थायिनी ॥१३॥
उत्तुङ्गस्तनभारभग्नतनु विद्युच्छटाकच्छविः
श्रोण्यां नीलदुकूलिनी मृदुपदाम्भोजे स्फुरन्नूपुरा।
सुस्मेराधरचन्द्रकान्तिवदना कन्दर्पदर्पांकुरा
प्रेमान्धा मदमन्थरा विजयते कृष्णप्रिया राधिका ॥१४॥
उन्मीलन्नवयौवना मृदुतरोत्फुल्लाब्जसालंकृता
सुश्रोणीभरमङ्गुरा स्मर-भर-स्मेराधरा मेदुरा।
लीलाकन्दुकबासिनी प्रियसखी स्कन्धस्फुरत्पालिका
श्यामा श्यामसुहृत्तमा विजयते प्राणाधिका राधिका ॥१५॥
वृन्दावनान्तरचरी सुरपुष्पगुच्छं
रम्बिन्दती मदनमोदितदीर्घनेत्रा।
कर्णे रसालमुकुलस्तबकं वहन्ती
श्यामाङ्गसंगरसवती जयतीह राधा ॥१६॥
सैवेयं परिभाति यज्जलरुचिं जित्वा जगन्मोहिनी

अत्यन्ताद्भुतसुन्दरी जितसुधावाक्यामृता राधिका।
ईषद्धास्यमुखी कुरंगनयनी गौरी सुधासारिणी
प्रेमानन्दविलासिनी वितनुते प्रेमप्रवृत्ति मुहुः ॥१७॥
श्रीराधा रतिभावमुग्धहृदया लोलायमानेक्षणा
पाणौ पुष्पधनुः स्रजं च दधती वृन्दावने क्रीडति।
आश्चर्यैरभिचुम्बनै रतिकलालापैश्च सन्तर्पिता
गोविन्देन समं सखीगणवृता रासोत्सवं कुर्वती ॥१८॥
श्यामालिङ्गितगौरदेहलतया मेघस्थविद्युच्छविं
निन्दन्ती विकचाम्बुजद्वयरुचिं पद्भ्यां तिरस्कुर्वती।
सर्दासां रतिकेलिवृन्दचतुरस्त्रीणां शिरोभूषणं
श्रीमन्नागररासरत्नजलधिं श्रीराधिकामाश्रये ॥१९॥
रासोल्लासविलास-वल्गु-रसिका सौन्दर्यसीमाश्रया
राधा प्रेममयी रतिं च कुरुते वृन्दावने सुन्दरी।
श्रीकृष्णेन समं प्रफुल्लकुसुमैर्मत्तद्विरेफैर्युता
श्रीवृन्दावनदेवता विजयते राधा सुधामञ्जरी ॥२०॥
प्रेमानन्द-विलास-हास-रसिका श्यामा सरोजेक्षणा
गोपीमण्डलमण्डिता वरतनुः सिन्दूरसीमन्तिनी।
श्रीवृन्दावनरासकौतुककरा पीनरतनोल्लासिनी
श्रीकृष्णस्य दिनोदिनी विजयते श्रीराधिका भाविनी ॥२१॥
उत्तप्तहेमरुचिरा वृषभानुकन्या
आकर्णनेत्रयुगला घृतपद्महस्ता।
स्वर्णादिभूषणयुता नवलोमराजी
संख्यासहस्रसखिभिर्जयतीह राधा ॥२२॥
तप्तकाञ्चनगौरांगी राधां वृन्दावनेश्वरीम्।
वृषभानुसुतां देवीं प्रणमामि हरिप्रियाम् ॥२३॥
राधायाः कलधौतगौरकिरणैर्वृन्दावनान्तर्गताः
कूजन्मत्तमयूरकोकिलगणा भृङ्गाःकुरङ्गाःशुकाः।
कृष्णस्याद्भुतहास-रास-रसिका प्रोल्लासमुग्धाशया